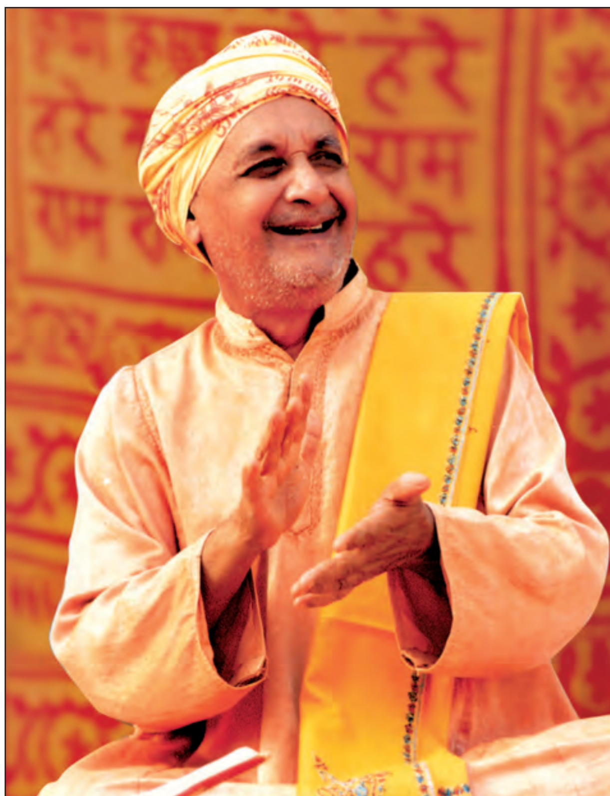
स्वर्ण जयन्ती प्रकाशन 2013

सिद्ध-प्रार्थना

स्वामी सत्यानन्द सरस्वती के प्रिय भजनों का संकलन



योग पब्लिकेशन्स ट्रस्ट, मुंगेर (बिहार)

सिद्ध-प्रार्थना



WORLD YOGA CONVENTION 2013
GANGA DARSHAN, MUNGER, BIHAR, INDIA
23rd–27th October 2013

सिद्ध-प्रार्थना

स्वामी सत्यानन्द सरस्वती के प्रिय भजनों का संकलन

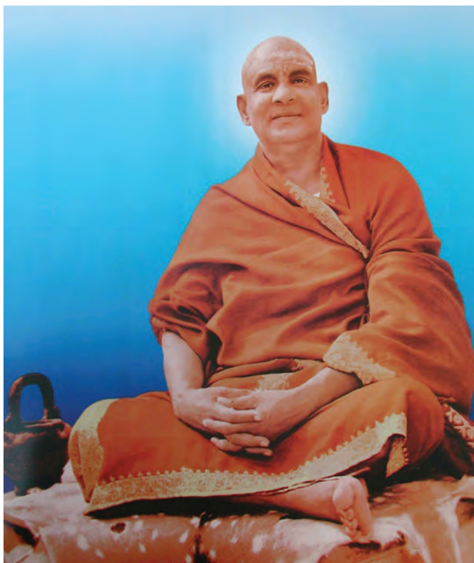


योग पब्लिकेशन्स ट्रस्ट, मुंगेर (बिहार)

बिहार योग विद्यालय द्वारा *प्रथम प्रकाशन 1977*
द्वितीय संस्करण 1978
तृतीय संस्करण 1987
चतुर्थ संस्करण 1996
पंचम संस्करण 1999
पुनर्मुद्रण 2001
योग पब्लिकेशन्स ट्रस्ट द्वारा *पुनर्मुद्रण 2002, 2005, 2006*
षष्ठम् संस्करण 2007
पुनर्मुद्रण 2007, 2008, 2009
सप्तम् संस्करण 2011
अष्टम् संस्करण 2013

ISBN: 978-81-85787-67-1

संकलन—स्वामी सत्यानन्द सरस्वती
प्रकाशक एवं वितरक—योग पब्लिकेशन्स ट्रस्ट
गंगादर्शन, मुंगेर, बिहार, भारत
मुद्रक—थॉमसन प्रेस इण्डिया लिमिटेड
नई दिल्ली



सविनय समर्पण

स्वामी शिवानन्द सरस्वती के चरणों में
जिन्होंने स्वामी सत्यानन्द सरस्वती को योग के रहस्यों की शिक्षा दी



नमो नारायण

योगविद्या भारतवर्ष की सबसे प्राचीन संस्कृति और जीवन-पद्धति है तथा इसी विद्या के बल पर भारतवासी प्राचीनकाल में सुखी, समृद्ध और स्वस्थ जीवन बिताते थे। जब से भारत में योग विद्या का ह्रास हुआ, तभी से भारतवासी गरीब, दु:खी और अस्वस्थ हैं। पूजा-पाठ, धर्म-कर्म से शान्ति मिलती है और योगाभ्यास से धन-धान्य, समृद्धि और स्वास्थ्य। भारत में सुख, समृद्धि, शक्ति और स्वास्थ्य के लिए हर व्यक्ति को योगाभ्यास करना चाहिए।

स्वामी सत्यानन्द सरस्वती
रिखियापीठ, 2005

अनुक्रमणिका

संकीर्तन और प्रार्थना

स्वामी शिवानन्द सरस्वती

भगवान के नाम में एक रहस्यमयी शक्ति है। मनुष्य केवल रोटी पर नहीं जी सकता, किन्तु वह प्रभु नाम के सहारे जी सकता है। शेक्सपीयर ने कहा है, 'जिसके अन्दर संगीत नहीं है और जो मधुर ध्वनियों को सुनकर भाव-विभोर नहीं होता, वह विश्वासघाती, कपटी और दुष्ट है। उसकी आत्मा की गति रात्रि के समान निष्प्रभ होती है और उसका स्नेह इरेबस के समान अन्धकारमय होता है। ऐसे व्यक्ति पर विश्वास नहीं करना चाहिए। अत: संगीत में रुचि लीजिए।'

अनवरत संकीर्तन से मन शुद्ध होता है। वह शुभ और पवित्र विचारों से भर जाता है। प्रतिदिन संकीर्तन करने से अच्छे संस्कार सशक्त होते हैं। जो मनुष्य स्वयं को अच्छी सोच और पवित्र विचारों का प्रशिक्षण देता है, उसके अन्दर शुभ विचार करने की प्रवृत्ति विकसित हो जाती है। अच्छे विचारों की निरन्तरता से उसका चरित्र रूपान्तरित हो जाता है। दिव्य विचारों में विचरण करने वाला व्यक्ति निरन्तर चिन्तन और ध्यान द्वारा स्वयं दिव्य बन जाता है। उसकी मनोवृत्ति और भाव शुद्ध और दिव्य हो जाते हैं। ध्याता और ध्येय, उपासक और उपास्य, विचारक और विचार एक हो जाते हैं। यही समाधि है। यह संकीर्तन या उपासना का फल है।

संकीर्तन से देहाध्यास समाप्त हो जाता है। गहन अन्तर्दृष्टि प्राप्त होती है। इस कलियुग में संकीर्तन द्वारा ईश्वर के दर्शन या दिव्य चेतना की प्राप्ति होती है। संकीर्तन से प्रेम का विकास होता है। संकीर्तन दिव्य चेतना की प्राप्ति का सबसे सुगम, सुनिश्चित, सुरक्षित और शीघ्रतम मार्ग है।

जब भगवान का नाम बार-बार गाया जाता है, तब धीरे-धीरे देवताओं के स्वरूप या उपासक के इष्ट की आकृति निर्मित होने लगती है। इसका अति सौम्य प्रभाव कीर्तन करने वाले के व्यक्तित्व के केन्द्रों पर होता है, जहाँ से पूजा के भाव निःसृत हो रहे हैं।

ईश्वर के नाम-संकीर्तन से उत्पन्न श्रुतिमधुर स्पन्दन अपने मन को आसानी से नियंत्रित करने में भक्त की सहायता करते हैं। वे उसके मन पर एक सौम्य प्रभाव डालते हैं। ये स्पन्दन शीघ्र ही उसके मन को उसकी पुरानी लीक से ऊपर उठाकर, दिव्य भव्यता और महिमा की महान् ऊँचाइयों तक ले जाते हैं। भगवान का नाम भी भगवान के समान ही है। भगवान चैतन्य हैं और उनका नाम भी।

अखण्ड कीर्तन बड़ी प्रभावशाली आध्यात्मिक साधना है। कीर्तन के समय सभी बुरी वृत्तियाँ नष्ट हो जाती हैं। अखण्ड कीर्तन से विषयों की ओर भागते मन को आसानी से रोका जा सकता है। अखण्ड कीर्तन के अभ्यास से मन को विषयों की ओर भागने का न तो अवसर मिलेगा और न ही समय। अखण्ड कीर्तन मन को सरलता से वश में करने का एक शक्तिशाली साधन है। मन सत्त्व से भर जाता है। अखण्ड कीर्तन से परम शान्ति और आनन्द की प्राप्ति होती है। यह शीघ्र ही हृदय को

पावन कर देता है। इससे मन में शुद्धता आती और अगणित लाभ मिलते हैं।

जब आप कीर्तन कर रहे होते हैं, तब भगवान श्रीकृष्ण, हरि या श्रीराम की मूर्ति को अपने हृदय में स्थापित कीजिए तथा मन को उस मूर्ति पर एकाग्र कीजिए। कीर्तन करते समय आँखों को बन्द रखिये। भगवान हरि उस साधक से अति प्रसन्न होते हैं, जो प्रेम से उनके नाम गाता है।

द्वापर युग के अन्त में देवर्षि नारद ब्रह्माजी के पास गये और कलियुग में संसार सागर पार करने का सरलतम उपाय जानना चाहा। ब्रह्मा जी ने कहा कि सोलह नामों वाले महामंत्र—'हरे राम हरे राम, राम राम हरे हरे; हरे कृष्ण हरे कृष्ण, कृष्ण कृष्ण हरे हरे' के गायन से मनुष्य सरलता से भव-सागर पार कर सकता है। ये नाम उस आवरण को नष्ट करते हैं, जो सोलह कलाओं से घिरे जीव के अहंकार का जनक है। उसके बाद परब्रह्म परमात्मा वैसे-ही प्रकाशित हो उठते हैं, जैसे बादलों के छँटने के बाद सूर्य। इन नामों के जप के लिए किसी नियम के पालन की आवश्यकता नहीं है। ब्रह्माजी ने यह भी कहा, 'जो कोई, शुद्ध या अशुद्ध अवस्था में, सदा इन नामों का उच्चारण करता है, वह सालोक्य, सामीप्य, सारूप्य या सायुज्य मुक्ति प्राप्त करता है। वह तत्काल सभी प्रकार के बन्धनों से मुक्त हो जाता है।'

प्रार्थना से योग की शुरुआत होती है। प्रार्थना योग का प्रथम महत्त्वपूर्ण अंग है। प्रार्थना प्रारम्भिक आध्यात्मिक साधना है। शुद्धता, भक्ति, प्रकाश और ज्ञान के लिए भगवान से प्रार्थना कीजिए। आपको ये चीजें मिलेंगी। प्रार्थना पर्वत को हिला सकती है। प्रार्थना से चमत्कार हो सकता है। अपने अन्तस्तल से एक

बार ही कहिए, ''हे प्रभु! मैं आपका हूँ। आपकी ही इच्छा पूरी हो। मुझ पर कृपा कीजिए। मैं आपका सेवक हूँ। मुझे क्षमा कीजिए। मेरा मार्गदर्शन कीजिए। मेरी रक्षा कीजिए। मुझे आत्मज्ञान दीजिए। त्राहि। प्रचोदयात्।''

आप जैसे चाहें, वैसे प्रार्थना कीजिए। एक बच्चे के समान सरल बनिए। अपने हृदय के द्वार पूरी तरह खोल दीजिए। धूर्त्तता या छल-कपट से दूर रहिए। आपको सब-कुछ मिलेगा। भक्ति-भाव से अभी, इसी क्षण प्रार्थना कीजिए। देर न करो मित्र। 'कल' कभी नहीं आता।

गुरु



देव-देव-शिवानन्द

देव-देव शिवानन्द दीनबन्धो पाहि माम् ।
चन्द्र-वदन मन्दहास प्रेम-रूप रक्ष माम् ॥
मधुर-गीत-गान-लोल ज्ञान-रूप पाहि माम् ।
समस्त-लोक-पूजनीय मोहनांग रक्ष माम् ॥ 1 ॥

दिव्य-गंगा-तीर-वास दान-शील पाहि माम् ।
पाप-हरण पुण्य-शील परम-पुरुष रक्ष माम् ॥
भक्त-लोक-हृदय-वास स्वामिनाथ पाहि माम् ।
चित्स्वरूप चिदानन्द शिवानन्द रक्ष माम् ॥2॥

सद्गुरु वन्दना

भवसागर तारण कारण हे,
रविनन्दन बन्धन खण्डन हे ।
शरणागत किंकर भीत मने,
गुरुदेव, दया कर दीन जने ॥

हृदि कन्दर तामस भास्कर हे,
तुम विष्णु प्रजापति शंकर हे ।
परब्रह्म परात्पर वेद भणे,
गुरुदेव, दया कर दीन जने ॥

मन-वारण कारण अंकुश हे,
नर त्राण करे हरि चाक्षुष हे ।
गुणगान परायण देवगणे,
गुरुदेव, दया कर दीन जने ॥

कुल-कुण्डलिनी तुम भञ्जक हे,
हृदि-ग्रन्थि विदारण कारण हे ।
महिमा तव गोचर शुद्ध मने,
गुरुदेव, दया कर दीन जने ॥

अभिमान प्रभाव विमर्दक हे,
अति दीन जने तुम रक्षक हे ।
मन कम्पित वञ्चित भक्ति धने,
गुरुदेव, दया कर दीन जने ॥

रिपुसूदन मंगल नायक हे,
सुख शान्ति वराभय दायक हे ।
त्रय ताप हरे तव नाम गुणे,
गुरुदेव, दया कर दीन जने ॥

तव नाम सदा सुख साधक हे,
पतिताधम मानव पावक हे ।
मम मानस चंचल रात्रि-दिने,
गुरुदेव, दया कर दीन जने ॥

जय सद्गुरु! ईश्वर प्रापक हे!
भव-रोग-विकार विनाशक हे !
मन लीन रहे तव श्री चरणे,
गुरुदेव, दया कर दीन जने ॥

लागी लगन गुरु चरनन की

मोरी लागी लगन गुरु चरनन की ॥
चरन बिना कछु वै नहीं भावे,
झूठ माया सब सपनन की ॥ 1 ॥
भवसागर सब सूखि गयौ है,
फिकर नहीं मुझे तरनन की ॥ 2 ॥
मीरा कहे प्रभु गिरिधर नागर!
उलट भई मोरे नयनन की ॥ 3 ॥

सद्गुरु महिमा

गुरुदेव मेरे जब पास खड़े,
मैं आस करूँ किसकी-किसकी ।
जब बाँह गही, गुरुदेव मिले,
तब बाँह गहूँ किसकी-किसकी ॥

जब नाथ मेरे दिलदार मिले,
मैं खोज करूँ किसकी-किसकी ।
जब रूप अनूप छटा उनकी,
छवि और लखूँ किसकी-किसकी ॥

जब प्रीति अपार लखी उनकी,
फिर प्रीति चहूँ किसकी-किसकी ।
जब बाँकी अदा ही सदा उनकी,
फिर प्रीति चहूँ किसकी-किसकी ॥

जब दासि हुई शरणे उनकी,
फिर शरण चहूँ किसकी-किसकी ।
जब चरण शरण गुरुदेव मिले,
फिर शरण चहूँ किसकी-किसकी ॥



गुरु महिमा



गुरु के काम पर मिट जाने वाले और होते हैं ।
गुरु की आन पर मिट जाने वाले और होते हैं ॥

नाम की ओट जग भरमाने वाले और होते हैं ।
भूले-भटके को राह दिखाने वाले गुरु ही होते हैं ॥

बिना बरसात के उमड़े, बहा दे पलक में जग को ।
वे नदियाँ और होती हैं, वे नाले और होते हैं ॥

बना दे बेखबर दुनिया से जिसका एक ही छींटा ।
वे साकी और होती हैं, वे प्याले और होते हैं ॥

मिले सद्‌गुरु कृपा तब ही छुटे संसार का बंधन ।
वो कुंजी और होती हैं, वो ताले और होते हैं ॥

रखो गुरुदेव पर भक्ति, मिलेगी दिव्य वह शक्ति ।
वो भक्ति और होती है, वो शक्ति और होती है ॥

सोऽहं सोऽहं जाप करो

सोऽहं सोऽहं जाप करो, सद्गुरुदेव का ध्यान करो।
सोऽहं ब्रह्मा सोऽहं विष्णु, सोऽहं सत्यम् ध्यान करो।
सोऽहं सत्यम् ध्यान करो।
गुरु ही आत्मा, गुरु परमात्मा, गुरु का हरदम ध्यान करो।
गुरु का हरदम ध्यान करो।
गुरु ही ब्रह्मा, गुरु ही विष्णु, गुरु ही श्याम औ' राम वही।
सोऽहं शिव है, श्याम वही।

गुरु हमारे प्राण

गुरु हमारे मन मन्दिर में, गुरु हमारे प्राण ।
सारे विश्व का वह है दाता, नारायण भगवान् ॥
जय गुरुदेव, श्री गुरुदेव ॥

गुरु हमारे धन-दौलत हैं, गुरु हमारे प्राण ।
सारे विश्व का वह है दाता, नारायण भगवान् ॥
जय गुरुदेव, श्री गुरुदेव ॥

गुरु हमारे तन मन सब हैं, गुरु हमारे प्राण ।
सारे विश्व का वह है दाता, नारायण भगवान् ॥
जय गुरुदेव, श्री गुरुदेव ॥

मुझको अपना लेना

गुरुदेव दया करके मुझको अपना लेना।
मैं शरण पड़ा तेरी, चरणों में जगह देना।
गुरुदेव दया करके मुझको अपना लेना।

तुम सुख के सागर हो, निर्धन के सहारे हो।
इस तन में समाये हो, मुझे प्राणों से प्यारे हो।
नित नाम जपूँ तेरे, नहीं दिल से भुला देना।
गुरुदेव दया करके मुझको अपना लेना।

करुणानिधि नाम तेरा करुणा कर दिखलाना।
सोये हुए भाग्यों को, हे नाथ! जगा देना।
मेरी नाव भँवर डोले, इसे पार लगा देना।
गुरुदेव दया करके मुझको अपना लेना।

पापी हूँ या कपटी हूँ, जैसा हूँ तुम्हारा हूँ।
नहीं नाथ भुलाना मुझे, इस जग में अकेला हूँ।
तेरे दर का भिखारी हूँ, मेरे दोष भुला देना।
गुरुदेव दया करके मुझको अपना लेना।

दर्शन का प्यासा हूँ, इस जग में अकेला हूँ।
अपना लो मुझे स्वामी, दर-दर ठुकराया हूँ।
इतना तो करो बाबा, अब शरण में आया हूँ।
गुरुदेव दया करके मुझको अपना लेना।

निवेदन

हे मेरे गुरुदेव करुणासिन्धु करुणा कीजिये ।
हूँ अधम आधीन अशरण अब शरण में लीजिये ॥

खा रहा गोते हूँ मैं भव-सिन्धु के मँझधार में ।
आसरा है दूसरा कोई न अब संसार में ॥

मुझमें है जप-तप न साधन और नहीं कुछ ज्ञान है ।
निर्लज्जता है एक बाकी और बस अभिमान है ॥

पाप बोझे से लदी नैया भँवर में जा रही ।
नाथ दौड़ो, अब बचा लो, नाव डूबी जा रही ॥

आप भी यदि छोड़ देंगे फिर कहाँ जाऊँगा मैं ।
जन्म दुःख से नाथ कैसे पार कर पाऊँगा मैं ॥

सब जगह मंजिल भटक कर ली शरण अब आपकी ।
पार करना या न करना दोनों मर्जी आपकी ॥



गुरु वन्दन

परमहंस गुरु पुण्य काम तुम
लो प्रणाम शत कोटि हृदय से।

तिमिर पंथ पर ज्ञान रश्मि तुम
जड़ता में चैतन्य उर्मि तुम,
तेरी करुणा से भींगा मन
नित-दिन गाता गान अभय का
परमहंस गुरु... ॥

ज्ञान गगन के केन्द्र इन्दु तुम
ध्यान चक्र के मध्य बिन्दु तुम
बूँद बने हम स्नेह सिन्धु तुम
अन्त नहीं तेरे परिचय का
परमहंस गुरु... ॥

तुम गीता तुम ही रामायण
व्यास तुम्हीं, तुम वैशम्पायन,
तुम ही शिव, सुन्दर सत् तुम ही,
शान्ति विवेक, महत्तम् तुम ही
परमहंस गुरु... ॥



गुरुरेको जगत्सर्वं ब्रह्मविष्णुशिवात्मकम् ।
गुरोः परतरं नास्ति तस्मात् सम्पूजयेत् गुरुम् ॥

सद्गुरुदेव की आरती

आरती करो सद्गुरु की करो,
सद्गुरु की प्यारे गुरुवर की।
आरती करो ...॥

जय गुरुदेव अमल अविनाशी,
ज्ञान रूप अन्तर के वासी।
हर पग-पग पर देते प्रकाश,
जैसे किरणें दिनकर की ॥1॥
आरती करो ...॥

जब से शरण तुम्हारे आये,
अमृत से मीठे फल पाये।
शरण तुम्हारी क्या है छाया,
कल्पवृक्ष तरुवर की ॥2॥
आरती करो ...॥

ब्रह्म ज्ञान के पूर्ण प्रकाश,
योग ज्ञान के अटल प्रवर्त्तक।
जय 'गुरु-चरण' सरोज मिटा दी,
व्यथा हमारे उर की ॥3॥
आरती करो ...॥

अँधकार से हमें निकाला,
दिखलाया है हमें उजाला।
कब से जाने छान रहे थे,

खाक सुनो, दर-दर की ॥4॥
आरती करो ...॥

संशय मिटा विवेक कराया,
भवसागर से पार लँघाया।
अमर प्रदीप जला, कर दी,
निशा दूर इस तन की ॥5॥
आरती करो ...॥

भेदों बीच अभेद बताया,
आवागमन विमुक्त कराया।
धन्य हुए हम पाकर धारा,
ब्रह्म ज्ञान निर्झर की ॥6॥
आरती करो ...॥

कृपा करो सद्‌गुरु जग-तारण,
सत्-पथ दर्शक भ्रांति निवारण।
जय हो नित्य ज्योति दिखलाने,
वाले लीलाधर की ॥7॥
आरती करो ...॥



गुरुवर तुम्हीं बता दो

गुरुवर तुम्हीं बता दो, किसकी शरण में जाएँ,
किसके चरण पे गिरकर, अपनी व्यथा सुनाएँ ॥
गुरुवर तुम्हीं बता दो ... ॥

अज्ञान के तिमिर ने चारों तरफ से घेरा,
क्या रात है प्रलय की, होगा नहीं सबेरा,
पथ और प्रकाश दोनों, चलने की शक्ति पाएँ ॥1॥
गुरुवर तुम्हीं बता दो ... ॥

कुवृत्तियों ने हमको घेरा कदम-कदम पर,
कभी मारा काम बनकर, कभी लूटा क्रोध बनकर,
इन दानवों से कैसे, अपना गला छुड़ाएँ ॥2॥
गुरुवर तुम्हीं बता दो ... ॥

जीवन के देवता का करते रहे निरादर,
कैसे करें समर्पित, जीवन की जीर्ण चादर,
यह पाप की गठरिया कहो किस तरह दिखाएँ ॥3॥
गुरुवर तुम्हीं बता दो ... ॥

माना कपूत हैं हम, क्या रुष्ट रह सकोगे
मुस्कान प्यार अमृत, क्या दे नहीं सकोगे
दाता तुम्हारे दर से, जाएँ तो किधर जाएँ ॥4॥
गुरुवर तुम्हीं बता दो ... ॥

गुरु प्रार्थना

है प्रार्थना गुरुदेव से, यह धर्ममय संसार हो ।
अति उच्चतम जीवन बने, परमार्थमय व्यवहार हो ॥

ना हम रहें अपने लिए, हमको सभी से गर्ज है ।
गुरुदेव ये आशीष दें, जो सोचने का फर्ज है ॥

हम हों पुजारी तत्त्व के, गुरुदेव के आदेश के ।
सच प्रेम के, नित नेम के, सद्धर्म के, सत्कर्म के ॥

हो चिढ़ झूठी राह की, अन्याय की, अभिमान की ।
सेवा करन को दास की, परवाह नहीं हो जान की ॥

छोटें न हों हम बुद्धि से, होवें समर्थ ईशमय ।
हो राममय और कृष्णमय, जगदेवमय जगदीशमय ॥

हर इन्द्रियों का ताब कर, हम वीर हों अतिधीर हों ।
उज्ज्वल रहे सर से सदा, निज धर्मरत हम वीर हों ॥

अतिशुद्ध हों आचार से, तन मन हमारा धर्म का ।
अध्यात्म की शक्ति हमें, पल भी नहीं कर दे जुदा ॥

इस अमर आत्मा का हमें, हर श्वास भर में गम रहे ।
गर मौत भी ये आ गई, सुख-दुःख हम से सम रहे ॥

हे गुरुदेव,
हम सबको सद्बुद्धि दें, कर्त्तव्य करने की सद्बुद्धि दें,
सच बोलने का ध्यास दें, सत्स्वरूप का ज्ञान दें ॥

गुरु-नाम-संकीर्तन



श्री गुरु चरणम्

श्री गुरु चरणं नमो-नमो, सत्यम् शरणं नमो-नमो।
शिवानन्द गुरु नमो-नमो, बोलो योगं शरणं नमो-नमो।
सत्यानन्द गुरु नमो-नमो, बोलो योगं शरणं नमो-नमो।

गुरु के नाम गाओ

गुरु के नाम गाओ, गुरु के नाम गाओ।
गुरु के नाम गाओ, गुरु के नाम गाओ।

जय गुरु

जय गुरु, जय गुरु, जय गुरु जय।
परमहंस सत्यानन्द जय गुरु जय।

जय बोलो आनन्द में

जय बोलो गुरुदेव की आनन्द में, आनन्द में।
आनन्द में प्रभु के आनन्द में।

ॐ गुरु

ॐ गुरु, ॐ गुरु, सच्चिदानन्द गुरु।
सच्चिदानन्द गुरु, शिवानन्द गुरु।
शिवानन्द गुरु, सत्यानन्द गुरु।

बोलो-बोलो नाम

श्री गुरुदेव की महिमा अपार है।
श्री सत्यानन्द जी के बोलो-बोलो नाम।

मन भूल मत जइयो

मन भूल मत जइयो गुरुदेव के चरण ।
गुरुदेव के चरण गुरुदेव के चरण॥

जय गुरु

जय गुरु, शिव गुरु, हरि गुरु राम।
जगत गुरु, परम गुरु, सद्गुरु श्याम।

आनन्द सागर

आनन्द सागर गुरु महाराज।
मेरे गुरु सत्यानन्द योग अवतार।

गुरु महाराज

गुरु महाराज, गुरु जय जय।
परमब्रह्म सद्गुरु जय जय।
सत्यानन्द श्री गुरु जय जय।

ॐ भगवान

ॐ भगवान श्री भगवान आनन्द भगवान सद्गुरु भगवान।

गुरुदेव मेरी नैया

गुरुदेव मेरी नैया उस पार लगा देना।
अब तक जो निभाया है आगे भी निभा देना।

रिखिया वाले बाबा

चरणों से हमको लगा लै हो रिखिया वाले बाबा।
रिखिया वाले बाबा, सत्यानन्द बाबा।
सत्यानन्द बाबा, योगीराज बाबा।

हरि गुन गाओ

सदा निरन्तर हरि गुन गाओ।
प्रेम भक्ति के भजन सुनाओ।
श्री गुरुदेव की शरण में आओ।
मन मन्दिर में दीप जलाओ।
जीवन नैया पार लगाओ।

जय गुरुदेव

जय गुरु जय हे जय गुरुदेव

ॐ मंगलम्

ॐ मंगलम् ॐकार मंगलम्
गुरु मंगलम् गुरुपाद मंगलम्

ॐ नमो भगवते

ॐ नमो भगवते शिवानन्दाय

गुरु ब्रह्मा

गुरु ब्रह्मा गुरु विष्णुः गुरुर्देवो महेश्वरः ।
गुरु साक्षात् परंब्रह्म तस्मै श्री गुरवे नमः ॥

ॐ गुरुदेव

ॐ गुरुदेव ॐ गुरुदेव ॐ गुरुदेव
नारायण नारायण नारायण

शिवानन्द योगी

शिवानन्द योगी गुरुदेव योगी
शिवानन्द शिवानन्द महादेव योगी

जय जय जय जय गुरुदेव

जय जय जय जय गुरुदेव
जय जय जय जय गुरुदेव
गुरुदेव गुरुदेव गुरुदेव गुरुदेव
गुरुदेव जय गुरुदेव

दया करो गुरुदेव

दया करो गुरुदेव, कृपा करो गुरुदेव
जय जय गुरुदेव, जय जय गुरुदेव
जय जय गुरुदेव, जय गुरु

मंगल मंगल नाम

मंगल मंगल नाम हरि हरि ॐ
पावन पावन नाम हरि हरि ॐ
हरि ॐ हरि ॐ

अलख निरंजन

अलख निरंजन भव भय भंजन
नारायण सत्यम् नारायण
नारायण नारायण, नारायण सत्यम् नारायण।

गुरुदेवा गुरुदेवा

गुरुदेवा जय गुरुदेवा।
चरण नमस्तुते गुरुदेवा।
विद्यादायक गुरुदेवा।
शान्ति स्वरूपा गुरुदेवा।
करुणासागर गुरुदेवा।
प्राण देवा प्रेम देवा।
शान्ति प्रदायक गुरुदेवा।



शिव



शिव स्तुति

शान्तं पद्मासनस्थं शशिधरमुकुटं पञ्चवक्त्रं त्रिनेत्रं,
शूलं वज्रं च खड्गं परशुमभयदं दक्षिणांगे वहन्तम् ।
नागं पाशं च घण्टां डमरुकसहितं चांकुशं वामभागे,
नानालंकारदीप्तं स्फटिकमणिनिभं पार्वतीशं नमामि ॥1॥

वन्दे शम्भुमुमापतिं सुरगुरुं वन्दे जगत्कारणं,
वन्दे पन्नगभूषणं मृगधरं वन्दे पशूनां पतिम् ।
वन्दे सूर्यशशांकवह्निनयनं वन्दे मुकुन्दप्रियं,
वन्दे भक्तजनाश्रयं च वरदं वन्दे शिवं शंकरम् ॥2॥

श्री शंकर-मंगलम्

जय जय शिव भोले भण्डारी ।
हे आशुतोष, हे त्रिपुरारी ॥

जटा-जूट में गंग विराजे,
गले शेष की माला साजे ।
एक हाथ में शूल लिए हो,
दूजे डमरू धारी ॥

पतितों को पावन करते हो,
सुख देकर दु:ख को हरते हो ।
शरणागत हैं आज तिहारी,
मेटो सारे संकट भारी ॥

उमा रमण करुणा के सागर,
नाव भँवर में है यह जर्जर ।
पार लगा दो आकर अब तुम,
बिगड़ गयी है दशा हमारी ॥

जन्म-मृत्यु संतरण मन्त्र

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ।
उर्वारुकमिव बन्धनात् मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ॥

सांसारिक दु:ख, संताप एवं जन्म-मरण के बन्धन से मुक्ति पाने के लिए नित्य साधना के पश्चात् इस मन्त्र का जप करें।

बजावे भोला डमरू

बजावे, बजावे भोला डमरू धीरे-धीरे।

आगे-आगे शंकर चलें, पीछे-पीछे बैला।
पर्वत पर गौरी चलत धीरे-धीरे। बजावे...

आगे-आगे राम चलें, पीछे-पीछे लक्ष्मण।
बीच में सीता चलत धीरे-धीरे। बजावे...

आगे-आगे कृष्ण चलें, पीछे-पीछे बलदेव।
बीच में राधा नचत धीरे-धीरे। बजावे...

काशी में गंगा बहे, मथुरा में यमुना।
अयोध्या में सरजू बहत धीरे-धीरे। बजावे...

आगे-आगे गुरु चले, पीछे-पीछे चेला।
बीच में श्रद्धा नचत धीरे-धीरे। बजावे...

शिव स्वरूप

चमके चन्दा माथ में, त्रिशूल बिराजे हाथ में ।
नाग गले शिव डाले हैं, जटा से गंगा ढाले हैं ।
बैल की सवारी है, भोले डमरू धारी हैं ।
भाँग धतूरा वाले हैं, शंकर भोले भाले हैं ।

आई भोले की बरतिया

आई भोले की बरतिया हिमाचल नगरी।
हिमाचल नगरी, हो हिमाचल नगरी।

अगवानी की हुई तैयारी,
सजने लगे बराती।
कोई चला है चूहे पर चढ़,
कोई चला चढ़ हाथी।
टेढ़ी-मेढ़ी रे चलनिया हिमाचल नगरी।

करन कलेवा शंकर आये,
भूत-प्रेत के संग।
किसी के दो सिर, चार भुजा हैं,
पेट है जैसे लोटा।
चली-चली रे बरतिया हिमाचल नगरी।

पार्वती को गोद में लेकर
रो-रो नीर बहाई,
उसी समय नारद ने आकर
सबको खूब समझाया।
होने लगी रे भाँवरिया हिमाचल नगरी।



शिव के श्रृंगार



चलू देखब शिव के श्रृंगार,
हे सहेलियाँ फूलों से सजी।

डिमक-डिमक कर डमरू बाजे
ठुमक-ठुमक कर शंभु नाचे
जटा से बहे गंगा धार,
हे सहेलियाँ फूलों से सजी...

अंग भभूत गले मुण्डमाला
नैना अति बिसाल
बाघम्बर कटि कछनी काछे
नाग करे फुफकार,
हे सहेलियाँ फूलों से सजी...

नील कमल अरु कण्ठ बिराजे
तिरलोचन उजियार
हर हर बम बम शिव शंकर की
ज्योति भई अपार,
हे सहेलियाँ फूलों से सजी...

शिव-नाम संकीर्तन



ॐ शिव ॐ शिव

ॐ शिव, ॐ शिव, परात्परं शिव, ओंकारा शिव तव शरणम् ।
नमामि शंकर, भवानी शंकर, उमा महेश्वर तव शरणम् ।

नाचे भोला नाथ

ॐ धिमिक-धिमिक धिम, धिमिक-धिमिक धिम।
नाचे भोलानाथ, नाचे भोलानाथ ।
मृदंग बोले शिव शिव शिव ॐ ।
डमरू बोले हर हर हर ॐ ।
वीणा बोले हरि ॐ हरि ॐ ।

बम् बम् महादेवा

बम् बम् बम् बम् महादेवा।
हर हर हर हर सदाशिवा।

बम् भोले

बम् बम् बम् बम् बम् भोले,
रामचरित मानस बोले।
सीता राम बोलो, सीता राम,
राधे श्याम बोलो, राधे श्याम।

हरि ॐ

हरि ॐ, हरि ॐ, नमः शिवाय।
नमः शिवाय, नमः शिवाय।

जय भोला भण्डारी

जय भोला भण्डारी शिव हर।
जय भोला भण्डारी।
जय कैलाशपति शिव शंकर।
संतन के हितकारी।

शंभो मुरारी

शंभो मुरारी, शंकर मुरारी।
मुरहर फणिधर शंकर मुरारी।

हर हर बम् बम्

हर हर बम् बम् हर हर बम् बम्।
हर हर बम् बम् महादेवा।
हर हर बम् बम् हर हर बम् बम्।

हर हर हर बम भोला

शिव हर हर हर बम भोला।
आज चढ़ेगा भाँग का गोला।
शिव शंकर गिरिजा वरदानी।
शिव जटा गंग, विलसत भुजंग।
भृकुटि विशाल त्रिनेत्र लाल।
चढ़े बूढ़े बैल मरघट की गैल।

सुब्रमण्यम् सुब्रमण्यम्

सुब्रमण्यम् सुब्रमण्यम्।
षण्मुख नाथं सुब्रमण्यम्।
हर हर शिव शिव सुब्रमण्यम्।
शिव शिव हर हर सुब्रमण्यम्।
सुब्रमण्यम् सुब्रमण्यम्।

शिव शिव परमब्रह्म

शिव शिव परमब्रह्म, नमः शिवाय सदाशिव।
शिव शिव परमब्रह्म, नमः शिवाय सदाशिव।
शंभु शंकर सदा शिवाय।
हरि ॐ हरि ॐ सदा शिवाय।

शिवाय परमेश्वराय

शिवाय परमेश्वराय शशि शेखराय नमः ॐ।
भवाय गुणशंभवाय शिव ताण्डवाय नमः ॐ।

शिव शंकर शम्भो

हे शिव शंकर नमामि शंकर शिव शंकर शम्भो।
हे गिरिजापति भवानी शंकर शिव शंकर शम्भो।

शम्भो शंकर सदाशिव

ॐ नमः शिवाय।
शिव शिव शिव शिव महादेव, शम्भो शंकर सदाशिव।
शिव शिव शिव शिव महादेव, चन्द्रचूड़ामणि सदाशिव।

नटराजा नटराजा

नटराजा नटराजा शिव शिव नटराजा
शिवराजा शिवराजा नर्तन सुंदर शिवराजा
शिवराजा शिवराजा शिवकामी प्रिय शिवराजा

जय शिव शंकर

जय शिव शंकर जय शिव शंकर जय शंकर भोले
सब देवों में देव निराले जय बं बं भोले।
जय बं बं भोले जय बं बं भोले
जय बं बं भोले।

गौरी शंकर

शंकर शंकर पार्वती महेश्वर
चन्द्रमौली शंकर चन्द्रशेखर
नन्दिवाहन नागभूषण
नीलकण्ठ शूलधारी गौरी शंकर

नमः पार्वती पतये

नमः पार्वती पतये हर हर।
हर हर हर हर महादेवाय।
सदा शिवाय महादेवाय।

शंभुनाथ जय हो

हरि ॐ नमः शिवाय।
शिव शिव शंकर, हे परमेश्वर।
शंभुनाथ जय हो।

जय शंकर कैलाशपति

जय शिव शंकर कैलाशपति।
जय जय गौरी महापार्वती।

जयतु शिवाशिव

जयतु शिवाशिव, जानकी राम।
जय रघुनन्दन, जय सियाराम।
ध्यान धरो हरि नाम।
त्याग करो अभिमान।
तारक नाम स्मरणम्।
ताप-त्रय संहरणम्।

शिव शंभु भजे

डम् डम् डम् डम् डमरू बजे डमरू बजे
हरि भोलेनाथ शिव शंभु भजे

महादेव शंभो

शिव शिव शिव शंभो हर हर हर शंभो
महादेव शंभो महादेव शंभो

गंगाधर शिव

शिव शंभु हर हर शंभु
भवनाशक कैलाश निवास
पार्वतीपते हर पशुपते
गंगाधर शिव गौरीपते

श्री शिव शरणम्

श्री शिव शरणं नमो नमो
शंकर शरणं नमो नमो

ॐ नमः शिवाय बोलो

ॐ नमः शिवाय बोलो ॐ नमः शिवाय
शिव शक्ति का महामंत्र है मुक्ति का उपाय
ॐ नमः शिवाय बोलो ॐ नमः शिवाय

जय जय हरिहर

जय जय हरिहर शिव शंकर ।
बम् बम् महादेव शिव शंकर ।

जय जय शम्भू

जय जय शम्भू, जय शम्भू।

जय शिव ओंकारा

जय शिव ओंकारा जय जय,
हर शिव ओंकारा ॐ
ब्रह्मा विष्णु सदाशिवाय,
हर हर हर हर महादेवाय।



विष्णु



विष्णु वन्दना

शान्ताकारं भुजग-शयनं पद्मनाभं सुरेशम्
विश्वाधारं गगन-सदृशं मेघवर्णं शुभांगम् ।
लक्ष्मीकान्तं कमलनयनं योगिभिर्ध्यान-गम्यम्
वन्दे विष्णुं भव-भय-हरं सर्वलोकैकनाथम् ॥

हरि नाम की महिमा

जिनके हिय में हरि नाम बसे,
तिन और का नाम लिया न लिया।
जिनके द्वारे पर गंगा बहे,
तिन कूप का नीर पिया न पिया।
जिन काम किया परमारथ का,
तिन हाथ से दान दिया न दिया।
जिनके घर एक सपूत भयो,
तिन लाख कपूत भया न भया।
जिन माता-पिता की सेवा करी,
तिन तीरथ वरत किया न किया।
'तुलसीदास' विचारि कहे,
कपटी को मीत किया न किया।

प्रभु स्मरण

सुमिरन कर ले मेरे मना तेरी बीती उमर हरि नाम बिना।
पंछी पंख बिना हस्ति दन्त बिना नारी पुरुष बिना।
जैसे पुत्र पिता बिन हीना वैसे पुरुष हरि नाम बिना।
कूप नीर बिना धेनु छीर बिना धरती मेघ बिना।
जैसे तरुवर फल बिन हीना, तैसे पुरुष हरि नाम बिना।
काम, क्रोध, मद, लोभ निहारो, छोड़ विरोध तू सन्तजना।
कहे नानक, तू सुन भगवन्ता, इस जग में नहीं कोई अपना।

हरि नाम सुमर

हरि नाम सुमर सुख धाम जगत में जीवन दो दिन का।
पाप कपट कर माया जोड़ी,
गरब किया धन का।
सभी छोड़कर चला मुसाफिर,
वास हुआ बन का ॥
जगत में जीवन... ॥

सुन्दर काया देख लुभाया,
लाड़ करे तन का।
छूटी श्वास बिखर गई देही,
ज्यों माला मनका ॥
जगत में जीवन... ॥

यौवन नारी लगे पियारी,
मौज करे मन का।
काल बली का लगे तमाचा,
भूल जाये ठनका ॥
जगत में जीवन... ॥

यह संसार सपन की माया
मेला पल-छिन का।
'ब्रह्मानन्द' भजन कर बन्दे,
अलख निरंजन का ॥
जगत में जीवन... ॥

राम-कृष्ण-हरि

राम-कृष्ण-हरि, मुकुन्द-मुरारी।
पाण्डुरंग, पाण्डुरंग, पाण्डुरंग हरी ॥1॥ राम...

मकर-कुण्डल-धारी, भक्त-बन्धु-शौरी।
मुक्तिदाता, शक्तिदाता, विट्ठल नरहरी ॥2॥ राम...

दीन बन्धु, कृपासिन्धु, श्रीहरी श्रीहरी।
पावनांग, हे कृपांग, वासुदेव हरी ॥3॥ राम...

तुलसीहार कन्धर, भक्त-हृदय मन्दिर।
मन्दराद्रिधर मुकुन्द, इन्दिरेश श्रीहरी ॥4॥ राम...

जगत्रय जीवन, केशव नारायण।
माधव जनार्दन, आनन्दघन हरी ॥5॥ राम...

राजस सुकुमार, मोहनाकार।
करुणासागर, अच्युत श्रीहरी ॥6॥ राम...

पुण्डलीक वरदा, पण्डरिनाथ शुभदा।
अण्डजवाहन कृष्ण, पाण्डुरंग हरी ॥7॥ राम...

ज्ञानदेव संस्तुता, नामदेव कीर्तिता।
तुकाराम पूजिता, दास केशव सन्नुता ॥8॥ राम...



राम



राम भजो जी

जिस हाल में, जिस चाल में, जिस ढाल में रहो।
जिस संग में, जिस रंग में, जिस ढंग में रहो॥
जिस भोग में, जिस रोग में, जिस योग में रहो।
जिस काम में, जिस धाम में, जिस ग्राम में रहो॥
जिस हाल में, जिस देश में, जिस वेश में रहो।
राम भजो, राम भजो, राम भजो जी॥
राधे कृष्ण गोविन्द गोपाल भजो जी॥

परम मन्त्र राम नाम

प्रेम मुदित मन से कहो राम राम राम, कहो राम राम राम।
पाप कटे दुःख मिटे लेके राम नाम,
भव समुद्र सुखद नाव, एक राम नाम।
कहो राम राम राम.............॥

परम शान्ति सुख निधान एक राम नाम,
निराधार को आधार एक राम नाम।
कहो राम राम राम...........॥

परम गुप्त, परम इष्ट मन्त्र राम नाम,
सन्त हृदय सदा बसत एक राम नाम।
कहो राम राम राम...........॥

महादेव सतत् जपत दिव्य राम नाम,
काशी मरत मुक्त करत, कहत राम नाम।
कहो राम राम राम...........॥

माता-पिता बन्धु सखा सब ही राम नाम,
भक्त जनन जीवन-धन एक राम नाम।
कहो राम राम राम...........॥



राम नाम महिमा

बिना राम का भजन किये, पाया किसने आराम कहो ।
राम कहो श्री राम कहो, राम कहो श्री राम कहो ॥

राम नाम अनमोल रतन है, गूँथ गले डालो माला ।
हिय का अंधकार हरने को, मार्तण्ड सम उजियाला ॥

राम नाम मणि विषय-व्याल का, रोग शोक हरने वाला ।
निर्बल के बल निर्धन के धन, निराधार का रखवाला ॥

सुख में दुःख में लाभ-हानि में, सदा सुबह अरु शाम कहो ।
राम कहो श्री राम कहो, राम कहो श्री राम कहो ॥

राम नाम बल पाकर शिव ने, काल कूट विष पान किया ।
वाल्मीकि घटयोनि विभीषण, सफल जन्म हनुमान किया ॥

राम नाम बल प्रह्लाद, नृसिंह रूप भगवान् लिया ।
गज-गणिका और द्रुपद-सुता को महा विपद से त्राण दिया ॥

तन से काम करो औ' निशिदिन मन से आठों याम कहो ।
राम कहो श्री राम कहो, राम कहो श्री राम कहो ॥

'रा' कहते कट जात हृदय से, कलि कल्मष-संताप सभी ।
देत 'म'कार न आवन हिय में, पाप विकार विचार कभी ॥

'र' रवि 'म' मयंक महिमामय, कर के देखो जाप कभी ।
सब मन्त्रों का बीज मन्त्र है, लगे न इससे पाप कभी ॥

रमा जगत् के रोम-रोम में, युग अक्षर सतनाम कहो ।
राम कहो श्री राम कहो, राम कहो श्री राम कहो ॥

राम विमुख रावण के घर में, कोई न रोवनहार रहा ।
कुम्भकरण और मेघनाद का, सारा बल बेकार रहा ॥

धन जन विपुल बड़ाई वैभव, जिनका अपरम्पार रहा ।
राम नाम सत रहा अन्त में, खाली हाथ पसार गहा ॥

यातो निशिदिन राम कहो, यदि चाहो विश्राम करो ।
राम कहो श्री राम कहो, राम कहो श्री राम कहो ॥

पढ़ो पोथी में राम

पढ़ो पोथी में राम, लिखो तख्ती में राम,
देखो खम्भे में राम, हरे राम राम राम ।
पियो काफी में राम, बोलो खाने में राम,
बोलो चलने में राम, हरे राम राम राम ॥
बोलो पापा से राम, बोलो मम्मी से राम,
बोलो चाची से राम, हरे राम राम राम ॥
शम्भो शंकर हर, शम्भो शंकर हर,
शम्भो शंकर हर बम बम बम ॥

दर्शन की अरदास



दर्शन दो घनश्याम राम, मेरी अँखियाँ प्यासी रे ।
मन-मन्दिर की ज्योति जगा दो, घट-घट वासी रे ॥
मन्दिर-मन्दिर मूरत तेरी, फिर भी न देखी सूरत तेरी ।
युग बीते, न आई मिलन की पूरणमासी रे ॥
द्वार दया का जब तू खोले, पंचम सुर में गूँगा बोले ।
अन्धा देखे, लंगड़ा चल कर पहुँचे काशी रे ॥
पानी पीकर प्यास बुझाऊँ, नयनों को कैसे समझाऊँ ।
आँख-मिचौनी अब तो छोड़ो, मन के वासी रे ॥

कलि संतरण मन्त्र

हरे राम हरे राम, राम राम हरे हरे ।
हरे कृष्ण हरे कृष्ण, कृष्ण कृष्ण हरे हरे ॥

शुद्धि, शक्ति और योग के लिए नित्य उपासना के बाद यह प्रार्थना-मन्त्र गायें।

राम मिलन

राम से कोई मिला दे मुझको,
राह से कोई लगा दे मुझको ।
बिन लाठी का निकला अन्धा,
राह से कोई लगा दे मुझको ।

कोई कहे वह बसे अवध में,
कोई कहे वृन्दावन में ।
कोई कहे तीरथ मन्दिर में,
कोई कहे मिलते मन में ।

कोई ऐसी ज्योति जला दे,
श्रद्धा-ज्योति जले मुझमें ।
भक्ति-ज्योति जले मुझमें,
ज्ञान की ज्योति जले मुझमें ।

रामनाम-रस पीजै

रामनाम-रस पीजै, मनुआँ रामनाम रस पीजै ।
तजि कुसंग सत-संग बैठ नित हरि-चरचा सुनि लीजै ॥
काम क्रोध मद लोभ मोहकूं, बहा चित्त से दीजै ।
'मीरा' के प्रभु गिरधर नागर, ताहिके रंग में भीजै ॥

भजले सीताराम

भजले सीताराम मनवा भजले सीताराम ॥

दिवस दिया जो हरिगुण गा ले, गुरु दिया जो नाम ।
माता पिता ने जन्म दिया है, रूप दिया भगवान् ॥
मनवा.................॥

राम प्रभु हैं अन्तर्यामी, सकल खबर वे लेते ।
जिसने जैसा कर्म किया है, वैसा फल प्रभु देते ॥
मनवा.................॥

लड़का जन्मा पाला-पोसा, जिसको दूध पिलाया ।
वो ही लड़का मरे पिता के मुख में आग लगाया ॥
मनवा.................॥

इक नर भूला, दो नर भूले, भूला सब संसार ।
जानबूझ कर जो नर भूले, उसको नाही पार ॥
मनवा.................॥

स्वामी जी ने योग ज्ञान को, देश-देश फैलाया ।
इसी योग से सब लोगों ने शान्ति औ' सुख पाया ॥
मनवा.................॥



भज मन राम राम
सुन्दर श्यामल रूप मनोहर गुण धाम ॥
सकल रिपु-नाशन,धनुधारी नारायण ।
योगी भोला नृत्य करे, गाये राम-राम ॥

भक्त का मिथिला प्रेम

अपना किशोरी जी के टहल बजैबई, हे हम मिथिले बसबै ।
घर ही में हमरा चारों धाम, हे हम मिथिले बसबै ॥
साग-पात खोटी-खोटी दिवस गंवैबइ, हे हम मिथिले बसबै ।
हमरा न चाही सुख आराम, हे हम मिथिले बसबै ॥
आगू-आगू झाड़ी-झाड़ी फुलवा बिछैबइ, हे हम मिथिले बसबै ।
ताही पर चलथिन सीता राम, हे हम मिथिले बसबै ॥
सिया के चरण धरी सर्वस बनैबइ, हे हम मिथिले बसबै ।
सिया-सिया रटबइ आठों याम, हे हम मिथिले बसबै ॥

राम रतन धन पायो

पायो जी मैंने राम-रतन धन पायो ॥
वस्तु अमोलक दी मेरे सद्गुरु,
किरपा कर अपनायो ॥1॥
जनम जनम की पूँजी पाई,
जग में सभी खोवायो ॥2॥
खरचै न खुटै, चोर न लूटै,
दिन दिन बढ़त सवायो ॥3॥
सत की नाव, खेवटिया सद्गुरु,
भवसागर तर आयो ॥4॥
मीरा के प्रभु गिरिधर नागर
हरख हरख जस गायो ॥5॥

राम मिलन की चाह



मुझे राम मिलन की चाह लगी।
मन को छोड़ा तन को छोड़ा, छोड़ा सकल संसार को।
जाग्रत स्वप्न सुषुप्ति बेधा, अजहूँ न पाया राम को।
मुझे राम मिलन.................।

मौन में ढूँढा, व्रत में ढूँढा, ढूँढा पोथी शास्त्र में।
काष्ठ मौन साध के देखा, अजहूँ न पाया राम को।
मुझे राम मिलन.................।

आसन बैठा श्वास चढ़ाया, सप्तक तार मिलाया।
भृकुटी में ध्यान जमाया, अजहूँ न पाया राम को।
मुझे राम मिलन.................।

छाया में ढूँढा काया में ढूँढा, ढूँढा त्राटक ध्यान में।
घर घर ढूँढा वन वन ढूँढा, अजहूँ न पाया श्याम को।
मुझे राम मिलन.................।

राम जिनका नाम है

राम जिनका नाम है, अयोध्या जिनका धाम है,
ऐसे रघुनन्दन को, हमारा भी प्रणाम है।
गोपाल जिनका नाम है, गोकुल जिनका धाम है,
ऐसे योग दाता को, हमारा भी प्रणाम है।
शंकर जिनका नाम है, काशी जिनका धाम है,
ऐसे मुक्तिदाता को हमारा भी प्रणाम है।
शिवानन्द जिनका नाम है, ऋषिकेश जिनका धाम है,
ऐसे भक्ति दाता को हमारा भी प्रणाम है।
सत्यानन्द जिनका नाम है, रिखिया जिनका धाम है,
ऐसे जीवनमुक्त को हमारा भी प्रणाम है।

राम रक्षा स्तोत्र

आपदामपहर्तारं दातारं सर्वसम्पदाम् ।
लोकाभिरामं श्रीरामं भूयो भूयो नमाम्यहम् ॥
रामो राजमणि: सदा विजयते रामं रमेशं भजे
रामेणाभिहता निशाचरचमू रामाय तस्मै नमः।
रामान्नास्ति परायणं परतरं रामस्य दासोऽस्म्यहं
रामे चित्तलय: सदा भवतु मे भो राम मामुद्धर॥

सभी आपदाओं के नाश और भगवान श्रीराम के चरणों में प्रबल और दृढ़ भक्ति जाग्रत करने के लिए इन सिद्ध मन्त्रों का प्रतिदिन प्रात:काल जप करें।

श्रीराम की बाल-छटा

ठुमुकि चलत रामचन्द्र, बाजत पैंजनियाँ ॥
किलकिलाई उठत धाय, गिरत भूमि लटपटाय,
धायी मातु गोद लेत दसरथ के रानियाँ ॥
'तुलसीदास' अति आनन्द, हेरत मुखारबिन्द,
रघुवर की छबि-समान रघुवर-छवि बानियाँ ॥

सीता राम

मेरी पटिया पै लिख दो - सीताराम
मेरी चुटिया पै लिख दो - सीताराम
मेरी आँखें देखें - सीताराम
मेरे कान सुन लें - सीताराम
मेरे तन पै लिख दो - सीताराम
मेरे मन पै लिख दो - सीताराम
मेरी ढोलक बोले - सीताराम

सीताराम जै सीताराम, राधेश्याम जै राधेश्याम ॥

प्रेम से बोलो - सीताराम
हरदम बोलो - सीताराम

राम नाम संकीर्तन

राम दयाला

राम दयाला, हरि कृष्ण दयाला।
कृष्ण दयाला, हरि राम दयाला।

पिंजरे वाली मैना

पिंजरे वाली मैना, भजो न सीता राम राम।
भजो न सीता राम राम, भजो न राधे श्याम श्याम।

तेरी महिमा न्यारी

भजो नारायण नारायण हरि हरि।
तेरी महिमा तेरी महिमा।
तेरी महिमा न्यारी न्यारी।

जय अस्तु जय हे

जय अस्तु जय हे, जय रघुनन्दन।
विट्ठल विट्ठल विट्ठल, पाण्डुरंग विट्ठल।

अयोध्यावासी राम

अयोध्यावासी राम, दशरथ नन्दन राम
पतित पावन जानकी जीवन सीता मोहन राम
जय जय राम राम राम सीता राम राम राम
जय जय राम राम राम सीता राम राम राम

अल्लाह तुम हो, ईश्वर तुम हो

अल्लाह तुम हो, ईश्वर तुम हो,
तुम ही हो राम रहीम, तुम ही हो राम रहीम।
मेरे राम मेरे राम राम रहीम, मेरे राम मेरे राम राम रहीम।

नारायण ॐ

नारायण नारायण नारायण ॐ।
नारायण ॐ नारायण ॐ।

राम कहो

राम कहो, श्री राम कहो।
राम कहो, श्री राम कहो।

राम लक्ष्मण जानकी

राम लक्ष्मण जानकी, जय बोलो हनुमान की।

हरे मुरारे राम राम

हरे मुरारे राम राम, हरे मुरारे राम।
परम सुमंगल राम राम, परम सुमंगल राम।
श्री राम जय राम जय जय राम, रघुपति राघव राम।
परम सुमंगल राम राम, परम सुमंगल राम।

ॐ नारायण

ॐ नारायण ॐ नारायण ॐ नारायण आनन्दम् ।
हरि नारायण हरि नारायण विष्णु नारायण आनन्दम् ।

आत्मारामा आनन्दनामा

आत्मारामा आनन्दनामा।
आनन्दमोहन श्री परमधामा।
नयनाभिरामा मानस प्रेमा।
सुकुमार रामा सुन्दर नामा।

श्री रघुनाथ जय रघुनाथ

श्री रघुनाथ जय रघुनाथ
शरणं शरणं श्री रघुनाथ
श्री राम जय राम जय जय राम

सीता-राम मनोहर जोड़ी

सीता-राम मनोहर जोड़ी।
दशरथ नन्दन जनक दुलारी।

बोलो श्रीराम

बोलो तू बोलो तू बोलो श्रीराम, बोलो श्रीराम।
मीठे-मीठे नाम प्यारे प्यारे नाम।
मीठा है प्यारा है हरि प्रभु का नाम।

रघुपति राघव

रघुपति राघव राजा राम
पतित पावन सीता राम
सीता राम सीता राम
भज मन प्यारे सीता राम

अयोध्यावासी श्री रामचन्द्र

हरि नारायण हरि नारायण हरि नारायण।
अयोध्यावासी श्री रामचन्द्र आनन्दरूपा।
जय जय राम।

सीता वल्लभ सुंदर राम

सीता वल्लभ सुंदर राम, जानकी जीवन राजा राम।
दशरथ नन्दन जय जय सियाराम, रघुकुल भूषण राजा राम।

राम राम कहो

राम राम कहो बारम्बार, चक्र सुदर्शन है रखवार।
जय हरि नारायण गोविन्दं, जय गुरु नारायण गोविन्दं।

सीता राम कहो

सीता राम कहो, राधे श्याम कहो।
सीता राम बिना सुख सपना नहीं।
राधे श्याम बिना कोई अपना नहीं। सीता राम...।
सीता राम बिना उद्धार नहीं।
राधे श्याम बिना बेड़ा पार नहीं। सीता राम...।

श्रीमन्नारायण

श्रीमन्नारायण नारायण नारायण
भज मन नारायण नारायण नारायण
लक्ष्मी नारायण...गंगा नारायण...हर हर नारायण...
बं बं नारायण...शिव नारायण...जय जय नारायण...

कृष्ण



भजो रे मन गोविन्दा

नटवर नागर नन्दा, भजो रे मन गोविन्दा।
तू ही नटवर, तू ही नागर, तू ही बाल मुकुन्दा।
सब देवन में कृष्णजी बड़े हैं, जैसे तारों बीच चन्दा।
सब सखियन में राधाजी बड़ी हैं, जैसे नदियों बीच गंगा।
ध्रुव तारे प्रह्लाद उबारे, नरसिंह रूप धरन्ता।
वृन्दावन में रास रचायो, नाचत बाल मुकुन्दा।
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, काटो यम का फन्दा।

मेरी प्रार्थना

गोविन्द मेरी यह प्रार्थना है-
भूलूँ न मैं नाम कभी तुम्हारा ।
ये नाम तेरे दिन रात गाऊँ-
गोविन्द दामोदर माधवेति ॥
हे कृष्ण, हे यादव, हे सखेति ॥

देहान्त काले तुम सामने हो,
वंशी बजाते मन को लुभाते ।
गाते यही नाम तन नाथ! त्यागूँ-
गोविन्द दामोदर माधवेति ॥
हे कृष्ण, हे यादव, हे सखेति ॥

प्यारे जरा तो मन में विचारो,
क्या साथ लाये अरु ले चलोगे ?
जाये यही साथ सदा तुम्हारे,
गोविन्द दामोदर माधवेति ॥
हे कृष्ण, हे यादव, हे सखेति ॥

नारी धरा-धाम सुपुत्र प्यारे,
कलत्र सद्बांधव मित्र सारे ।
कोई न साथी हरि को पुकारो-
गोविन्द दामोदर माधवेति ॥
हे कृष्ण, हे यादव, हे सखेति ॥

नाता भला क्या जग से हमारा
आये यहाँ क्यों कर क्या रहे हैं ?
सोचो विचारो हरि को पुकारो-
गोविन्द दामोदर माधवेति ॥
हे कृष्ण, हे यादव, हे सखेति ॥

सच्चे सखा हैं हरि ही हमारे
माता-पिता शील सुबन्धु प्यारे ।
भूलो न भाई दिन-रात गाओ-
गोविन्द दामोदर माधवेति ॥
हे कृष्ण, हे यादव, हे सखेति ॥

भक्ति गीत

बाँधा था द्रौपदी ने तुम्हें एक तार में ।
कुब्जा ने तुझे बाँध लिया पुष्प हार में ॥

दो मुट्‌ठी चावलों में सुदामा से बँध गये ।
शबरी ने तुझे बाँध लिया बेर चार में ॥

गणिका ने सुगे को पढ़ा बाँधा था तुम्हीं को ।
केवट ने तुम्हें बाँध लिया पद पखार के ॥

उन बानरों की थोड़ी-सी सेवा में बँध गये ।
बाँधा गजेन्द्र ने तुम्हें एक ही गुहार में ॥

कुछ छाछ की छछियों में गोपियों से बँध गये ।
मिथिलानियों से बँध गये गाली हजार में ॥

देखता जा रहा हूँ

मैं घनश्याम को देखता जा रहा हूँ ।
उसी की झलक पर खिंचा जा रहा हूँ ॥

लुटाता है वह मैं लुटा जा रहा हूँ ।
मिटाता है वह मैं मिटा जा रहा हूँ ॥

खबर कुछ नहीं है कहाँ जा रहा हूँ ।
बुलाता है वह मैं चला जा रहा हूँ ॥

मुहब्बत के रंग में रंगा जा रहा हूँ ।
निगाहों में उसकी बहा जा रहा हूँ ॥

पता प्रेम के सिन्धु का पा रहा हूँ ।
कि एक 'बिन्दु' में ही बहा जा रहा हूँ ॥

भक्त की पुकार

आओ मेरे वृन्दावन में, श्याम बंशीधारी ।
देर लगी क्यों, राधा बैठी और सभी ब्रजनारी ॥

राम कृष्ण तो एक ही हैं, भक्ति से मिल जावें ।
कोई कहत है 'सीताराम', कोई जपत 'मुरारी' ॥
आओ मेरे .... ॥

मीरा के प्रभु गिरधर नागर, बार-बार बलि जाऊँ ।
परम सनेही आओ मेरे, दु:ख में हे गिरधारी ॥
आओ मेरे .... ॥

जय राधे



जय राधे राधे राधे,
जय जय जय श्री राधे।
जमुना तट पे, बंशी वट पे,
श्याम जपे राधे राधे।
जय राधे... ॥1॥

राधा कुण्ड पे श्याम कुण्ड पे,
श्याम जपे राधे राधे।
जय राधे... ॥2॥

धीर समीरे यमुना तीरे,
श्याम जपे राधे राधे।
जय राधे... ॥3॥

वृन्दावन की कुंज गलिन में,
श्याम जपे राधे राधे।
जय राधे... ॥4॥

सुना जा श्याम रे

सुना जा, सुना जा, सुना जा श्याम रे।
वो गीता वाला ज्ञान सुना जा श्याम रे।

दिखा जा, दिखा जा, दिखा जा श्याम रे।
वो माधुरी की मूर्ति दिखा जा श्याम रे।

पिला जा, पिला जा, पिला जा श्याम रे।
वो प्रेम भरा प्याला पिला जा श्याम रे।

लगा जा, लगा जा, लगा जा श्याम रे।
मेरी नैया को पार लगा जा श्याम रे।

खिला जा, खिला जा, खिला जा श्याम रे।
माखन-मिसरी खिला जा श्याम रे।

बजा जा, बजा जा, बजा जा श्याम रे।
वो मोहक मुरली बजा जा श्याम रे।



हाय उधो

हाय उधो हमें बता दो
योग से क्या वियोग कम है।

योगी पहने रंगे कपड़े
वियोगियों के हृदय कफन हैं।
हाय उधो... ॥

योगी रमते तन में भसमी
वियोगियों के हृदय भसम है।
हाय उधो... ॥

योगियों की बन में कुटिया
वियोगियों का छूटा बदन है।
हाय उधो... ॥

श्याम सुंदर अब तो हम आशिक

श्याम सुंदर अब तो हम आशिक तुम्हारे बन गये
हम तुम्हारे बन गये और तुम हमारे बन गये
जब ये दिल दुनिया का था
दुश्मन हजारों को जाने
जब ये दिल तुमको दिया है
दिल के प्यारे बन गये

श्याम रसिया

श्याम रसिया मेरो मन बसिया ।
रुचि-रुचि भोग लगाओ रसिया ॥

शबरी के बेर सुदामा के तन्दुल ।
प्रेम से भोग लगाओ रसिया ॥
रुचि-रुचि........ ॥

दुर्योधन के मेवा त्यागो ।
साग विदुर घर खायो रसिया ॥
रुचि-रुचि........ ॥

ऐसो भोग लगावो रसिया ।
सब अमृत हो जाये रसिया ॥
रुचि-रुचि........ ॥

जो कोई इस भोग को पावे ।
सो तेरो हो जाए रसिया ॥
रुचि-रुचि........ ॥

मीरा के प्रभु गिरधर नागर ।
आके दरस दिखाओ रसिया ॥
रुचि-रुचि........ ॥



दुलहो नन्दकुमार

दुलहिन जाकि राधा रानी
दुलहो नन्दकुमार
राधे, दुलहो नन्दकुमार... ॥

अटकी पटकी लूटिया झटकी
बह गयी दुधिया धार,
राधे, दुलहो नन्दकुमार... ॥

अंखियाँ अटकीं लटकें झटकीं
छेड़ दई मुरली की तान,
राधे, दुलहो नन्दकुमार... ॥

अब वृन्दावन में बस्यो
राधे कृष्ण मुरारी
अंतिम आशा पूर्ण करो
आप ही हौ करतार,
राधे, दुलहो नन्दकुमार... ॥



कृष्ण गोविन्द गाते चलो

कृष्ण गोविन्द गोपाल गाते चलो ।
मन को विषयों के विष से हटाते चलो ॥
कृष्ण गोविन्द ... ॥

देखना इन्द्रियों के न घोड़े भगें ।
इनको संयम के दिन रात कोड़े लगें ।
अपने रथ को सुपथ पर चलाते चलो ॥
कृष्ण गोविन्द ... ॥

काम करते रहो नाम जपते रहो ।
कृष्ण प्यारे का तुम ध्यान धरते रहो ।
पाप की वासनायें मिटाते चलो ॥
कृष्ण गोविन्द ... ॥

याद आवेंगे उनको कभी न कभी ।
देंगे दर्शन वे आके कभी न कभी ।
ऐसा विश्वास मन में जमाते चलो ॥
कृष्ण गोविन्द ... ॥

नाम जप-जप के भक्तों ने पाई गती ।
इसी से सभी ने है की विनती ॥
कृष्ण प्यारे को मन में रिझाते चलो ॥
कृष्ण गोविन्द ... ॥

नाचत सुधंग।
श्रीनन्दन वृन्दावन यमुना तट,
अमित मन-मथ-भय-विमर्दन
सघन कुञ्जन मञ्जु अभिनव जलद सुन्दर अंग।
नाचत सुधंग...

तन दीप्त दामिन दूरी कारी
मुख सुधाकर भान हारी,
कुटिल भृकुटि कुटाक्ष संयुक्त, चपल नैन कुरंग,
नाचत सुधंग...

संगीत उघटित मधुर पिकरव
गावत यश नारद अद्भुत।
चलत नुपूर किंकिणी कटि, बजत सुभग मृदंग,
नाचत सुधंग...

संग गोपियन के बीच थिरकत
भूषण मणि में किरण झलकत,
चलत कुंडल गंड मंडित, सुभग वसन सुरंग,
नाचत सुधंग...

बिचबिच बिराजित श्याम बिचबिच
तरुणि सोहत गौर छवि भानो,
नील कमल सुवर्ण केतिक, माल रचित अनंग,
नाचत सुधंग...

तत्तत्था दिग दिग दिमिकि दिमि
झांझ गिनि गिन गिन थेई तथेइता,
गगन पूरित शब्द छन छन, तत्त्था धिधि धूधू धंगः
नाचत सुधंग...

करताल और मंजीर बांसुरी
भूरज बीन रबाब ढ़क्का,
डंफ हुडुक उपंग झंझरी, खंझरी मुरचंग,
नाचत सुधंग...

सुर नर बिमानन चढ़े ब्रह्मा, रुद्र नारद थकित पुलकित,
'सूर' के जय जय जयति, जय जयति नवल त्रिभंग,
नाचत सुधंग...

जग में सुन्दर हैं दो नाम

जग में सुन्दर हैं दो नाम, चाहे कृष्ण कहो या राम ॥
एक हृदय में प्रेम बढ़ावे
एक पाप के ताप हटावे
दोनों सुख के सागर हैं, दोनों हैं पूरणकाम। चाहे...।
माखन व्रज में एक चुरावे
एक बेर शबरी घर खावे
प्रेम भाव से करे अनोखे दोनों के हों काम। चाहे...।
एक कृष्ण पापी संहारे
एक दुष्ट रावण को मारे
दोनों हैं बल के धाम। चाहे...।

कृष्ण कन्हाई

Come here my dear कृष्ण कन्हाई।
मैंने तेरे लिए हृदय अन्दर building बनाई ॥
For you my dear खाना बनाया,
Butter मिश्री, दूध, दही, खूब मंगाया,
So much delay, so much delay तुमने लगाई,
मैंने तेरे लिए हृदय अन्दर building बनाई ॥
Remembering every day आँसू बहाऊँ,
Come to house my dear, आरती दिखाऊँ,
Why far, why far रहे कन्हाई!
मैंने तेरे लिए हृदय अन्दर building बनाई ॥

श्याम निकस गये

मैं न लड़ी थी, श्याम निकस गये।
ना मैं बोली, ना मैं चाली,
तान दुपट्टा सोई पड़ी थी।
दस दरवाजे बन्द कर सोई,
न जानूँ कोई खिड़की खुली थी।
पाँच सखी मोरी संग की सहेली,
उनसे पूछो, कुछ न कही थी।
कहत कमाली कबीर की बेटी,
इस ब्याहे से कुँवारी भली थी।

माखन चोर

गोरस में छका जो रहता है,
गोरस का चुराना क्या जाने।
नादान कन्हैया मेरा है,
वो धूम मचाना क्या जाने ॥

गोपियाँ उलाहना लाई हो,
क्या जाने किसकी बहकाई हो।
तुम सी चतुर गुजरियों की,
दधि लूट के खाना क्या जाने।
गोरस में.......... ॥

जब घर ही में वो रहता है,
तब बरजोरी वो करता है।
बाली उमर है मोहन की,
झगड़े का मचाना क्या जाने?
गोरस में......... ॥



पूछते हो कन्हैया कहाँ हैं

पूछते हो कन्हैया कहाँ हैं, कहीं गउएँ चराते मिलेंगे ।
पूछते हो कन्हैया कहाँ हैं, कहीं रास रचाते मिलेंगे ।
या किसी वृक्ष के नीचे बैठे, अपनी वंशी बजाते मिलेंगे ॥

चाँदनी रात यमुना के तट पर, रास होंगे रचाते मुरारी ।
या कहीं रूप अपना बदलकर, राधिका को रिझाते मिलेंगे ।
राधिका को रिझाते मिलेंगे ॥

शायद द्रौपदी ने होगा बुलाया, खींचता होगा साड़ी दु:शासन ।
तब तो निश्चय ही कौरव सभा में, श्याम साड़ी बढ़ाते मिलेंगे ।
श्याम साड़ी बढ़ाते मिलेंगे ॥

उनको ढूँढो कुरुक्षेत्र में जा, भ्रम में अर्जुन पड़े हों न शायद ।
रोक कर उस धनञ्जय को मोहन, ज्ञान गीता सुनाते मिलेंगे ।
ज्ञान गीता सुनाते मिलेंगे ॥

उनको ढूँढोगे चंचल कहाँ तक, अपने मन को जरा तुम टटोलो ।
प्रेम में ही कन्हैया बसे हैं, प्रेम है तो बुलाते रहेंगे ।
प्रेम है तो बुलाते रहेंगे ॥



भगवान की बाल लीला

यारो, सुनो ये दधि के लुटैया का बालपन;
औ मधुपुरी नगर के बसैया का बालपन।
मोहन-सरूप नृत्य करैया का बालपन;
बन-बन के ग्वाल गौवें-चरैया का बालपन॥

ऐसा था बाँसुरी के बजैया का बालपन।
क्या-क्या कहूँ मैं कृष्ण कन्हैया का बालपन॥

जाहिर में सुत वो नन्द-जसोदा के आप थे;
वरना वो आपी माई थे और आपी बाप थे।
परदे में बालपन के ये उनके मिलाप थे,
जोती सरूप कहिये जिन्हें सो वो आप थे॥
ऐसा था...

उनको तो बालपन से न था काम कुछ ज़रा,
संसार की जो रीत थी, उसको रखा बज़ा।
मालिक थे वह तो आपी, उन्हें बालपन से क्या?
वाँ बालपन, जवानी, बुढ़ापा-सब एक था॥
ऐसा था...

बाले थे बिर्जराज, जो दुनिया में आ गये,
लीला के लाख रंग तमाशे दिखा गये।
इस बालपन के रूप में कितनों को भा गये,
एक यह भी लहर थी, जो जहाँ को जता गये॥
ऐसा था...

परदा न बालपन का वो करते अगर ज़रा,
क्या ताब थी जो कोई नजर भर के देखता।
झाड़ औ पहाड़ देते सभी अपना सर झुका,
पर कौन जानता था, जो कुछ उनका भेद था॥
ऐसा था...

अब घुटनियों का उनके मैं चलना बयाँ करूँ?
या, मीठी बातें मुँह से निकलना बयाँ करूँ?
या, बालकों में इस तरह पलना बयाँ करूँ?
या, गोदियों में उनका मचलना बयाँ करूँ?
ऐसा था...

पाटी पकड़ के जब चलने लगे मदनगुपाल,
धरती तमाम हो गई एक आन में निहाल।
बासुकि चरण छुअन को चले छोड़ के पताल,
आकाश पर भी धूम मची देख उनकी चाल॥
ऐसा था...

करने लगे ये धूम जो गिरधारी नन्दलाल,
इक आप और दूसरे साथ उनके ग्वाल-बाल।
माखन-दही चुराने लगे सबके देखभाल,
दी अपनी दूध-घी चोरी की घर-घर में धूम डाल॥
ऐसा था...

कोठे में होवे फिर तो उसी को ढँढोरना,
मटका हो तो उसी में भी जा मुख को बोरना।
उँचा हो तो भी कन्धे पै चढ़ के न छोड़ना,

पहुँचा न हाथ तो उसे मुरली से फोड़ना॥
ऐसा था...

गर चोरी करते आ गई, ग्वालिन कोई वहाँ,
और उसने आ पकड़ लिया तो उससे बोले वाँ।
"मैं तो तेरे दही की उड़ाता था मक्खियाँ,
खाता नहीं मैं उसको, निकाले था चींटियाँ॥"
ऐसा था...

गुस्से में कोई हाथ पकड़ती जो आन कर,
तो उसको वह स्वरूप दिखाते थे मुरलीधर।
जो आपी ला के धरती वो माखन कटोरी भर,
गुस्सा वो उसका आन में जाता वहाँ उतर॥
ऐसा था...

उनको तो देख ग्वालिनें जो जान पाती थीं,
घर में इसी बहाने से उनको बुलाती थीं।
जाहिर में उनके हाथ से वे गुल मचाती थीं,
परदे में सभी के कृष्ण की बलिहारी जाती थीं॥
ऐसा था...

कहती थीं दिल में "दूध जो अब हम छिपायेंगे,
श्रीकृष्ण इसी बहाने हमें मुँह दिखायेंगे।
और, जो हमारे घर में ये माखन न पायेंगे,
तो उनको क्या गरज है, वो काहे को आयेंगे॥"
ऐसा था...

सब मिल यशोदा पास यह कहती थीं आके "बीर -
अब तो तुम्हारा कान्हा हुआ है बड़ा सरीर।

देता है हमको गालियाँ, औ' फाड़ता है चीर,
छोड़े दही न दूध, न माखन, मही न खीर॥"
ऐसा था...

माता यशोदा उनकी बहुत करतीं मिन्तियाँ,
औ' कान्ह को डरातीं उठा मन की सीरियाँ।
तब कान्ह जी यशोदा से करते यही बयाँ-
"तुम सच न मानो मैया, ये सारी हैं झूठियाँ॥"
ऐसा था...

"माता, कभी ये मुझको पकड़ कर ले जाती हैं,
औ'गाने अपने साथ मुझे गवाती हैं।
सब नाचती हैं आप, मुझे भी नचाती हैं,
आपी तुम्हारे पास से फरियादी आती हैं॥"
ऐसा था...

"मैया, कभी ये मेरी छगुलिया छिपाती हैं,
जाता हूँ राह में तो मुझे छेड़े जाती हैं।
आपी मुझे रुठाती हैं, आपी मनाती हैं,
मारो इन्हें, ये मुझको बहुत-सा सताती हैं॥"
ऐसा था...

एक रोज़ मुँह में कान्ह ने माखन छिपा लिया,
पूछा यशोदा ने तो वहाँ मुँह बना दिया।
मुँह खोल तीन लोक का आलम दिखा दिया,
इक आन में दिखा दिया, औ' फिर भुला दिया॥
ऐसा था...

थे कान्ह जी तो नन्द-यशोदा के घर के माह,
मोहन नवल-किशोर की थी सबके दिल में चाह।
उनको जो देखता था, सो करता था 'वाह-वाह'
ऐसा तो बालपन न किसी का हुआ है आह॥
ऐसा था...

राधारमण के यारो, अजब आये गौर थे,
लड़कों में वो कहाँ हैं जो कुछ उनमें तौर थे।
आपी वो प्रभु नाथ थे, आपी वो दौर थे,
उनके तो बालपन ही में तेवर कुछ और थे॥
ऐसा था...

होता है यों तो बालपन हर तिफल का भला,
पर उनके बालपन में तो कुछ औरी भेद था।
उस भेद की भला जी किसी को खबर है क्या?
क्या जाने अपनी खेलने आए थे क्या कला॥
ऐसा था...

सब मिलि के यारो, कृष्ण मुरारी की बोलो जै!
गोविन्द कुञ्ज-छैल-बिहारी की बोलो जै!
दधिचोर गोपीनाथ बिहारी की बोलो जै!
तुम भी 'नजीर' कृष्ण मुरारी की बोलो जै!
ऐसा था...



आना सुन्दर श्याम

आना सुन्दर श्याम, हमारे हरि-कीर्तन में ॥
आप भी आना, राधा को लाना,
सुन्दर दर्शन कराना, हमारे हरि-कीर्तन में ॥
आप भी आना, गोपियन को लाना,
सुन्दर रास रचाना, हमारे हरि-कीर्तन में ॥
आप भी आना, गीता को लाना,
सुन्दर वचन सुनाना, हमारे हरि-कीर्तन में ॥

शरणागति का आनन्द

ठाकुर तुम शरनाई मैं आया।
उतर गयो मेरे मन का संशय,
जब ते दर्शन पाया ॥ ठाकुर ॥

अनबोलत मोरी बिरथा जानी,
अपना नाम जपाईया।
दु:ख काटे सुख सहज समाये,
अनन्द अनन्द गुण गाईया ॥ ठाकुर॥

बाँह पकड़ कढ़ि लीने अपनी,
गृह अन्ध-कूप ते लाइया।
कह 'नानक' गुरु बन्धन काटे,
बिछरत आन मिलाईया ॥ ठाकुर॥

नाचो गोपाला

गोपाला गोपाला नाचो गोपाला।
नाचो नाचो श्याम नन्दलाला॥
रुम-झुम, रुम-झुम, नाचो गोपाला।
नाचो गोपाला नाचो गोपाला
नाचो गोपाला नाचो गोपाला॥

धिमिक-धिमिक-धिम नाचो गोपाला।
नाचो गोपाला नाचो गोपाला ॥
ठुमुक-ठुमुक-ठुम, नाचो गोपाला।
नाचो गोपाला नाचो गोपाला॥

ता ता थेई, ता ता थेई, नाचो गोपाला।
नाचो गोपाला नाचो गोपाला॥
ना धिन धिन ना, ना धिन धिन ना, नाचो गोपाला।
नाचो गोपाला नाचो गोपाला॥

भजन बिना नर फीको

मोहि लागे वृन्दावन नीको ।
घर-घर तुलसी ठाकुर सेवा, दर्शन गोविन्द जी को ॥1॥
निरमल नीर बहत यमुना में, भोजन दूध दही को ।
रतन सिंहासन आप विराजें, मुकुट धर्‌यो तुलसी को ॥2॥
कुँजन-कुँजन फिरत राधिका, सबद सुनत मुरली को ।
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, भजन बिना नर फीको ॥3॥

हरि नाम ही सहारा है



गोविन्द मेरी यह प्रार्थना है, भूलूँ न मैं नाम कभी तुम्हारा ।
ये नाम तेरे दिन-रात गाऊँ, गोविन्द दामोदर माधवेति ।
गोविन्द दामोदर माधवेति, हे कृष्ण, हे यादव, हे सखेति ॥

देहान्तकाले तुम सामने हो, वंशी बजाते मन को लुभाते ।
गाते यही मैं तन नाथ! त्यागूँ, गोविन्द दामोदर माधवेति ।
गोविन्द दामोदर माधवेति, हे कृष्ण, हे यादव, हे सखेति ॥

प्यारे जरा तो मन में विचारो, क्या साथ लाये अरु ले चलोगे ।
जाये यही साथ सदा तुम्हारे, गोविन्द दामोदर माधवेति ।
गोविन्द दामोदर माधवेति, हे कृष्ण, हे यादव, हे सखेति ॥

नारी धरा-धाम सुपुत्र प्यारे, कलत्र सद्बान्धव मित्र सारे ।
कोई न साथी हरि को पुकारो, गोविन्द दामोदर माधवेति ।
गोविन्द दामोदर माधवेति, हे कृष्ण, हे यादव, हे सखेति ॥

'नाता भला क्या जग से हमारा? आये यहाँ क्यों कर क्या रहे हैं ?'
सोचो-विचारो हरि को पुकारो, गोविन्द दामोदर माधवेति ।
गोविन्द दामोदर माधवेति, हे कृष्ण, हे यादव, हे सखेति ॥

सच्चे सखा हैं हरि ही हमारे माता-पिता 'शील' सुबन्धु प्यारे ।
भूलो न भाई दिन-रात गाओ, गोविन्द दामोदर माधवेति ।
गोविन्द दामोदर माधवेति, हे कृष्ण, हे यादव, हे सखेति ॥

माता यशोदा हरि को जगावें, जागो, उठो मोहन नैन खोलो ।
द्वारे खड़े गोप बुला रहे हैं, गोविन्द दामोदर माधवेति ।
गोविन्द दामोदर माधवेति, हे कृष्ण, हे यादव, हे सखेति ॥

गोपी दही-छाछ बिलो रही हैं, मीठा करे शब्द बड़ा मथानी ।
गाती मथानी संग नारि सारी, गोविन्द दामोदर माधवेति ।
गोविन्द दामोदर माधवेति, हे कृष्ण, हे यादव, हे सखेति ॥

ले ले करों में निज पिंजरों को, कोई पढ़ाती शुक सारिका को ।
गाते यही हैं शुकसारिका भी, गोविन्द दामोदर माधवेति ।
गोविन्द दामोदर माधवेति, हे कृष्ण, हे यादव, हे सखेति ॥

बैठी लिये हैं दुहनी अनोखी, गोदुग्ध काढ़े अबला नवेली ।
गोदुग्धधारा संग गा रही है, गोविन्द दामोदर माधवेति ।
गोविन्द दामोदर माधवेति, हे कृष्ण, हे यादव, हे सखेति ॥

माला रही गूँथ सुवाम कोई, ले गोद बैठी अपने लला को ।
गा-गा सुनाती निज बालकों को, गोविन्द दामोदर माधवेति ।
गोविन्द दामोदर माधवेति, हे कृष्ण, हे यादव, हे सखेति ॥

धोये किसी ने मुख बालकों के, ले गोद में प्यार करे दुलारे ।
हे लाल, गाओ तुम संग मेरे, गोविन्द दामोदर माधवेति ।
गोविन्द दामोदर माधवेति, हे कृष्ण, हे यादव, हे सखेति ॥

कोई जगाती निज लाल को है, जागो दुलारे! टुक नैन खोलो ।
ये नाम बोलो हरि के सलोने, गोविन्द दामोदर माधवेति ।
गोविन्द दामोदर माधवेति, हे कृष्ण, हे यादव, हे सखेति ॥

कोई नवेली पति को जगावे, प्राणेश! जागो, अब नींद त्यागो ।
बेला यही है हरि गीत गाओ, गोविन्द दामोदर माधवेति ।
गोविन्द दामोदर माधवेति, हे कृष्ण, हे यादव, हे सखेति ॥

कासार के मध्य लला! विलोको, कैसे मनोहारि सरोज फूले ।
बैठे सभी में अलि गा रहे हैं, गोविन्द दामोदर माधवेति ।
गोविन्द दामोदर माधवेति, हे कृष्ण, हे यादव, हे सखेति ॥

देखो पंखेरू तरु-डालियों में, गाते सुहाते मधुर स्वरों में ।
पत्ते हथेली मृदु हैं बजाते, गोविन्द दामोदर माधवेति ।
गोविन्द दामोदर माधवेति, हे कृष्ण, हे यादव, हे सखेति ॥

आकाश के बीच विहंगमाला, आनन्दमग्ना हरि-नाम मत्ता ।
ऊँचे स्वरों से नभमध्य गातीं, गोविन्द दामोदर माधवेति ।
गोविन्द दामोदर माधवेति, हे कृष्ण, हे यादव, हे सखेति ॥

जागे पुजारी हरि मन्दिरों में, जाके जगाते हरि को सभी यों ।
हे शील सिन्धो! अब नेत्र खोलो, गोविन्द दामोदर माधवेति ।
गोविन्द दामोदर माधवेति, हे कृष्ण, हे यादव, हे सखेति ॥

धन्या सभी हैं ब्रज गोपिकाएँ, गातीं सदा जो हरि नाम प्यारा ।
गो दोहते भी यह गीत गातीं, गोविन्द दामोदर माधवेति ।
गोविन्द दामोदर माधवेति, हे कृष्ण, हे यादव, हे सखेति ॥

ले हाथ में मूसल ओखली में, हैं कूटती धान सुवाम कोई ।
है टूटता तार कभी नहीं ये, गोविन्द दामोदर माधवेति ।
गोविन्द दामोदर माधवेति, हे कृष्ण, हे यादव, हे सखेति ॥

डाली मथानी दधि में किसी ने, है ध्यान आया दधि-चोर का ही ।
गद्गद् हुआ कण्ठ पुकारती है, गोविन्द दामोदर माधवेति ।
गोविन्द दामोदर माधवेति, हे कृष्ण, हे यादव, हे सखेति ॥

है लीपती आँगन नारि कोई, गोविन्द आवें, मम गेह खेलें ।
ध्यानस्थ ये ही पद गा रही हैं, गोविन्द दामोदर माधवेति ।
गोविन्द दामोदर माधवेति, हे कृष्ण, हे यादव, हे सखेति ॥

सोया किसी का सुत पालने में, डोरी करों से जब खींचती है ।
गाती यही है हरि प्रेम-मत्ता, गोविन्द दामोदर माधवेति ।
गोविन्द दामोदर माधवेति, हे कृष्ण, हे यादव, हे सखेति ॥

रोया किसी का जब लाल प्यारा, हो प्रेम मग्ना उसने पुकारा ।
रोओ न गाओ तुम संग मेरे, गोविन्द दामोदर माधवेति ।
गोविन्द दामोदर माधवेति, हे कृष्ण, हे यादव, हे सखेति ॥

झारी उठाई कर में किसी ने, धोती रसोई मन में विचारे ।
गोपाल जी में हम गीत गावें, गोविन्द दामोदर माधवेति ।
गोविन्द दामोदर माधवेति, हे कृष्ण, हे यादव, हे सखेति ॥

कोई नवेली घर को बुहारे, गोपाल को ही मन में निहारे ।
आनन्द से 'शील' यही पुकारे, गोविन्द दामोदर माधवेति ।
गोविन्द दामोदर माधवेति, हे कृष्ण, हे यादव, हे सखेति ॥

देखो जहाँ भी यह दीखता है, सोचो जरा भी यह सूझता है ।
सर्वत्र ये ही स्वर गूँजता है, गोविन्द दामोदर माधवेति ।
गोविन्द दामोदर माधवेति, हे कृष्ण, हे यादव, हे सखेति ॥

राकेश तारागण भानु विद्युत, श्याम छटायें जल-बिन्दु सारे ।
आकाश में ये ध्वनि हैं लगाते, गोविन्द दामोदर माधवेति ।
गोविन्द दामोदर माधवेति, हे कृष्ण, हे यादव, हे सखेति ॥

पक्षी अनेकों नभमध्य जाते, कैसी सुधा की झड़ियाँ लगाते ।
मीठे स्वरों में हरि गीत गाते, गोविन्द दामोदर माधवेति ।
गोविन्द दामोदर माधवेति, हे कृष्ण, हे यादव, हे सखेति ॥

स्रोतस्विनी के कलनाद मध्ये, उत्तुंग-शैलाग्र-जल प्रपाते ।
हैं शब्द ये ही श्रुति मध्य आते, गोविन्द दामोदर माधवेति ।
गोविन्द दामोदर माधवेति, हे कृष्ण, हे यादव, हे सखेति ॥

ग्रामों घरों में वन निर्झरों में, अट्टालिकाओं कुटिया घरों में ।
हैं गूँजते नाम यही सभी में, गोविन्द दामोदर माधवेति ।
गोविन्द दामोदर माधवेति, हे कृष्ण, हे यादव, हे सखेति ॥

वारीश की प्रेममयी तरंगें, भावों की ये भाव भरी उमंगें ।
संकेत द्वारा दिन-रात गाती, गोविन्द दामोदर माधवेति ।
गोविन्द दामोदर माधवेति, हे कृष्ण, हे यादव, हे सखेति ॥

दीनों, अनाथों, दलितों, क्षुधार्तों, सर्वस्वहीनों रमणीविहीनों ।
के चित्त में भी यह याद आती, गोविन्द दामोदर माधवेति ।
गोविन्द दामोदर माधवेति, हे कृष्ण, हे यादव, हे सखेति ॥

विद्यानुरागी निज पुस्तकों में, अर्थानुरागी धनसञ्चयों में ।
ये ही निराली ध्वनि ढूँढते हैं, गोविन्द दामोदर माधवेति ।
गोविन्द दामोदर माधवेति, हे कृष्ण, हे यादव, हे सखेति ॥

देहात्मवादी, परमाणुवादी, साम्राज्यवादी अथ साम्यवादी ।
गाते यही हैं मन मार सारे, गोविन्द दामोदर माधवेति ।
गोविन्द दामोदर माधवेति, हे कृष्ण, हे यादव, हे सखेति ॥

सद्ग्रन्थ, षड्दर्शन, वेद चारों, इञ्जील देखो कुरआँ विचारो ।
पाओ सभी में यह मन्त्र प्यारे, गोविन्द दामोदर माधवेति ।
गोविन्द दामोदर माधवेति, हे कृष्ण, हे यादव, हे सखेति ॥

भाषा विभिन्ना परिपाटि भिन्ना, है भिन्न पूजा पर भाव दूजा ।
देखो कहीं ना, सब धर्म गाते, गोविन्द दामोदर माधवेति ।
गोविन्द दामोदर माधवेति, हे कृष्ण, हे यादव, हे सखेति ॥

योगी यति तापस साधु सारे, प्यारे बिना जो दुखिया बिचारे ।
एकान्त में 'शील' यही पुकारें, गोविन्द दामोदर माधवेति ।
गोविन्द दामोदर माधवेति, हे कृष्ण, हे यादव, हे सखेति ॥

गोविन्द सद्यो बहुमोद कारी, जो स्तोत्र गावें, पुरतो मुरारी ।
प्रेम्णा प्रभातेऽचल भक्ति पावे, गोविन्द दामोदर माधवेति ।
गोविन्द दामोदर माधवेति, हे कृष्ण, हे यादव, हे सखेति ॥

हो के सदा तुष्ट करे बसेरा, जो गान को है करता बसेरा ।
गेहेऽचलाके सहमोद देते, गोविन्द दामोदर माधवेति ।
गोविन्द दामोदर माधवेति, हे कृष्ण, हे यादव, हे सखेति ॥

कृष्ण नाम संकीर्तन



मुरलीधर श्याम

अधर-मधुर मुरलीधर श्याम।
मधुराधिपते राधेश्याम।

नाचो नन्दलाला

नित-नित सुन्दर मुखारवृन्द।
नाचो नन्दलाला नन्दलाला।
मीरा के प्रभु लाला, नन्दलाला।

आनन्दनन्द

आनन्दनन्द गोपाल आनन्दनन्द गोपाल।
आनन्दनन्द, आनन्दनन्द, आनन्दनन्द गोपाल।

गिरधारी नन्दलाल

गिरधारी नन्दलाल, भजो गोविन्द गोपाल।
भजो गोविन्द गोपाल, भजो गोविन्द गोपाल।

गोविन्द नारायणा

गोविन्द नारायणा, गोपाल नारायणा।
गोविन्द गोविन्द नारायणा।
हरि गोविन्द गोपाल नारायणा।

नारायण वासुदेव

श्री कृष्ण गोविन्द हरे मुरारे।
नारायण, हे नाथ, नारायण वासुदेव।
हे नाथ, नारायण वासुदेव।

भजो गिरिधर गोविन्द

भजो गिरिधर गोविन्द गोपाला।
भजो श्याम सुन्दर मुरली वाला।

गोविन्द बोलो हरि

गोविन्द बोलो हरि गोपाल बोलो।
राधा रमण हरि गोविन्द बोलो।

जय हरि नारायण

जय हरि नारायण गोविन्दम् ।
जय राम नारायण गोविन्दम् ।

मन राधे कृष्ण गाओ

मन, राधे कृष्ण राधे कृष्ण गाओ रे।
मन, गोविन्द गोपाल गाओ रे।

कृष्ण मुकुन्द केशव

कृष्ण मुकुन्द केशव मुरलीधर मोहना।
यादव कृष्णा माधव कृष्णा।
नारायण हरि नारायण।
नन्दकिशोर, नवनीत चोर।
नारायण हरि नारायण।

राधे बोल

राधे राधे राधे गोविन्द बोलो।
भजो गोविन्द गोविन्द गोविन्दा।
राधे बोल...राधे बोल...राधे बोल...राधे बोल ॥

गोपाल गोविन्द

राधे कृष्ण गोविन्द, गोपाल राधे माधव।
गोपाल राधे माधव, गोविन्द राधे माधव।

गिरिधर गोपाला

माधव मुरहर मधुर मनोहर, गिरधर गोपाला।
हे गिरधर गोपाला, हे गिरधर गोपाला।

कैसे सुन्दर श्याम

गोकुल की गलियों में उड़त गुलाल है।
माता यशोदा को हुए नन्दलाल हैं।
सिर पे चुटीला, काले घुंघर बाल हैं।
मस्तक पर तिलक लगे, कैसे सुन्दर श्याम हैं।

कृष्ण कन्हैया नन्दलाला

भज गोविन्द गोविन्द गोपाला।
श्री कृष्ण कन्हैया तुम नन्दलाला।

यमुना तीर बिहारी

यमुना तीर बिहारी, वृन्दावन संचारी।
गोवर्द्धन गिरधारी, गोपाल कृष्ण मुरारी।
जय जय राधे, जय नन्दनन्दन।
जय जय गोपी, जन-मन-रंजन।
दुष्ट निकंदन, श्याम श्याम।
जन-मन-रंजन, श्याम श्याम।
दशरथ-नन्दन, राम राम।
दशमुख-मर्दन, राम राम।
भव-भय-भंजन, राम राम।
जन-मन-रंजन, राम राम।

जय गोपाल

नन्द के लाल, जय गोपाल।
यशोदा के लाल, जय गोपाल।
राधा बिहारी, जय गोपाल।
राधा मनोहर, जय गोपाल।

जय राधे गोविन्द

जय राधे गोविन्द जय राधे गोपाला।
दीनानाथ गोविन्द जय अनाथनाथ गोपाला।

भज गोविन्दम्

भज राधे कृष्ण गोविन्दम् ।
भज राधे-राधे गोविन्दम् ॥
गोविन्दं गोविन्दं गोविन्दं भज गोविन्दम् ॥
भज गिरिवरधारी गोविन्दम्,
हृदय बिहारी गोविन्दम्,
भज मुरलीधारी गोविन्दम्,
गोविन्दं गोविन्दं गोविन्दं भज गोविन्दम् ॥
भज हरे मुरारे गोविन्दम्,
भज कृष्ण प्यारे गोविन्दम्,
भज नन्द दुलारे गोविन्दम्,
गोविन्दं गोविन्दं गोविन्दं भज गोविन्दम् ॥
भज नयन के तारे गोविन्दम्,
भज भव-दुख भंजन गोविन्दम्,
धेनु चरैया गोविन्दम्,
गोविन्दं गोविन्दं गोविन्दं भज गोविन्दम् ॥

नन्दलाला यदु नन्दलाला

नन्दलाला यदु नन्दलाला
वृन्दावन गोविन्दलाला
राधा लोला नन्दलाला
राधा माधव नन्दलाला

कृष्ण गोविन्द गोविन्द गोपाला

कृष्ण गोविन्द गोविन्द गोपाला।

गोविन्द बोलो

गोविन्द बोलो भैया, गोविन्द बोलो रे।
राधे राधे बोलो रे, गोविन्द बोलो रे।

बोल हरि

बोल हरि बोल हरि हरि हरि बोल।
केशव माधव गोविन्द बोल।

नटवर नागर नन्दा

नटवर नागर नन्दा भजो रे मन गोविन्दा।
तू ही नटवर तू ही नागर, तू ही है बाल मुकुन्दा।

श्री कृष्ण गोविन्द

श्री कृष्ण गोविन्द हरे मुरारे।
श्री कृष्ण गोविन्द श्याम नन्दलाल।

गोविन्द हरे गोपाल

गोविन्द हरे गोपाल गोविन्द हरे हरे।
गोपाल गोपाल, गोविन्द हरे हरे ॥

जय राधा माधव

जय राधा माधव जय कुंज बिहारी
जय गोपी जन वल्लभ गिरिवरधारी
यशोदा नन्द ब्रज-जन-रंजन
यमुना तीर वनचारी

सत्य नारायण गोविन्द माधव

सत्य नारायण गोविन्द माधव,
साईं नारायण गोविन्द केशव।
हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे।
हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे॥

गोविन्द गोपाल

गोविन्द गोपाल प्रभु गिरधारी
गोविन्द गोपाल हृदय विहारी
नन्द किशोर नवनीत चोर
हृदय विहारी बड़ा चितचोर

जय जय गोपाल

जय जय गोपाल राधे गोपाल सत्य गोपाल
हे नन्दलाला गोपी गोपाला गोकुलवाला
वृन्दावन सन्चाला वृन्दावन गोपाला

कृष्ण गोविन्द

कृष्ण गोविन्द गोविन्द गोपाला।
श्री कृष्ण कन्हैया तुम नन्दलाला।

नवनीत चोर

चितचोर यशोदा के लाल
नवनीत चोर गोपाल
गोपाल गोपाल गोवर्धन गिरिधर गोपाल

बाल मुकुन्दं

भज गोविन्दं, बाल मुकुन्दं।
परमानन्दं हरे हरे।
तुम हो कन्हैया, यशोदा के लाल।
चुराते हो माखन, ये अच्छी नहीं चाल।
माखन चुराना तो चोरों का काम है।
तुम हो कन्हैया तेरा नाम बदनाम है।

भजो निताई

भजो निताई गौर राधे श्याम।
जपो हरे कृष्ण हरे राम।

गोविन्द जय जय

गोविन्द जय जय, गोपाल जय जय।
राधा रमण हरि, गोविन्द जय जय।

देवकी नन्दन गोपाला

गोपाला गोपाला।
देवकी नन्दन गोपाला।

गोविन्द मेरो है

गोविन्द मेरो है, गोपाल मेरो है,
श्री बाँके बिहारी नन्दलाल मेरो है।
कान्हा मेरो है, कन्हैया मेरो है,
श्री बाँके बिहारी नन्दलाल मेरो है।

श्री राधे गोविन्द

श्री कृष्ण चैतन्य, प्रभु नित्यानन्दा।
हरे राम हरे कृष्ण, श्री राधे गोविन्दा।

हरे कृष्ण

हरे कृष्ण, हरे कृष्ण
कृष्ण कृष्ण हरे हरे

मेरे प्रभु राधेश्याम

आनन्द सागर मुरलीधर
मेरे प्रभु राधेश्याम प्रेम अवतार

मुकुन्द माधव

मुकुन्द माधव गोविन्द बोल
केशव माधव हरि हरि बोल
कृष्ण कृष्ण बोल हरि हरि बोल।

कदम्ब की डाली

कदम्ब की डाली झूले बनवारी
झूले राधारानी झुलावे बनवारी

भजो राधे कृष्ण

भजो राधे कृष्ण गोपाल कृष्ण
कृष्ण कृष्ण श्री राधे
श्री राधे श्याम राधे

कृष्ण नारायण

कृष्ण नारायण नारायण नारायण

कृष्ण नाम लड्डू

कृष्ण नाम लड्डू
गोपाल नाम घी
कन्हैया नाम मिश्री
तू घोल घोल पी।

यह वृन्दावन

राधे कुंज कृष्ण कुंज गिरि गोवर्धन
मधुर मधुर वंशी बाजे यह वृन्दावन
यह वृन्दावन कृष्ण यह वृन्दावन
मधुर मधुर वंशी बाजे यह वृन्दावन

तोरे मोरे मन

तोरे मोरे मन श्री राधिका रमण
निसदिन हरि गुण गाये जा
राधे राधे गाये जा
कृष्ण कृष्ण गाये जा

दीनानाथ गोविन्दा

दीनानाथ गोविन्द जय अनाथनाथ गोपाल
जय राधे गोविन्द जय राधे गोपाल
गोविन्द जय गोविन्द गोपाल जय गोपाल

हरि ॐ कन्हैया

हरि ॐ कन्हैया हरि ॐ
हरि ॐ कन्हैया हरि ॐ
बोलो हरि हरि ॐ कन्हैया ॐ
तुम हो ईश्वर, सत्य स्वरूप
तुम हो ईश्वर, प्रेम स्वरूप

कृष्ण कन्हैया रे

कृष्ण कन्हैया रे तेरा रंग काला क्यों
मैंने काली रात में जन्म लिया
इसीलिए मेरा रंग काला है, X 2
मैंने काली गाय का दूध पिया
इसीलिए मेरा रंग काला है, X 2
मैंने कालिय नाग का मर्दन किया
इसीलिए मेरा रंग काला है, X 2

छोटी छोटी गैया

छोटी छोटी गैया छोटे-छोटे ग्वाल
छोटो सो मेरो मदन गोपाल
आगे आगे गइया पीछे-पीछे ग्वाल
बीच में मेरो मदन गोपाल
कारी-कारी गइया गोरे-गोरे ग्वाल
श्याम वरण मेरो मदन गोपाल
घास खायो गइया दूध पिवे ग्वाल
माखन खायो मेरो मदन गोपाल

जय जय जय मनमोहन

जय जय जय मनमोहन
जय जय जय मधुसूदन
केशव माधव
माधव केशव
गोपाल गोपाल ना

मेरा गोपाला गोपाल

बड़ा प्यारा है वो सबसे न्यारा है वो
मेरा गोपाला गोपाल बोलो जय जय जय गोपाल
जब भी संकट आए जब भी मन घबराए
उनको दिल से कहो तो फिर आँच न आए
कृष्ण कृष्ण कहो राधे राधे गाओ
मीठी मुरली बजे हम सब साथ में गायें।

गोपाला गोपाला रे

गोपाला गोपाला रे, प्यारे नन्दलाला
प्यारे नन्दलाला गोपी गोपाला।

दया करो कृष्णा

दया करो कृष्णा कृपा करो कृष्णा
जय गोविन्द जय गोविन्द जय गोविन्द जय गोविन्द
जय गोपाल जय गोपाल जय गोपाल जय गोपाल
जय राधे कृष्ण जय राधे कृष्ण जय राधे कृष्ण
जय राधे कृष्ण

श्री कृष्ण भगवान

ॐ भगवान श्री भगवान
आनन्द भगवान श्री कृष्ण भगवान

ॐ नमो भगवते

ॐ नमो भगवते कृष्णदेवाय

राधा रानी

राधा रानी की जय
महारानी की जय
बोलो बरसाने वाली की जय जय जय
जय राधे राधे राधे

भज गोविन्दं भज गोपाल

गोपाल राधा कृष्णं भज गोविन्दं भज गोपाल।
भज गोविन्दं भज गोपाल केशव माधव दीनदयाल।
केशव माधव दीनदयाल, केशव माधव दीनदयाल।



निर्गुण पद



सब भार तुम्हारे हाथों में

जीवन का मैंने सौंप दिया, सब भार तुम्हारे हाथों में ।
उद्धार पतन अब मेरा है, सरकार तुम्हारे हाथों में ॥
हम तुमको कभी नहीं भजते, तुम हमको कभी नहीं तजते ।
अपकार हमारे हाथों में, उपकार तुम्हारे हाथों में ॥
हममें तुममें है भेद यही, हम नर हैं तुम नारायण हो ।
हम हैं संसार के हाथों में, संसार तुम्हारे हाथों में ॥
दृग बिन्दु बनाया करते हैं, इक सेतु विरह के सागर में ।
मझधार के हाथों में हम हैं, पतवार तुम्हारे हाथों में ॥

निर्गुण पद

मेरे गुरु ने बतायो, बेधन भेद बतायो ॥
पहली भिक्षा अन्न की लाना, गाँव नगरिया पास न जाना ।
हिन्दू तुर्की छोड़ के लाना, लाना झोली भर के ॥
दूजी भिक्षा मांस की लाना, जीव जन्तु के पास न जाना ।
जिन्दा मुर्दा छोड़ के लाना, लाना खप्पर भर के ॥
तीजी भिक्षा जल की लाना, कुआँ-बावड़ी पास न जाना ।
ताल-तलैया छोड़ के लाना, लाना तूँबी भर के ॥
चौथी भिक्षा लकड़ी लाना, रूख वृक्ष के पास न जाना ।
गीली-सूखी छोड़ के लाना, लाना गट्ठर भर के ॥
कहत कबीर सुनो भई साधो, ये पद तो निरवाना ।
इस पद का जो अर्थ करेगा, वो है चतुर सुजाना ॥

कैसे छुवैं प्रभु के चरनियाँ

कैसे छुवैं प्रभु के चरनियाँ, हे मैं तो जात के भिलनियाँ ॥
नाहीं कैलूँ गौवा दान
ना कैलूँ गंगा असनान
नाहीं कैलूँ देवी दरसनियाँ, हे मैं तो जात के भिलनियाँ ॥
नाहीं कैलूँ जोग जाप
नाहीं कैलूँ पूजा पाठ
नाहीं कैलूँ तीरथ असननियाँ, हे मैं तो जात के भिलनियाँ ॥

क्षमा याचना

नमामि नारायण दीन बन्धो,
हरे मुरारे करुणैक सिन्धो ।
हरो हमारे अघ नाथ सारे,
प्रसीद देवेश जगन्निवास ॥

न नाथ विद्या बल है न शक्ति, न बुद्धि न श्रद्धा न पादाब्जभक्ति ।
प्रभो सहारा चरणाम्बुजों का, प्रसीद देवेश जगन्निवास ॥

न तात-माता, न सुबन्धु भ्राता,
न पुत्र-त्राता अपना दिखाता ।
बिना तुम्हारे हरि कौन मेरा,
प्रसीद देवेश जगन्निवास ॥

तुम्हीं पिता, मातु, सुबन्धु प्यारे, तुम्हीं सुविद्या धन हो हमारे ।
सखे न रूठो, अब मान जाओ, प्रसीद देवेश जगन्निवास ॥

किये अनेक अघ हाय मैंने,
विचार मेरा मन काँपता है ।
क्षमा करो पाप समस्त मेरे,
प्रसीद देवेश जगन्निवास ॥



जो कुछ है सो तू ही है

तुमसे हमने दिल को लगाया, जो कुछ है सो तू ही है ।
एक तुझको अपना पाया, जो कुछ है सो तू ही है ॥

सबके मकां दिल का मकीं तू कौन-सा दिल है जिसमें नहीं तू ।
हर एक दिल में तू ही समाया, जो कुछ है सो तू ही है ॥

क्या मलया, क्या क्रिस्तान, क्या हिन्दू, क्या मुसलमान ।
जैसा चाहा सबको बनाया, जो कुछ है सो तू ही है ॥

काबा में क्या, देवल में क्या, तेरी परस्तिश होगी सब जाँ ।
सबने तुझको सिर है झुकाया, जो कुछ है सो तू ही है ॥

अर्श से लेकर फर्श जमीं तक, और जमीं से अर्श बरीं तक ।
जहाँ भी देखा तू ही नज़र आया, जो कुछ है सो तू ही है ॥

सोचा-समझा, देखा-भाला, तुझ जैसा कोई नज़र न आया ।
अब यह समझ में 'साधु' के आया, जो कुछ है सो तू ही है ॥

आनन्दानुभूति

आनन्दोऽहं आनन्दोऽहं आनन्दं ब्रह्मानन्दम् ।
ॐ सच्चिदानन्द ॐ सच्चिदानन्द ॐ सच्चिदानन्द ॐ सच्चिदानन्द।
ॐ नमः शिवाय ॐ नमः शिवाय ॐ नमः शिवाय ॐ नमः शिवाय।
ॐ नमो नारायणाय ॐ नमो नारायणाय ॐ नमो नारायणाय।
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।
ॐ आनन्दं ॐ आनन्दं ॐ आनन्दं आनन्दम् ।

प्रभु की सर्वव्यापकता

मोको कहाँ तू ढूँढे बन्दे, मैं तो तेरे पास में ॥

नहीं रहूँ मैं झगड़ि-बिगड़ी में, न छूरी गड़ास में ।
नहीं रहूँ मैं खाल रोम में, न हड्डी, न मांस में ॥

न देवल में, न मस्जिद में, न काशी कैलाश में ।
नहीं रहूँ मैं अवध द्वारिका, मेरी भेंट विश्वास में ॥

नहीं रहूँ मैं क्रिया करम में, न विराग संन्यास में ।
खोजोगे तो अभी मिलूँगा, पल भर की तलाश में ॥

शहर के बाहर डेरा हमारा, कुटिया मेरी सवास में ।
कहत 'कबीर' सुनो भई साधो, सब सन्तन के पास में ॥

निर्बल के प्राण

निर्बल के प्राण पुकार रहे, जगदीश हरे जगदीश हरे ।
श्वासों के स्वर झंकार रहे, जगदीश हरे जगदीश हरे ॥

आकाश-हिमालय सागर में, पृथ्वी-पाताल-चराचर में ।
यह मधुर बोल गुंजार रहे, जगदीश हरे जगदीश हरे ॥

जब दया-दृष्टि हो जाती है, सूखी खेती हरियाती है ।
श्वास पै जन उच्चार रहे, जगदीश हरे जगदीश हरे ॥

सुख-दुःख की चिन्ता कोई नहीं, भय है विश्वास न जाय कहीं ।
टूटे न, लगा यह तार रहे, जगदीश हरे जगदीश हरे ॥

मैं निरगुनियाँ

मैं निरगुनियाँ गुन नहीं जाना ।
एक धनी के हाथ बिकाना ॥
सोइ प्रभु पक्का मैं अति कच्चा ।
मैं झूठा, मेरा साहब सच्चा ॥
मैं ओछा, मेरा साहब पूरा ।
मैं कायर, मेरा साहब सूरा ॥
मैं मूरख, मेरा साहब ज्ञाता ।
मैं किरपिन मेरा साहब दाता ॥
'धरनी' मन मानो इक ठाऊँ ।
सो प्रभु जीवो, मैं मरि जाऊँ ॥

परिस्थितियों से समझौता

जग चार घड़ी का मेला है।
कुछ तू कह ले, कुछ मैं कह लूं ॥

आराम नहीं, ना चैन यहाँ, अरमान तड़पते रहते हैं,
दुःख-दर्द-मुसीबत के पौधे दिन-रात पनपते रहते हैं।
मोती जो लुढ़कते दुनियाँ में, कुछ तू ले ले, कुछ मैं ले लूं ॥

है तंग गली मन-जीवन की, उम्मीद कराहा करती है,
पलकों की दुनियाँ में बैठी, तकदीर रुलाया करती है।
स्व-लक्ष्य पर है तूफान उठा, कुछ तू सह ले, कुछ मैं सह लूं ॥

देहानुभूति

मत सोच समझ कल क्या होगा,
होगा तो वही होना होगा ॥

पल में परलय हो जायेगी,
और ठाट पड़े रह जायेंगे ॥1॥

ये रूप जवानी जायेगी,
और राख पड़ी रह जायेगी ॥2॥

इस चमक-दमक को देख अरे !
हँसता क्यों है, रोना होगा ॥3॥

तू मुठ्ठी बाँधे आया था,
और हाथ पसारे जायेगा ॥4॥

यह चार दिनों की चाँदनी है,
फिर तो अँधेरा होना है ॥5॥

जब मालूम है कि जाना है,
फिर क्यों मतवाला होता है ॥6॥

इस तू-तू, मैं-मैं में अपना,
क्यों अवसर व्यर्थ गँवाता है ॥7॥

कुछ ईश्वर चिन्तन कर लेना,
नहिं तो पछताना शेष ही है ॥8॥

जलती बत्ती बुझ जायेगी,
और ख्वाब सभी रह जायेंगे ॥9॥

इन महलों में क्या रखा है,
ये तो एक दिन गिर जायेंगे ॥10॥

यह जगत् तो एक सराय ही है,
फिर क्यों इसमें तू रमता है ॥ 11 ॥

ये कार खड़ी रह जायेगी,
और पैंट टंगे रह जायेंगे ॥ 12 ॥

चलती चक्की रुक जायेगी,
और पंखे भी रुक जायेंगे ॥ 13 ॥

जो मजा है उसको भजने में,
वह कहीं नहीं मिल पायेगा ॥ 14 ॥

सब कुछ करके तूने देखा,
क्या पार लगी तेरी नैया ॥ 15 ॥

अब यह भी करके देख जरा,
इसमें पाना ही पाना है ॥ 16 ॥

प्रार्थना

नान्या स्पृहा रघुपते हृदयेऽस्मदीये
सत्यं वदामि च भवानखिलान्तरात्मा ।
भक्तिं प्रयच्छ रघुपुंगव निर्भरां मे
कामादिदोषरहितं कुरु मानसं च ॥

शिवोऽहम्

शिवोऽहम् शिवोऽहम् शिवोऽहम् शिवोऽहम् ॥
वही आत्मा सच्चिदानन्द मैं हूँ ।
अमर आत्मा सच्चिदानन्द मैं हूँ ॥
शिवोऽहम् शिवोऽहम् शिवोऽहम् शिवोऽहम् ॥

अखिल विश्व का जो परम आत्मा है,
सभी प्राणियों का वही आत्मा है,
वही आत्मा....... ॥

अमर आत्मा है, मरणशील काया,
सभी प्राणियों के जो भीतर समाया,
वही आत्मा....... ॥

जिसे शस्त्र काटे, न अग्नि जलाये,
बुझाये न पानी, न मृत्यु मिटाये,
वही आत्मा....... ॥

है तारों-सितारों में आलोक जिसका,
है चंदा व सूरज में आभास जिसका,
वही आत्मा....... ॥

जो व्यापक है कण-कण में है वास जिसका,
नहीं तीनों कालों में हो नाश जिसका,
वही आत्मा....... ॥

अजर औ' अमर जिसको वेदों ने गाया,
यही ज्ञान अर्जुन को हरि ने सुनाया,
वही आत्मा....... ॥

उड़ रहा है हंस मेरा

उड़ रहा है हंस मेरा उड़ रहा।
युग-युगों से पंख खोले
खोजता अपना बसेरा।
उड़ रहा...

उड़ रहा है हंस मेरा उड़ रहा।
विश्व के सब ज्ञानियों से सीखकर विज्ञान भी,
देवताओं का हृदय में धारकर वरदान भी,
उड़ रहा बेचैन होकर तीन लोकों का चितेरा,
उड़ रहा...

उड़ रहा है हंस मेरा उड़ रहा।
उड़ रहा है और उड़ता जा रहा अविराम है,
देखता लीला जगत् की, भोग से उपराम है,
जा रहा है प्रिय-मिलन को
नील नभ में वह अकेला।
उड़ रहा है हंस मेरा उड़ रहा।



सोम सुधा बरसायें

सामगान सब जन मिल गायें,
सोम सुधा बरसायें।

गायें पावन वेद भारती,
जन-गण-मन हरषायें,
सोम सुधा बरसायें।

आओ आनन्द-घन प्रभु आओ,
मन-मन्दिर में आन समाओ।
तेरी वाणी, तेरे ही स्वर,
तेरी महिमा गायें,
सोम सुधा बरसायें।

आओ प्रियजन यज्ञ वेदी पर,
वेद ऋचायें गायें।
अपनी स्वर-धारायें प्रभु के
स्वर सागर मिलायें,
सोम सुधा बरसायें।



अलमस्त के उद्‌गार

मैं तो रमता जोगी राम, मेरा क्या दुनिया से काम॥

हाड़ मांस की बनी पुतलिया, ऊपर जड़ा है चाम।
देख-देख सब लोग रिझावें, मेरे ऊपर राम॥
मैं तो रमता जोगी राम...॥

माल खजाने बाग-बगीचे, सुन्दर महल मुकाम।
एक पलक में सब ही छूटे, संग चले न दाम॥
मैं तो रमता जोगी राम...॥

माता-पिता अरु बन्धु प्यारे, भाई बहन सुत धाम।
स्वारथ का सब खेल बना है, नहिं इसमें आराम॥
मैं तो रमता जोगी राम...॥

दिन-दिन, पल-पल, छिन-छिन काया, छीजत जात तमाम।
'ब्रह्मानन्द' भजन कर प्रभु का, तो पाये विश्राम॥
मैं तो रमता जोगी राम... ॥



घर का दीपक बार मनवा

घर का दीपक बार मनवा,
मन का दीपक बार।
ज्योति अन्दर की जो जागे,
मिटे जगत् अंधियार,
घर का दीपक बार...

ये तन ही है तेरा मंदिर।
बसें देवता तेरे अन्दर।
अर्पण कर उसके चरणों में
भक्ति-भाव उपहार,
घर का दीपक बार...

निर्मल कर ले मन का आँगन,
अपने में कर प्रभु का दर्शन।
आयेगा नीराजन करने
सूरज तेरे द्वार।
घर का दीपक...



माँझी

माँझी ओ माँझी, ओ माँझी
कितनी दूर किनारा रे माँझी दूर नगरिया जाना ।

काले काले बादल छाए
रह रह बिजली चमकाते
बड़ी तरंगे, लम्बा दरिया
दूर दिशा को जाना ऽ ऽ माँझी ओ माँझी....... ॥

काम क्रोध ने मुझको घेरा
लोभ मोह का बसा बसेरा
शान्त किनारा कहाँ है माँझी
कितनी दूर किनारा ऽ ऽ माँझी ओ माँझी....... ॥

मेरा कोई मीत नहीं है
गीत नहीं है रीत नहीं है
तू ही मालिक मेरा सब कुछ
अपने घर ले चलना ऽ ऽ माँझी ओ माँझी....... ॥

तपती हूँ मैं जलती हूँ मैं
अंगारों में चलती हूँ मैं
सुधा सिन्धु के केवट रे
दूर दिशा को जाना ऽ ऽ माँझी ओ माँझी....... ॥

युग युग तक मैं संग रहूँगी
हे शिव तेरा रूप बनूँगी

तू शिव है मैं उमा तुम्हारी
मैं तेरी तू मेरे रहना ऽ ऽ माँझी ओ....... ॥

हे शिव अपने हाथ बढ़ाओ
खींच मुझे तुम पास बिठाओ
पास बिठाओ, एक बना दो
मैं तुम में तुम मुझमें रहना ऽ ऽ माँझी....... ॥

माँझी जल्दी नाव चलाना
तूफान तिमिर के पार है जाना,
ले चल ले चल पार रे माँझी
प्रेम नगरिया जाना ऽ ऽ माँझी ओ माँझी....... ॥

तेरो नाम ॐकार

तेरो नाम ॐकार, तेरो नाम ॐकार,
तेरो नाम ॐकार, तेरो नाम ॐकार
तू सत् तू चित् आनन्द तू ही
तू अपार, तू अपार, निराकार निर्विकार
बिन्दु भी तू सिन्धु भी तू
तू अपार, तू अपार, निराकार निर्विकार
तू ही ब्रह्मा, तू ही विष्णु
निराकार निर्विकार, निराकार निर्विकार
तू ही गगन, तू ही पवन
अति आनन्द, अति आनन्द।

निर्गुण-रस

मुरली कौन बजावै हो, गगन-मण्डल के बीच ।

त्रिकुटी-संगम होय कर, गंग-जमुन के घाट ।
वा मुरली के शब्द से, सहज रचा बैराट ॥
मुरली कौन............... ॥

गंग-जमुन बिच मुरली बाजे, उत्तर दिशि धुनि होहि ।
वा मुरली की टेरहिं सुनि-सुनि, रहीं गोपिका मोहि ॥
मुरली कौन............... ॥

जहँ अधर डाली हँसा बैठा, चुगत मुक्ता हीर ।
आनन्द-चकवा केलि करत है, मानसरोवर तीर ॥
मुरली कौन............... ॥

शब्द-धुन मिरदंग बजत है, बारह मास बसन्त ।
अनहद् ध्यान अखण्ड आतुरवे, धारत सब ही सन्त ॥
मुरली कौन............... ॥

कान्हा-गोपी नृत्य करत हैं, चरन-वपुहि बिना ।
नैन बिना "दरियावा" देखे, आनन्द-रूप घना ॥
मुरली कौन............... ॥



तू ने रात गँवायी

तू ने रात गँवायी सोई के, दिवस गँवाया खाई के ।
हीरा जनम अमोल था, कौड़ी बदले जाय रे ॥
तू ने रात.................. ॥

सुमिरन लगन लगाई के, मुख से कुछ न बोल रे ।
बाहर के पट बन्द करके, अन्दर के पट खोल रे ॥
तू ने रात.................. ॥

माला फेरत जुग गया, गया न मन का फेर रे ।
कर का मनका छोड़ के, मन का मनका फेर रे ॥
तू ने रात.................. ॥

दु:ख में सुमिरन सब करें सुख में करे न कोय रे ।
जो सुख में सुमिरन करे तो दु:ख काहे को होय रे ॥
तू ने रात.................. ॥



रस गगन गुफा में अजर झरे

रस गगन गुफा में अजर झरे ।
बिन बाजा झंकार उठे, समुझि परै जन ध्यान धरे ॥
रस गगन................ ॥

बिना ताल जहँ कमल खिले, तेहि चढ़ि हंसा केली करे ॥
बिना चन्दा उजियारी दरसे, जहाँ तहाँ हंसा नजर परै ॥
रस गगन................ ॥

दसवें द्वारे ताली लागी, अलख पुरुषवा को ध्यान धरे ॥
काल कराल निकट नहीं आवे, काम, क्रोध, मद-लोभ जरै ॥
रस गगन................ ॥

जुगन-जुगन की तृषा बुझाती, करम-भरम अध व्याधि टरै ।
कहत कबीर सुनो भाई साधो, अमर होय कबहुँ न करै ॥
रस गगन................ ॥



हरि ॐ तत्सत्

हरि ॐ तत्सत्, हरि ॐ तत्सत् ॥
महामन्त्र है ये जपाकर जपाकर ॥
हिमाचल कुमारी ने शिवजी से पूछा,
कहो कौन-सा मन्त्र कल्याणकारी ?
उमा से कहा शिव ने तत्क्षण दयाकर,
महामन्त्र है एक कल्याणकारी,
हरि ॐ तत्सत्, हरि ॐ तत्सत् ॥
दुष्टों ने लोहे का खम्भा रचा था,
तो प्रह्लाद निर्दोष क्यों फिर बचा था ?
की थी विनय एक स्वर से जो उसने,
हरि ॐ तत्सत्, हरि ॐ तत्सत् ॥
लगी आग लंका में हलचल मची थी,
विभीषण की कुटिया फिर कैसे बची थी ?
लिखा था यही मन्त्र कुटिया पे उनकी,
हरि ॐ तत्सत्, हरि ॐ तत्सत् ॥
कहो नाथ शबरी के घर क्यों थे आये,
जो आये तो क्यों बेर जूठे थे खाये ।
अधर पर यही था हृदय में यही था,
हरि ॐ तत्सत्, हरि ॐ तत्सत् ॥
सभा में खड़ी द्रौपदी रो रही थी,
वो रो रो के आँसू से मुख धो रही थी ।
पुकारा था उसने यही नाम दिल से,
हरि ॐ तत्सत्, हरि ॐ तत्सत् ॥

सच्चा-सुख

मिलता है सच्चा सुख केवल,
भगवान् तुम्हारे चरणों में।
यह विनती है पल पल छिन छिन,
हो ध्यान तुम्हारे चरणों में।

या बैरी कुल संसार बने,
या मौत गले का हार बने।
या जीवन मुझ पर भार बने,
हो ध्यान तुम्हारे चरणों में।

संकट ने मुझको घेरा हो,
या चारों ओर अंधेरा हो।
पर मन नहिं डगमग मेरा हो,
हो ध्यान तुम्हारे चरणों में।

अग्नि में मुझको जलना हो,
कांटों पर मुझको चलना हो।
या देश त्याग ही करना हो,
हो ध्यान तुम्हारे चरणों में।

जिह्वा पर तेरा नाम रहे,
तू याद सुबह औ' शाम रहे।
तेरी याद में आठों याम रहे,
हो ध्यान तुम्हारे चरणों में।

कुछ लेना न देना

कुछ लेना न देना मगन रहना ।
पाँच तत्त्व का है यह पिंजरा,
जा में बोले मेरी मैना ॥
कुछ लेना... ॥

गहरी नदिया नाव पुरानी,
केवटिया से मिले रहना ।
कुछ लेना... ॥

कहत कबीर सुनो भई साधो,
गुरु के चरण में लिपट रहना ॥
कुछ लेना... ॥

अनाहत की धुन

सुनो, दिल को लगा प्यारे, धुनी अनहद की होती है ।
अमृत की धार तालु में सदा मुख को भिगोती है ॥
बजे हैं बाँसुरी, वीणा, शंख, घड़ियाल मिरदंगा ।
गरज बादल की है भारी कड़क कर मैल धोती है ॥
लगे मन नाद के अन्दर भूले तन की खबर सारी ।
हृदय के बीच में सुन्दर प्रकट वो दिव्य ज्योती है ॥
खुले जब दृष्टि के परदे नजर आवे भुवन सारे ।
वो 'ब्रह्मानन्द' की लहरी प्रेम-रस में भिगोती है ॥

है बहारे बाग दुनिया चन्द रोज

है बहारे बाग दुनिया चन्द रोज।
देख लो इसका तमाशा चन्द रोज।

ऐ मुसाफिर, कूच का सामान कर।
इस जहाँ में है बसेरा चन्द रोज।

पूछा लुकमां से 'जिया तू कितने रोज?'
दस्ते-हसरत मल के बोला 'चन्द रोज।'

बाद मदफन कब्र में बोली कजा-
अब यहाँ पै सोते रहना चन्द रोज।

फिर तुम कहाँ औ' मैं कहाँ ऐ दोस्तों!
साथ है मेरा-तुम्हारा चन्द रोज।

क्यों सताते हो दिले बेजुर्म को।
जालिमों, है यह जमाना चन्द रोज।

याद कर तू ऐ नजीर कब्रों के रोज।
जिन्दगी का है भरोसा चन्द रोज।



कृपा की न होती

कृपा की न होती जो आदत तुम्हारी ।
तो सूनी ही रहती अदालत तुम्हारी ॥

जो दीनों के दिल में जगह तुम न पाते ।
तो किस दिल में होती हिफाजत तुम्हारी ॥

गरीबों की दुनिया है आबाद तुमसे ।
गरीबों से है बादशाहत तुम्हारी ॥

न मालिक ही होते, न तुम होते हाकिम ।
न घर-घर में होती इबादत तुम्हारी ॥

तुम्हारे ही उल्फत के दृग 'बिन्दु' हैं ये ।
तुम्हें सौंपते हैं अमानत तुम्हारी ॥



विराट की वन्दना

आनन्दलोके मंगल-लोके विराजे सत्य सुन्दरम् ॥

महिमा तव उद्भाषित महागगन मध्ये;
विश्व जगत् मणि-भूषण वेष्ठित चरणे ॥

ग्रह तारक चन्द्र दिवाकर व्याकुल द्रुत वेगे;
करते पान, करते स्नान अक्षय किरणे ॥

धरणी पर झरे निर्झर मोहन मधु शोभा;
फूल पल्लव गीत गीत गंध सुन्दर वरणे ॥

बहे जीव रजनी-दिन चिर नूतन धारा;
करुणा तव नृत्य निरन्तर जन्मे-मरणे ॥

स्नेह प्रेम करुणा भक्ति से कोमल करो प्राण;
अतिसान्त्वना करो वर्षण सन्ताप हरणे ॥

जग में तव नित्य महोत्सव वन्दन करे विश्व;
श्री-सम्पद् भूमास्पद निर्भय शरणे ॥



इतना तो करना स्वामी

इतना तो करना स्वामी, जब प्राण तन से निकले ।
गोविन्द नाम लेकर फिर प्राण तन से निकले ॥
श्री गंगाजी का तट हो, यमुना का वंसीवट हो ।
मेरा सांवरा निकट हो जब प्राण तन से निकले ॥
श्री वृन्दावन का स्थल हो, मेरे मुख में तुलसीदल हो ।
विष्णु चरण का जल हो जब प्राण तन से निकले ॥
मेरा सांवरा खड़ा हो, बंसी का स्वर भरा हो ।
तिरछा चरण धरा हो जब प्राण तन से निकले ॥
सिर सोहता मुकुट हो, मुखड़े पे काली लट हो ।
यही ध्यान मेरे घट हो, जब प्राण तन से निकले ॥
जब कण्ठ प्राण आवे, कोई रोग न सतावे ।
यम दरस न दिखावे जब प्राण तन से निकले ॥
मेरा प्राण निकले तन से, तेरा नाम निकले मुख से ।
बच जाऊँ घोर दुःख से जब प्राण तन से निकले ॥
उस वक्त जल्दी आना, नहीं श्याम भूल जाना ।
बंसी की धुन सुनाना जब प्राण तन से निकले ॥



आत्म-समर्पण

ये गरब भरा मस्तक मेरा,
प्रभु चरण धूलि तक झुकने दे, झुकने दे।
अहंकार विकार भरे मन को,
निज नाम की माला जपने दे, जपने दे।
मैं मन के मैल को धो न सका,
ये जीवन तेरा हो न सका, हो न सका।
मैं ज्ञान की बातों में खोया,
और करमहीन पड़ कर सोया, पड़ कर सोया।
जब आँख खुली तो मन रोया,
जग सोये मुझ को जगने दे, जगने दे।
मैं प्रेमी हूँ, इतना न झुका,
गिर भी जो पड़ूँ तो उठने दे, उठने दे।
जैसा भी हूँ मैं खोटा या खरा,
निरदोष शरण में आ तो गया, आ तो गया।
एक बार ये कह दे खाली जा,
या प्रीत की रीत झलकने दे, झलकने दे।
ये गरब भरा...



साधक के स्वर

करो रक्षा विपत्ति से, न ऐसी प्रार्थना मेरी;
विपत से भय नहीं पाऊँ, प्रभु यह प्रार्थना मेरी ।

मिले दुःख ताप से शान्ति, न ऐसी प्रार्थना मेरी;
सभी दुःख से विजय पाऊँ, प्रभु यह प्रार्थना मेरी ।

मदद पर कोई आ जावे, न ऐसी प्रार्थना मेरी;
न टूटे आत्म बल डोरी, प्रभु यह प्रार्थना मेरी ।

उठा ले भार तू मेरा, न ऐसी प्रार्थना मेरी;
बनूँ समरथ उठाने में, प्रभु यह प्रार्थना मेरी ।

बढ़े धन धान्य परिवारा, न ऐसी प्रार्थना मेरी;
रहूँ समभावी संतोषी, प्रभु यह प्रार्थना मेरी ।

मिले मंत्र तंत्र की सिद्धि न ऐसी प्रार्थना मेरी;
खिले भक्ति से शक्ति वह, प्रभु यह प्रार्थना मेरी ।

सुखी दिन में भजुं तुझको दुःखी अंधेरी रात्रि में;
न आवे तुम प्रति शंका, प्रभु यह प्रार्थना मेरी ।

सूर्य को जलाञ्जलि

नमो विवस्वते ब्रह्मभास्वते विष्णुतेजसे।
जगत्सवित्रे शुचये सवित्रे कर्मसाद्रिणे॥

सहज समाधि

साधो सहज समाधि भली ।
गुरु-प्रताप जा दिन से जागी,
दिन-दिन अधिन चली ॥1॥

जहँ जहँ डोलौं सो परिकरमा, जो कुछ करौं सो सेवा ।
जब सोवौं तब करौं दण्डवत, पूजौं और न देवा ॥2॥

कहौं सो नाम, सुनौं सो सुमिरन, खाँव पियौं सो पूजा ।
गृह, उजाड़ एक सम लेखों, भाव मिटावौं दूजा ॥3॥

आँख न मूंदौं, कान न रूँधौं, तनिक कष्ट नहीं धारौं ।
खुले नैन पहिचानौं हँसि हँसि, सुन्दर रूप निहारौं ॥4॥

शब्द निरन्तर से मन लागा, मलिन वासना त्यागी ।
उठत बैठत कबहूँ न छूटै, ऐसी तारी लागी ॥5॥

कह 'कबीर' यह उनमुनि रहनि, सो परगट करि-गाई ।
दु:ख सुख से कोई परे परम पद, तेहि पद रहा समाई ॥6॥



लकड़ी का प्रताप

जीते लकड़ी मरते लकड़ी,
अजब तमाशा लकड़ी का ।
दुनियाँ वालों सच कहता हूँ,
ये जगवासा लकड़ी का ।

इस दुनिया में जब तू आया,
गड़ी मिली तुझे लकड़ी की ।
पाँच बरस की उमर भई तब,
खेलन लागा खिलौने से ।

बीस वर्ष की उमर भई,
तैयारी हुई ब्याहन की ।
बाँध सेहरा घोड़ी चाढ़ा,
तोरण सारा लकड़ी का ।

वर्ष भई जब चालीस की,
फिकर लगी बुढ़ापे की ।
साठ वर्ष की उमर भई,
तब हाथ सहारा लकड़ी का ।

अस्सी वर्ष की उमर भई,
तैयारी हुई अब चलने की ।
चार जना मिल तुझे उठाया,
विमान बनाया लकड़ी का ।

गंगा तट पर जाकर रखा,
स्नान कराया गंगा का ।

नीचे लकड़ी ऊपर लकड़ी,
चिता बनाया लकड़ी का ।
आधम-आध शरीर जला,
तब ठोसा मारा लकड़ी का ।
होली जैसे फूँक दिया,
फिर टुकड़ा डाला लकड़ी का ।
कहत कबीर सुनो भाई साधु,
खेल बना सब लकड़ी का ।
ढोलक लकड़ी, बाजा लकड़ी,
सितार बनाया लकड़ी का ।

भक्त की अभिलाषा

एक रोज तो करुणा कर स्वामी, दु:खियों के कष्ट मिटायेंगे ।
हम जीवन सफल बना लेंगे, जब श्याम हमारे आयेंगे ॥

आँखों में हमारी आशा हो, एक दर्शन की अभिलाषा हो ।
सोते जगते हँसते रोते, हम गीत तुम्हारे गायेंगे ॥

जब तक न सुनोगे बनवारी, दिन-रात रोयेंगे गिरधारी ।
आँसू ही हमारी दौलत है, हम आँसू ही बरसायेंगे ॥

सुख के दिन बीते बातों में, दु:ख के दिन लम्बी रातों में ।
बसते हैं तुम्हारी नजरों में, हम नजरों में मर जायेंगे ॥

ये सर है तुम्हारी चौखट है, तकदीर यहीं अजमायेंगे ।
एक रोज तो करुणा कर स्वामी, दु:खियों के कष्ट मिटायेंगे ॥

तू एक ही है

हर देश में तू हर वेश में तू ।
तेरे नाम अनेक तू एक ही है ।
तेरी रंगभूमि यह विश्व बना ।
सब खेल में मेल में तू ही तो है ॥1॥

सागर से उठा बादल बन के ।
बादल से फूटा जल बन के,
फिर नहर बना नदियाँ गहरी ।
तेरे भिन्न प्रकार तू एक ही है ॥2॥

चींटी से अणु-परमाणु बना,
सब जीव जगत का रूप लिया ।
कहीं पर्वत वृक्ष विशाल बना,
सौन्दर्य तेरा तू एक ही है ॥3॥

यह दिव्य दिखाया है जिसने ।
वह है ‘गुरुदेव’ की पूर्ण कृपा ।
तुकड़ीया नित नाम जपे तेरा ।
यह तू और मैं सब एक ही है ॥4॥



तोरा मन दर्पण कहलाए
भले बुरे सारे करमों को
देखे और दिखाए
तोरा मन दर्पण...

मन ही देवता, मन ही ईश्वर
मन से बड़ा न कोय
मन उजियारा जग फहरारा
जग उजियारा होय
इस उजले दर्पण पर
पानी धूल न जमने पाए
तोरा मन दर्पण...

सुख की कलियाँ दु:ख के काँटे
मन सबका आधार
मन से कोई भेद छुपे ना
मन में नैन हजार।
जग से चाहे भाग ले कोई
मन से भाग न पाए
तोरा मन दर्पण...

प्रेमी पतितों का दावा

गजब का दावा है पापियों का,
अजीब जिद पर मचल रहे हैं ।
उन्हीं से झगड़े पै तुल रहे हैं
कि जिनसे त्रयलोक पल रहे हैं ॥

ये कह रहे हैं कि श्यामसुन्दर,
अधम-उधारण बने कहाँ से ?
खिताब हम से ही नाथ लेकर
हमीं से फिर क्यों बदल रहे हैं ॥

गरीब अधमों के तुम हो प्रेमी,
ये बात मुद्दत से सुन रहे हैं ।
इसी भरोसे पै तुमसे भगवन्,
झगड़ रहे हैं, मचल रहे हैं ॥

हमारा प्रण है कि पाप कर लें,
तुम्हारा प्रण है कि पाप हर लें ।
तुम अपने वादे से टल रहे हो,
हम अपने वादे पै चल रहे हैं ॥

नहीं है आँखों में अश्रुधारा,
तुम्हारी उल्फत का ये असर है ।
पड़े थे पापों के दिल में छाले,
जो 'बिन्दु' बन कर निकल रहे हैं ॥

सुरत का नृत्य

हैं राग उन्हीं के रंग भरे,
औ' भाव उन्हीं के साँचे हैं ।
जो बेगत, बेसुर-ताल हुए,
बिन ताल-पखावज नाचे हैं ॥

क्या इल्म उन्होंने सीख लिए,
जो बिन लेखे को बाँचे हैं ।
और, बात नहीं मुँह से निकले,
बिन होठ हिलाये जाँचे हैं ॥

दिल उनके तार-सितारों के,
तन उनके तबल तमाचे हैं ।
मुँह चंग जबाँ दिल सारंगी,
पा घुँघरू हाथ कमाँचे हैं ॥

जब हाथ को धोया हाथों से,
जब हाथ लगे थिरकाने को ।
औ' पाँव को खींचा पाँवों से,
औ' पाँव लगे गत पाने को ॥

जब आँख उठाई हस्ती से,
जब नैन लगे मटकाने को ।
सब काछ कछे, सब नाच नचे,
उस रसिया-छैल रिझाने को ॥

था जिसकी खातिर नाच किया,
जब मूरत उसकी आय गई ।
कहीं आप कहाँ, कहीं नाच कहाँ,
और तान कहीं लहराय गई ॥

जब छैल-छबीले सुन्दर की,
छवि नैनों भीतर छाय गई ।
एक मुरछा-गति सी आय गई,
औ' जोत में जोत समाय गई ॥

जब होश बदन का दूर हुआ,
जब गत पर आ मृदंग बजी ।
तन भंग हुआ, दिल दंग हुआ,
सब आन गई, बे-आन सजी ॥

यह नाचा कौन 'नजीर' अब याँ,
और किसने देखा नाच अजी ।
जब बूँद मिली जा दरिया में,
इस तान का आखिर निकला जी ॥



भगवद्-भक्त के अनुभाव

हर आन हँसी, हर आन खुशी,
हर वक्त अमीरी है बाबा ।
जब आशिक मस्त फकीर हुए,
फिर क्या दिलगीरी है बाबा ॥

है आशिक और माशूक जहाँ,
वाँ शाह-वजीरी है बाबा ।
न रोना है, न धोना है,
न दर्दे असीरी है बाबा ॥

दिन-रात बहारें-चुहलें हैं,
औ' ऐश सफीरी है बाबा ।
जो आशिक हुए सो जाने हैं,
यह भेद फकीरी है बाबा ॥

कुछ जुल्म नहीं, कुछ जोर नहीं,
कुछ दाद नहीं, फरियाद नहीं ।
कुछ कैद नहीं, कुछ बन्द नहीं,
कुछ जब्र नहीं, आज़ाद नहीं ॥

शागिर्द नहीं, उस्ताद नहीं,
बीरान नहीं, आबाद नहीं ।
हैं जितनी बातें दुनियाँ की,
सब भूल गये, कुछ याद नहीं ॥

जिस सम्त नज़र कर देखे हैं,
उस दिलवर की फुलवारी है ।
कहीं सब्जी की हरियाली है,
कहीं फूलों की गुलक्यारी है ॥

दिन-रात मगन खुश बैठे हैं,
और आस उसी की भारी है ।
बस, आप ही वो दातारी है,
और आप ही वो भण्डारी है ॥

हम चाकर जिसके हुस्न के हैं,
वह दिलवर सबसे आला है ।
उसने ही हमको जी बख्शा,
उसने ही हमको पाला है ॥

दिल अपना भोला-भाला है,
और, इश्क बड़ा मतवाला है ।
क्या कहिये 'नजीर' आगे,
अब कौन समझने वाला है ॥



माधुर्य योग के अनुभाव

जब उमड़ा दरिया उल्फत का,
हर चार तरफ आबादी है ।
हर रात नई इक शादी है,
हर रोज मुबारकबादी है ॥

खुश खंदा है रंगी गुल का,
खुश शादी शाद मुरादी है ।
बन सूरज आप दरखशाँ है,
खुद जंगल है, खुद बादी है ॥

नित राहत है, नित फरहत है,
नित रंग नये, आजादी है ॥

हर रग-रेशे में, हर मू में,
अमृत भर-भर भरपूर हुआ ।
सब कुलफत दूर हुई अपनी,
मन शादी मर्ग से चूर हुआ ॥

हर वर्ग बधाइयाँ देता है,
हर जर्रह-जर्रह तूर हुआ ।
जो है, सो है अपना मजहर,
ख्वाह आबी नारी बादी है ॥

क्या ठण्डक है, क्या राहत है,
क्या शादी है, आजादी है ॥

रिमझिम-रिमझिम आँसू बरसे,
यह अब्र बहारें देता है ।

क्या खूब मज़े की बारिश में,
वह लुत्फ वस्ल का लेता है ॥
किश्ती मौजों में डूबे है,
बदमस्त उसे कब खेता है ।
यह गर्काबी है जी उठना,
मत झिझको, उफ् बरबादी है ॥
क्या ठण्डक है, क्या राहत है,
क्या शादी है, आजादी है ॥
मातम, रंजूरी, बीमारी,
गलती, कमजोरी, नादारी ।
ठोकर ऊँचा-नीचा मिहनत
जाती है इन पर जाँ वारी ॥
इन सबकी मददों के बाइस,
चश्मा मस्ती का है जारी ।
गुम शीर कि शीरीं तूफों में,
कोह और तेशा फरहादी है ॥
क्या ठण्डक है, क्या राहत है,
क्या शादी है, आजादी है ॥
इस मरने में क्या लज्जत है,
जिस मुँह को चाट लगे इसकी ।
थूके है शाहंशाही पर,
सब नेमत दौलत हो फीकी ॥
मय चाहिये दिल, सिर दे फूंको,
और, आग जलाओ भट्टी की ।

क्या सस्ता वादा बिकता है,
'ले लो' का शोर मुनादी है ॥
क्या ठण्डक है, क्या राहत है,
क्या शादी है, आजादी है ॥
इल्लत मालूल में मत डूबो,
सब कारण-कार्य तुम ही हो ।
तुम ही दफ्तर से खारिज हो,
और लेते चारज तुम ही हो ॥
तुम ही मसरूफ बने बैठे,
और होते हाजिर तुम ही हो ।
तू दावर है, तू बुकला है
तू पापी, तू फरियादी है ॥
नित राहत है, नित फरहत है,
नित रंग नये आजादी है ॥
दिन शब का झगड़ा ना देखा,
गो सूरज का चिट्ठा सिर है ।
जब खुलती दीद-ए-रौशन है,
हंगामा-ए-ख्वाब कहाँ फिर है ॥
आनन्द सरूर समन्दर है,
जिसका आगाज, न आखिर है ।
सब राम पसारा दुनियाँ का,
जादूगर की उस्तादी है ॥

मोरे अवगुण चित न धरो

प्रभु! मोरे अवगुण चित न धरो ।
सम-दरसी है नाम तिहारो, चाहे तो पार करो ॥
एक नदिया एक नार कहावत मैलो ही नीर भरो ।
जब मिलकर के एक बरन भई सुरसरि नाम पर्‌यो ॥
इक लोहा पूजा में राखत, इक घर बधिक पर्‌यो ।
पारस गुण अवगुण नहिं चितवत, कंचन करत खरो ॥
यह माया भ्रम जाल कहावत सूरदास सगरो ।
अबकी बेर मोहि पार उतारो, नहिं, प्रन जात टरो ॥

केहि विध कर समझाऊँ

मन! तोहे केहि विध कर समझाऊँ ॥
सोना होय तो सुहाग मँगाऊँ, बंकनाल रस लाऊँ ।
ग्यान शब्द की फूँक चलाऊँ, पानी कर पिघलाऊँ ॥1॥
घोड़ा होय तो लगाम लगाऊँ, ऊपर जीन कसाऊँ ।
होय सवार तेरे पर बैठूँ, चाबुक देके चलाऊँ ॥2॥
हाथी होय तो जंजीर गढ़ाऊँ, चारों पैर बँधाऊँ ।
होय महावत तेरे पर बैठूँ, अंकुश लेके चलाऊँ ॥3॥
लोहा होय तो एरण मँगाऊँ, ऊपर धुवन घुमाऊँ ।
धूवन की घनघोर मचाऊँ, जंतर तार खिंचाऊँ ॥4॥
ग्यानी होय तो ज्ञान सिखाऊँ, सत्य की राह चलाऊँ ।
कहत कबीर सुनो भाई साधू, अमरापुर पहुँचाऊँ ॥5॥

तुम चंदन हम पानी

प्रभुजी! तुम चंदन हम पानी ।
जाकी अँग अँग बास समानी ॥
प्रभुजी, तुम घन बन हम मोरा ।
जैसे चितवत चंद चकोरा ॥1॥
प्रभुजी, तुम दीपक, हम बाती ।
जाकी जोति बरै दिन राती ॥2॥
प्रभुजी, तुम मोती, हम धागा ।
जैसे सोनहिं मिलत सुहागा ॥3॥
प्रभुजी, तुम स्वामी हम दासा ।
ऐसी भक्ति करै रैदासा ॥4॥

ईश्वर आराधना

हे जग-त्राता, विश्व-विधाता,
हे सुख-शान्ति-निकेतन हे!
प्रेम के सिन्धो, दीन के बन्धो,
दु:ख-दारिद्र्य-विनाशन हे!
नित्य, अखंड, अनंत, अनादि,
पूरण ब्रह्म, सनातन हे! ॥1॥
जग-आश्रय, जग-पति, जग-वंदन,
अनुपम, अलख, निरंजन हे!
प्राणसखा, त्रिभुवन-प्रतिपालक,
जीवन के अवलंबन हे! ॥2॥

जाग मुसाफिर भोर भई

उठ जाग मुसाफिर भोर भई,
अब रैन गई क्यों सोवत है ।
जो सोवत है सो खोवत है,
जो जागत है सो पावत है ॥1॥

टुक नींद से अँखियाँ खोल जरा,
ओ गाफिल, रब से ध्यान लगा ।
यह प्रीत करन की रीत नहीं,
रब जागत है, तू सोवत है ॥2॥

अय जान, भुगत करनी अपनी,
ओ पापी, पाप से चैन कहाँ ?
जब पाप की गठरी सीस धरी,
फिर सीस पकड़ क्यों रोवत है? ॥3॥

जो काल करे सो आज कर ले,
जो आज करे सो अब कर ले ।
जब चिड़ियन खेती चुगि डाली,
फिर पछताये क्या होवत है?॥4॥



अगड़-बम्

अगड़-बम् अगड़-बम् बाजे डमरू।
नाचे सदाशिव जगत गुरु ॥
नाचे ब्रह्मा, नाचे विष्णु, नाचे महादेव।
खप्पर लेकर काली नाचे, हर हर महादेव ॥
नाचे ब्रह्मा, नाचे विष्णु, नाचे महादेव।
वीणा लेकर नारद नाचे, हर हर महादेव ॥
नाचे गोपी, नाचे ग्वाल, नाचे बलदेव।
कालिय-फन पर कान्हा नाचे, हर हर महादेव ॥
हम भी नाचें, तुम भी नाचो, नाचे संसार।
रास रचा कर रसिया नाचे ब्रजवासिन के साथ ॥

मेरे सच्चे दिल में लगन लगी

मेरे सच्चे दिल में लगन लगी, भगवान मिलेंगे कभी न कभी ।
सूरज में नहीं, चँदा में नहीं, तारों में मिलेंगे कभी न कभी ।
मंदिर में नहीं, मसजिद में नहीं, हृदय में मिलेंगे कभी न कभी ।
मेरे सच्चे दिल में लगन लगी, भगवान मिलेंगे कभी न कभी ।
आकाश नहीं, पाताल नहीं, धरती में मिलेंगे कभी न कभी ।
मेरे सच्चे दिल में लगन लगी, भगवान मिलेंगे कभी न कभी ।
फूलों में नहीं, पत्तियों में नहीं, कलियों में मिलेंगे कभी न कभी ।
मेरे सच्चे दिल में लगन लगी, भगवान मिलेंगे कभी न कभी ।

सुमिरन क्यों छोड़ा?

राम-नाम जपन क्यों छोड़ दिया ॥
हरि-नाम जपन क्यों छोड़ दिया ॥

क्रोध न छोड़ा, झूठ न छोड़ा,
सत्य वचन क्यों छोड़ दिया ।
झूठे जग में दिल ललचा कर,
असल वचन क्यों छोड़ दिया ॥

कौड़ी को तो खूब सँभाला,
लाल रतन क्यों छोड़ दिया ।
जिहि सुमिरन ते अति सुख पावे,
सो सुमिरन क्यों छोड़ दिया ॥

मृत्युंजय मानसिक पूजा

पदे पदे सर्वतमोनिकृन्तनं,
पदे पदे सर्वशुभप्रदायकम्।
प्रदक्षिणं भक्तियुतेन चेतसा,
करोमि मृत्युंजय रक्ष रक्ष माम् ॥

नमो गौरीशाय स्फटिकधवलांगाय च नमो
नमो लोकेशाय स्तुतविबुधलोकाय च नमः।
नमः श्री कण्ठाय क्षपितपुरदैत्याय च नमो
नमः फालाक्षाय स्मरमदविनाशाय च नमः ॥

निर्गुण का बंगला

बँगला खूब बना महाराज, जिसमें नारायण बोले ।
पाँच तत्त्व की ईंट थपाई, तीन गुणों का गारा,
राम नाम की करनी बनाई, साँवरिया चेजारा ।
इस बँगले में दस दरवाजे, बीच पवन का खंभा,
आवत-जावत कोऊ नहीं देखा, यही एक अचंभा ।
इस बँगले में बाग लगाया, और लगी फुलवारी,
कच्चा, पक्का कुछ न देखा, तोड़ लिया गिरधारी ।
एक अचम्भा हमने देखा, नारी पुरुष का जोड़ा,
कहत कबीर सुनो भई साधो, जिन जोड़ा तिन तोड़ा ।

सभी चले जायेंगे

मनुआ, जाओगे मैं जानी ॥
राजा जहिहैं राज करन तें, रूप करन तें रानी।
चाँद भी जइहैं, सूरज भी जइहैं, जइहैं हवा और पानी ॥
मनुष जन्म महा अति दुरलभ, तू समझो अभिमानी।
पाप-कपट की नदी बहत है, बूड़े ग्यानी ध्यानी ॥
जोगी जइहैं, जंगम जइहैं, जइहैं बड़े-बड़े ग्यानी।
कहत ‘कबीर’ एक सन्त ना जइहैं, जाके चित्त ठहरानी ॥

जय कृष्ण हरे

जय कृष्ण हरे गोपाल हरे ।
जय जय प्रभु दीनदयाल हरे ॥

रघुनन्दन कौशल चन्द हरे ।
जय राम हरे सुखधाम हरे ॥

जगदीश सच्चिदानन्द हरे ।
जय राम हरे भगवान हरे ॥

जय कृष्ण हरे गोविन्द हरे ।
जय जय गिरधर गोपाल हरे ॥

मन मोहन सुन्दर श्याम हरे ।
रघुनन्दन सीताराम हरे ॥

गोविन्द हरे श्री मुकुन्द हरे ।
चितचोर यशोदा लाल हरे ॥

श्री कुँवर कन्हैया श्याम हरे ।
निर्बल के बल सियाराम हरे ॥



वैराग्य-शिक्षा

अब छोड़ मुसाफिर, मायानगर,
अब प्रेम-नगर में जाना है ।
इस दुनियाँ का सफर बड़ा है,
जीवन का कौन ठिकाना है ॥
पुत्र-पिता कोई नहीं अपना,
माया रच कर झूठा सपना ।
चल मुसाफिर कदम-कदम पर
जग का दण्ड चुकाना है ॥
आलम सारा जा रहा है,
तेरा दिन भी आ रहा है ।
चल मुसाफिर, कदम-कदम पर
जग का दण्ड चुकाना है ॥

चेतन-समाधि के पूर्व-संकेत

बरसै बदरिया सावन की।
सावन की, मनभावन की ॥
सावन में उमग्यो मेरो मनवा, भनक सुनि हरि आवन की ।
उमड़-घुमड़ चहुँ दिसि से आयो, दामिनी दमके झर लावन की ।
नन्हीं-नन्हीं बूंदन मेहा बरसै, सीतल पवन सुहावन की ।
'मीरा' के प्रभु गिरधर नागर, आनन्द मंगल गावन की ।

जीवन-पथ

राही सोच समझ कर आना,
इस पथ में विश्राम नहीं है,
औ' कुछ भी आराम नहीं है,
जीवन भार उठा कर पंथी,
दूर बहुत है जाना।

ऊँचा नीचा पथ है तम है,
आँधी है तूफान अगम है,
कल्पना का संसार नहीं है,
कठिन बहुत बढ़ जाना।

फूलों सा कोमल जीवन है,
मधु सा मीठा भोलापन है,
इस जीवन के स्वप्न रंगीले,
कठिन उन्हें पा जाना।

जप नियम औ' संयम से,
ज्ञान की ज्योति जगाना,
धर्म कर्म का लिये सहारा,
लक्ष्य पर बढ़ते जाना।
राही सोच समझ कर आना।



दिव्यानुभव

सन्तो, अब चौथा पद पाया ॥
नाभि-कमल से सुरता चाली, सुलटा दम उलटाया ।
त्रिकुटि महल की खबर पड़ी जब, आसन अधर जमाया ॥
जाग्रत स्वप्न सुषुप्ती जानी, तुरिया तार मिलाया ।
अन्तर अनुभव ताली लागी, शून्य मण्डल में समाया ॥
चाली सुरता चढ़ी गगन पर, अनहद नाद बजाया ।
रुम-झुम, रुम-झुम हो रणकारा, वा में सुरत समाया ॥
देवी देव वहाँ कछु नाहीं, नहीं धूप नहिं छाया ।
'रामदास' चरणे भणे बहादुर शा निरखा अमर अजाया ॥



ऐ मालिक तेरे बन्दे हम

ऐ मालिक तेरे बन्दे हम,
ऐसे हो हमारे करम
नेकी पर चले और बदी से टले
ताकि हँसते हुए निकले दम

ये अंधेरा घना छा रहा,
तेरा इंसान घबरा रहा
हो रहा बेखबर कुछ न आता नजर
सुख का सूरज छुपा जा रहा
है तेरी रोशनी में जो दम,
तू अमावस को कर दे पूनम
नेकी पर चले और बदी से टले
ताकि हँसते हुए निकले दम
ऐ मालिक तेरे बन्दे हम

जब जुल्मों का हो सामना,
तब तू ही हमें थामना
वो बुराई करें, हम भलाई करें
नहीं बदले की हो कामना
बढ़ उठे प्यार का हर कदम,
और मिटे बैर का ये भरम
नेकी पर चले और बदी से टले
ताकि हँसते हुए निकले दम
ऐ मालिक तेरे बन्दे हम

बड़ा कमजोर है आदमी,
अभी लाखों हैं इसमें कमी
पर तू जो खड़ा है दयालु बड़ा
तेरी किरपा से धरती थमी
दिया तूने हमें जब जनम,
तू ही झेलेगा हम सब के गम
नेकी पर चले और बदी से टले
ताकि हँसते हुए निकले दम
ऐ मालिक तेरे बन्दे हम

फकीर की अलख

मन लागो मेरो यार फकीरी में ॥

जो सुख पाऊँ राम भजन में,
सो सुख नाहिं अमीरी में।
भला-बुरा सबका सुनि लीजै,
करि गुजरान गरीबी में ॥मन॥

प्रेम नगर में रहनि हमारी,
भली बनि आई सबूरी में।
हाथ में कुण्डी, बगल में सोंटा,
चारों दिसि जागीरी में ॥मन॥

आखिर यह तन खाक मिलेगा,
कहा फिरत मगरूरी में।
कहत 'कबीर' सुनो भाई साधो,
साहेब मिले सबूरी में ॥मन॥

उज्ज्वल हंस अनेक

उज्ज्वल हंस अनेक, विमल मानस के रंजन
जनमानस के परमहंस तेरा अभिनंदन

सत्य जहाँ सत्ता है, केवल अपनेपन की
चिर आनंद जहाँ मिलता है, सब कुछ निर्मल मन की
सत्यानन्द स्वरूप नहीं है जीवन रस है
मृत्यु मगन हो जिसमें पाती शाश्वत जीवन
जनमानस के परमहंस...

नीर छीर का न्याय विदित है नश्वर जग में
नीर छीर का सम्भव है तू कण्ठ गमन में
शिवानन्द की सत्य कल्पना, यह सुंदर भव
अर्पित है तेरे चरणों में शत् शत् वंदन
जनमानस के परमहंस...

पद का माया जाल, बिछा है मधुमय मन में
मुक्ति किसे देता है पद मादक जीवन में
महिमा है यह अद्भुत तेरी योग सृजन की,
मुक्ति दिया करता है पद का दृढ़तम वंदन
जनमानस के परमहंस...



आरती

ॐ जय जगदीश हरे, स्वामी जय जगदीश हरे
भक्त जनों के संकट, दास जनों के संकट, क्षण में दूर करे
॥ ॐ जय जगदीश हरे ॥

जो ध्यावे फल पावै दुःख बिनसे मन का, स्वामि दुःख बिनसे मन का
सुख सम्पत्ति घर आवै, सुख सम्पत्ति घर आवै, कष्ट मिटे तन का
॥ ॐ जय जगदीश हरे ॥

मात पिता तुम मेरे शरण गहूँ किसकी, स्वामि शरण गहूँ किसकी
तुम बिन और न दूजा, तुम बिन और न दूजा, आस करूँ किसकी
॥ ॐ जय जगदीश हरे ॥

तुम पूरन परमात्मा तुम अन्तर्यामी, स्वामि तुम अन्तर्यामी
पार ब्रह्म परमेश्वर, पार ब्रह्म परमेश्वर, तुम सबके स्वामी
॥ ॐ जय जगदीश हरे ॥

तुम करुणा के सागर, तुम पालनकर्ता, स्वामि तुम पालनकर्ता
मैं मूरख खलकामी, मैं सेवक तुम स्वामी, कृपा करो भर्त्ता
॥ ॐ जय जगदीश हरे ॥

तुम हो एक अगोचर, सबके प्राणपति, स्वामि सबके प्राणपति
किस विध मिलूं दयामय, किस विध मिलूं गुसाईं, तुमको मैं कुमति
॥ ॐ जय जगदीश हरे ॥

दीनबंधु दुखहर्ता, तुम ठाकुर मेरे, स्वामि तुम ठाकुर मेरे
अपने हाथ बढ़ाओ, अपनी शरण लगाओ, द्वार पड़ा तेरे
॥ ॐ जय जगदीश हरे ॥

विषय विकार मिटाओ, पाप हरो देवा, स्वामि पाप हरो देवा
श्रद्धा भक्ति बढ़ाओ, श्रद्धा भक्ति बढ़ाओ, संतन की सेवा
॥ ॐ जय जगदीश हरे ॥

ॐ जय जगदीश हरे, स्वामी जय जगदीश हरे
भक्त जनों के संकट, दास जनों के संकट, क्षण में दूर करे
॥ ॐ जय जगदीश हरे ॥



गायत्री



देवी गायत्री

गायत्री मन्त्र

ॐ भूर्भुवः सुवः तत्सवितुर्वरेण्यं।
भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् ॥

सिद्धि शान्ति और अमरत्व के लिए सूर्योदय के समय कम-से-कम 11 बार जपो।

गायत्री, गुरु अथवा प्रणव पर ध्यान करो।

शक्ति गायत्री

ॐ सर्वसम्मोहिन्यै विद्महे विश्वजनन्यै धीमहि
तन्नो शक्तिः प्रचोदयात् ॥

राधिका गायत्री

ॐ वृषभानुजायै विद्महे कृष्णप्रियायै धीमहि
तन्नो राधिका प्रचोदयात् ॥

लक्ष्मी गायत्री

ॐ महादेव्यै च विद्महे विष्णुप्रियायै च धीमहि
तन्नो लक्ष्मीः प्रचोदयात् ॥

दुर्गा गायत्री

ॐ कात्यायन्यै च विद्महे कन्याकुमार्यै च धीमहि
तन्नो दुर्गा प्रचोदयात् ॥

भगवती गायत्री

ॐ महाशूलिन्यै विद्महे महादुर्गायै धीमहि
तन्नो भगवति प्रचोदयात् ॥

सरस्वती गायत्री

ॐ वाग्देव्यै च विद्महे ब्रह्मपत्न्यै च धीमहि
तन्नो देवी प्रचोदयात् ॥

विद्या एवं प्रतिभा के लिए

काली गायत्री

ॐ कालीकायै च विद्महे श्मशान वासिन्यै धीमहि
तन्नो अघोरा प्रचोदयात् ॥

अन्नपूर्णा गायत्री

ॐ भगवत्यै च विद्महे महेश्वर्यै च धीमहि
तन्नो अन्नपूर्णा प्रचोदयात् ॥

कृष्ण गायत्री

कृष्ण गायत्री

ॐ देवकीनन्दनाय विद्महे वासुदेवाय धीमहि
तन्नो कृष्णः प्रचोदयात् ॥

गोपाल गायत्री

ॐ गोपालाय विद्महे गोपीजन वल्लभाय धीमहि
तन्नो गोपालः प्रचोदयात् ॥

शिव गायत्री

रुद्र गायत्री

ॐ तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि
तन्नो रुद्रः प्रचोदयात् ॥

दक्षिणामूर्ति गायत्री

ॐ दक्षिणामूर्तये विद्महे ध्यानस्थाय धीमहि
तन्नो धीशः प्रचोदयात् ॥

नन्दिकेश्वर गायत्री

ॐ तत्पुरुषाय विद्महे नन्दिकेश्वराय धीमहि
तन्नो वृषभः प्रचोदयात् ॥

गुरु गायत्री

गुरु गायत्री

ॐ गुरुदेवाय विद्महे परब्रह्मणे धीमहि
तन्नो गुरुः प्रचोदयात् ॥

शिवानन्द गायत्री

ॐ तत्पुरुषाय विद्महे शिवानन्दाय धीमहि
तन्नो ब्रह्म प्रचोदयात् ॥

सत्यानन्द गायत्री

ॐ परमहंसावधूताय विद्महे सत्यानन्दाय धीमहि
तन्नो गुरुः प्रचोदयात् ॥

राम गायत्री

राम गायत्री

ॐ दशरथात्मजाय विद्महे सीतावल्लभाय धीमहि
तन्नो रामः प्रचोदयात् ॥

हनुमत् गायत्री

ॐ आञ्जनेयाय विद्महे वायुपुत्राय धीमहि
तन्नो हनुमान् प्रचोदयात् ॥

विष्णु गायत्री

परशुराम गायत्री

ॐ जामदग्न्याय विद्महे महावीराय धीमहि
तन्नो परशुरामः प्रचोदयात् ॥

विष्णु गायत्री

ॐ नारायणाय विद्महे वासुदेवाय धीमहि
तन्नो विष्णुः प्रचोदयात् ॥

गरुड गायत्री

ॐ तत्पुरुषाय विद्महे सुवर्णपक्षाय धीमहि
तन्नो गरुडः प्रचोदयात् ॥

विविध गायत्री

अजपा गायत्री

ॐ हंस हंसाय विद्महे सोऽहं हंसाय धीमहि
तन्नो हंसः प्रचोदयात् ॥

भास्कर गायत्री

ॐ भास्कराय विद्महे सहस्त्रकिरणाय धीमहि
तन्नो भानुः प्रचोदयात् ॥

प्रात:कालीन सूर्य को देख कर 24 बार पाठ करें

हंस गायत्री 1

ॐ हंस हंसाय विद्महे परमहंसाय धीमहि
तन्नो हंसः प्रचोदयात् ॥

हंस गायत्री 2

ॐ परमहंसाय विद्महे महातत्त्वाय धीमहि
तन्नो हंसः प्रचोदयात् ॥

गणपति गायत्री 1

ॐ तत्पुरुषाय विद्महे हस्तिमुखाय धीमहि
तन्नो दन्तिः प्रचोदयात् ॥

गणपति गायत्री 2

ॐ एकदन्ताय विद्महे वक्रतुण्डाय धीमहि
तन्नो दन्तिः प्रचोदयात् ॥

स्कन्द गायत्री

ॐ षण्मुखाय विद्महे महासेनाय धीमहि
तन्नो स्कन्दः प्रचोदयात् ॥

सुब्रह्मण्य गायत्री

ॐ सुब्रह्मण्याय विद्महे महासेनाय धीमहि
तन्नो गुहः प्रचोदयात्।

तन्त्रिका गायत्री

ॐ परमेश्वराय विद्महे परमतत्त्वाय धीमहि
तन्नो ब्रह्मा प्रचोदयात् ॥

ब्रह्मा गायत्री

ॐ वेदात्मने विद्महे हिरण्यगर्भाय धीमहि
तन्नो ब्रह्मा प्रचोदयात् ॥

अगस्त्य गायत्री

ॐ श्री अगस्त्याय विद्महे कुम्भोद्भवाय धीमहि
तन्नो मुनिः प्रचोदयात्।

नवग्रह गायत्री

सूर्य गायत्री

ॐ अश्वध्वजाय विद्महे पद्महस्ताय धीमहि
तन्नो सूर्यः प्रचोदयात्।

चन्द्र गायत्री

ॐ निशाकराय विद्महे कलानाथाय धीमहि
तन्नो चन्द्रः प्रचोदयात्।

मंगल गायत्री

ॐ अंगारकाय विद्महे भूमिसुताय धीमहि
तन्नो कुजः प्रचोदयात्।

बुध गायत्री

ॐ बुधग्रहाय विद्महे इन्दुपुत्राय धीमहि
तन्नो बुधः प्रचोदयात्।

गुरु गायत्री

ॐ सुराचर्याय विद्महे सुरश्रेष्ठाय धीमहि
तन्नो गुरुः प्रचोदयात्।

शुक्र गायत्री

ॐ रजताभाय विद्महे भृगुसुताय धीमहि
तन्नो शुक्रः प्रचोदयात्।

शनि गायत्री

ॐ शनैश्चराय विद्महे सूर्यपुत्राय धीमहि
तन्नो मन्दः प्रचोदयात्।

राहु गायत्री

ॐ शूकदन्ताय विद्महे उग्ररूपाय धीमहि
तन्नो राहुः प्रचोदयात्।

केतु गायत्री

ॐ चित्रवर्णाय विद्महे सर्परूपाय धीमहि
तन्नो केतुः प्रचोदयात्।



गणेश नाम संकीर्तन



गं गणपतये नमो नमो

गं गणपतये नमो नमो
सिद्धि विनायक नमो नमो
अष्ट विनायक नमो नमो
गणपति बप्पा मोर्या

हे विनायक

हे विनायक, विघ्न नाशक
अनाथ रक्षक आनन्द दायक
उमा महेश्वर हे शिव नंदन ॥

गणेश शरणम्

गणेश शरणं, शरणं गणेश।
गणेश शरणं, शरणं गणेश।

जय गणेश पाहिमाम्

जय गणेश, जय गणेश, जय गणेश पाहिमाम्।
श्री गणेश, श्री गणेश, श्री गणेश रक्षमाम्।

जय गणेश देव

जय गणेश जय गणेश जय गणेश देव
माता तेरी पार्वती पिता महादेव

देवी



आराधना

वेदभूमि भारत से मैया वैदिक विश्व बना दो,
जहाँ हो मैया वहीं से जल्दी वैदिक विश्व बना दो।

मैहर वाली शारदा मैया, कलकत्ते की काली मैया
विन्ध्याचल की विन्ध्यवासिनी, वृन्दावन की कात्यायनी
हरिद्वार की मनसा देवी, पुष्कर की गायत्री देवी
पूर्ण गिरि की कालिका मैया, कर्नाटक की दुर्गा मैया
जहाँ हो मैया वहीं से जल्दी वैदिक विश्व बना दो ॥ 1 ॥

मिथिला की मिथिलेश्वरी देवी, पटना की पटनेश्वरी देवी
वैष्णव देवी जम्मू वाली, त्रिपुर सुन्दरी त्रिपुरा वाली

चित्रकूट की मैया शिवानी, श्रीनगर की छीर भवानी
मुम्बई वाली मुम्बा देवी, पार्वती देवी पूनावाली
जहाँ हो मैया वहीं से जल्दी वैदिक विश्व बना दो ॥2॥

अल्मोड़ा की मैया कौशकी, शिमलावाली मैया कोटकी
आबू वाली देवी अर्बुदा, महुआ वाली मैया चन्द्रिका
मदुरै वाली माँ मीनाक्षी, काशी की माँ विशालाक्षी
काठमाण्डू की गुह्येश्वरी माँ, कांगड़ा वाली पिठेश्वरी माँ
जहाँ हो मैया वहीं से जल्दी वैदिक विश्व बना दो ॥3॥

कोल्हापुर की महिष-मर्दनी, जालंधर की त्रिपुरमालिनी
जूनागढ़ की देवी अम्बा, श्रीशैलम की खम्भारम्भा
ओमकारेश्वर सप्त मात्रिका, पण्ढरपुर की देवी राधिका
वर्धमान की देवी बगुला, विमला देवी पुरी की मैया
जहाँ हो मैया वहीं से जल्दी वैदिक विश्व बना दो ॥4॥

कांगड़ा वाली चिंतपूर्णि, द्वारका वाली मैया रुक्मिणी
नैनीताल की नैना देवी, ज्वालामुखी की ज्वाला देवी
तिरुपति की पद्मावती मैया, बंगलादेश की भगवति मैया
जनकपुर की सीता मैया, चुनार वाली दुर्गा मैया
जहाँ हो मैया वहीं से जल्दी वैदिक विश्व बना दो ॥5॥

दिल्ली की योगमाया कालिका, मथुरावाली देवी राधिका
त्यागराज की ललिता देवी, मद्रास की कुलका देवी
सहस्त्र चण्डी मानकपुर की, गौरीशंकर जबलपुर की

गोवा की शांता दुर्गा माँ, मुदगलपुर की चण्डी मैया
गौहाटी की माँ कामाख्या, मैसूर वाली माँ चामुण्डा
जहाँ हो मैया वहीं से जल्दी वैदिक विश्व बना दो ॥6॥

पंचवटी की भद्रकाली माँ, दलहाटी की महाकाली माँ
करोली वाली केला देवी, विरजाक्षेत्र की विरजा देवी
पाकिस्तान की मैया कोटरी, हिंगलाज की हिंगुला देवी
इन्दरगढ़ की इन्द्राणी माँ, आसनसोल की कपालिनी माँ
साकम्बरी सहारनपुर की, देवी नन्दिनी नन्दीपुर की
जहाँ हो मैया वहीं से जल्दी वैदिक विश्व बना दो ॥7॥

वेदभूमि भारत से मैया, वैदिक विश्व बना दो।
पीताम्बरा पराशक्ति माँ वैदिक विश्व बना दो।
जहाँ हो मैया वहीं से जल्दी वैदिक विश्व बना दो।



मां मायात् सर्वतो रक्ष श्रियं वर्द्धय सर्वदा ।
शरीरारोग्यं मे देहि देव देव नमोस्तुते ॥

उत्तम स्वास्थ्य प्राप्त करने के लिए इस मन्त्र का जप करें।

सर्वबाधाप्रशमनं त्रैलोक्यस्याखिलेश्वरी।
एवमेव त्वयाकार्यमस्मद् वैरिविनाशनम् ॥

कठिनाइयों और बाधाओं को दूर करने के लिए इस मन्त्र का जप करें।

देवी नाम संकीर्तन



जय जग जननी

जगतोद्धारिणी माता दुर्गा, जगतोद्धारिणी माँ।
जय जग जननी, जय जग जननी, जय जग जननी माँ।
जय गौरी देवी, रणचण्डी देवी।
जय शिव-रमणा जागो माँ।

जागो शंकरी माँ

जागो माँ, जागो माँ, शंकरी माँ।
शंकरी माँ, अभयंकरी माँ।
देवी दया करो शिवरमणा।

कुण्डलिनी जागो माँ

कुण्डलिनी कुण्डलिनी कुण्डलिनी जागो माँ।
कुण्डलिनी कुण्डलिनी कुण्डलिनी जागो माँ।

जगदम्बिके जय जय जग जननी माँ

जगदम्बिके जय जय जग जननी माँ।
जय माँ, जय माँ, जय माँ माँ जय माँ।
हे माँ, हे माँ, हे माँ माँ, हे माँ।

ज्योतिर्मयी उतरो

मेरे मन के अन्ध तमस् में, ज्योतिर्मयी उतरो,
आनन्दमयी चैतन्यमयी सत्यमयी परमेश्वरी

माता भवानी

माता भवानी शिवरंजनी।
सौभाग्यदायिनी वरदायिनी।

भज मन माँ

भज मन माँ माँ माँ माँ, भज मन माँ माँ माँ माँ
आनन्दमयी माँ, करुणामयी माँ
आनन्दरूपा माँ, करुणारूपा माँ

महाकाली की जय

महाकाली की जय, महादुर्गे की जय ।
बोलो अम्बे भवानी की जय जय जय॥

दुर्गे देवी नमोऽस्तुते

दुर्गे देवी नमोऽस्तुते, चण्डी देवी नमोऽस्तुते।
भद्रकाली नमोऽस्तुते, नारायणी नमोऽस्तुते।

जय जय माँ

जय जय माँ, जय काली माँ।
जय जय माँ, जय दुर्गा माँ।
जय जय माँ, जय अम्बे माँ।
जय जय माँ, जय सरस्वती माँ।

जय दुर्गा लक्ष्मी सरस्वती

जय दुर्गा लक्ष्मी सरस्वती
जय जय अम्बे भवानी, माँ जय जगदम्बे भवानी।
जय जगदम्बे भवानी माँ, जय जगदम्बे भवानी।

दुर्गतिनाशिनी दुर्गा

दुर्गतिनाशिनी दुर्गा जय जय
काल विनाशिनी काली जय जय
उमा रमा ब्रह्माणी जय जय
राधा सीता रुक्मिणि जय जय

ऐं ह्रीं क्लीं नमः

ॐ नमो चण्डी माता, चण्डी माता नमः
ऐं ह्रीं क्लीं नमः

जय अम्बे

जय अम्बे, जय अम्बे, जय अम्बे माँ
जगदम्बे, जगदम्बे, जगदम्बे माँ
जय अम्बे माँ, जय जगदम्बे माँ

कभी दुर्गा

कभी दुर्गा बन के, कभी काली बन के
चले आना मैया जी चले आना
कभी दुर्गा रूप में आना
कभी काली रूप में आना
कभी लक्ष्मी रूप में आना
कभी चण्डी रूप में आना
कभी अम्बे रूप में आना

त्रिपुर सुन्दरी

त्रिपुर सुन्दरी कामाक्षी माँ, त्रिपुर सुन्दरी जगजननी
हे माँ, हे माँ, हे माँ, हे माँ

जय अम्बे जगदम्बे

जय अम्बे, जगदम्बे
माता भवानी जय अम्बे

नमो नारायण दुर्गे माँ

नमो नारायण दुर्गे माँ, नमो नारायण
नमो नारायण दुर्गे माँ, नारायणी माँ

ॐ शक्ति

ॐ शक्ति ॐ, ॐ शक्ति ॐ, ॐ शक्ति ॐ, ॐ शक्ति ॐ
ॐ ब्रह्मा ॐ, ॐ विष्णु ॐ, ॐ शिव ॐ, ॐ शक्ति ॐ
ॐ इच्छा ॐ, ॐ क्रिया ॐ, ॐ ज्ञान ॐ, ॐ शक्ति ॐ

हर हर गंगे माँ

हर हर गंगे माँ की जय हो,
माता अन्नपूर्णा जय हो।

जय अम्बे जगदम्बे

जय अम्बे जगदम्बे माता भवानी जय अम्बे।

चण्डी देवी अम्बे देवी

चण्डी देवी अम्बे देवी

जय जगदम्बे सीता राधे

जय जगदम्बे सीता राधे,
काली दुर्गे नमो नमः

जय जगदम्बे माँ दुर्गा

जय जगदम्बे माँ दुर्गा
जय जगदम्बे माँ दुर्गा,
जय जगदम्बे माँ काली
जय जगदम्बे माँ चण्डी
जय जगदम्बे माँ गौरी
ॐ नारायणी ॐ नारायणी ॐ
ॐ नारायणी ॐ नारायणी ॐ

काली कपालिनी

काली कपालिनी नारायणी
त्रिशूल धारिणी कात्यायनी।



वैष्णवी देवी

वैष्णवी देवी जगद्धारिणी,
शेरे वाली मैया त्रिशूलधारिणी।

सीता पति राम

सीता पति राम, राधा पति कृष्ण
श्री रुक्मिणी सत्यभामा पति,
वाणी ब्रह्मा, गौरी पति शम्भु,
लक्ष्मी पति श्रीमन् नारायण।

इच्छाशक्ति स्वरूपिणी माँ

इच्छाशक्ति स्वरूपिणी माँ,
ज्ञानशक्ति स्वरूपिणी माँ,
क्रियाशक्ति स्वरूपिणी माँ,
सत्यानन्द स्वरूपिणी माँ।

जय माँ जय माँ गौरी

जय माँ जय माँ गौरी, जय माँ जय माँ अम्बे,
जय माँ जय माँ गौरी, जय माँ जय माँ अम्बे।
जय माँ मैं तेरा हूँ, मुझको न भुला देना,
इस जग में अकेला हूँ, मुझको अपना लेना।

जगदम्बे जगदम्बे

जगदम्बे जगदम्बे जय माता जय जगदम्बे,
जय माता जय जगदम्बे, जय माता जय जगदम्बे।

त्रिपुरा सुन्दरी

त्रिपुरा सुन्दरी कामाक्षी माँ, त्रिपुरा सुन्दरी जगजननी,
हे माँ हे माँ हे माँ हे माँ।

आनन्दमयी चैतन्यमयी

आनन्दमयी चैतन्यमयी
सत्यमयी परमेश्वरी।





Song of Eighteen 'Ities'

Serenity, Regularity, Absence of Vanity,
Sincerity, Simplicity, Veracity, Equanimity,
Fixity, Non-Irritability, Adaptability, Humility,
Tenacity, Integrity, Nobility, Magnanimity,
Charity, Generosity, Purity.
Practise daily these eighteen 'ities',
You will soon attain immortality.

Brahman is the only real entity.
Listen! Go and sow some good now and generosity,
You will abide in eternity and infinity.
You will behold unity in diversity.
You cannot attain this in the university,
Madras University, Harvard University,
Or even Oxford University,
But you can attain this in the Vedic University.

Rama is Omnipresent

In earth, water, fire, air and ether is Rama,
In the heart, mind, prana and senses is Rama,
In the breath, blood, nerves and brain is Rama,
In sentiment, thought, word and action is Rama.
Within is Rama, without is Rama, in front is Rama,
Above is Rama, below is Rama, behind is Rama,
To the right is Rama, to the left is Rama,
Everywhere is Rama.
Rama, Rama, Rama, Rama, Rama, Rama.
Refuge, solace, path, lord, witness is Rama.
Father, mother, friend, relative, guru is Rama.
Support, source, centre, ideal, God is Rama.
Creator, preserver, destroyer, redeemer is Rama.
Rama, Rama, Rama, Rama, Rama, Rama.
The ultimate goal of one and all is Rama.
Attainable through shraddha,
Prema and worship is Rama.
Accessible to devotion and surrender is Rama.
Approachable by prayer, japa and kirtana is Rama.
Hosanna to Rama, glory to Rama, victory to Rama.
Adorations to Rama, salutations to Rama,
Prostrations to Rama.
Rama, Rama, Rama, Rama, Rama, Rama.
Om Sri Rama, Jaya Rama, Jaya Jaya Rama

Spiritual Ethics

Be bold, be pure, be wise, be virtuous.
Be honest, be sincere, be truthful.
Be patient, be tolerant, be obedient.
Be simple, be humble, be noble, be gentle.
Adapt, adjust, accommodate.
Bear insult, bear injury; highest sadhana.

Song of Sadhana

Purification, concentration, reflection, meditation,
Illumination, identification, absorption, salvation.
These are the eight steps in spiritual sadhana.
Self-sacrifice, self-surrender, self-denial.
These are the different ways to slay this egoism.
Selflessness, self-restraint, self-purification,
Self-analysis, self-introspection, self-examination,
All these will lead to self-realization.

Song of Immortality

Within you is the hidden God.
Within you is the immortal soul.
Kill this little 'I'.Die to live.
Lead the Divine Life.
Within you is the fountain of joy.
Rest peacefully in your own atman.
Drink the nectar of immortality.



Eat a little, drink a little,
talk a little, sleep a little.
Mix a little, move a little,
serve a little, rest a little.
Work a little, rest a little,
study a little, worship a little.
Do Asana a little, Pranayama a little,
reflect a little, meditate a little.
Do Japa a little, do Kirtan a little,
write Mantra a little, have Satsang a little.

Song of Avidity

Just as the Song of Eighteen Ities indicates a set of positive virtues that a sadhaka should cultivate, this Song of Avidity indicates a set of evil traits that one should guard against. It also shows the method of overcoming them.

Avidity, cupidity, stupidity,
Audacity, turbidity, instability,
Angularity, eccentricity, irritability.
These are the obstacles to samadhi.
These are the impurities of the mind.
Avidity is covetousness or greed.
Cupidity is lust or passion.
Stupidity is delusion or infatuation.
Audacity is arrogance or impertinence.
Turbidity is confusion of mind.
Instability is wandering of the mind.
Angularity is a form of vanity.
Eccentricity is slavery to whims and fancies.
Irritability is anger in all its forms.
Remove these impurities through the opposite virtues.
Avidity through practice of generosity;
Cupidity through practice of purity;
Instability through trataka and pranayama,
upasana and japa;
Angularity through practice of humility;
Eccentricity through practice of right conduct;
Irritability through practice of patience, forbearance;
You will enter into samadhi and attain kaivalya.



Obstacles to God-Realization

Duality, Multiplicity, Plurality,
Individuality, Slave Mentality, Dadabadality,
Gadabadality, Dambhacharity, Asmitaity,
Ahamkarity, Raga-Dveshity, Abhiniveshity,
Sensuality, Sensitivity, Sentimentality,
Inactivity, Rotundity,
Are the obstacles to attain Divinity,
Universality, Cosmicality, Real Unity.
Debility, Morbidity, Anemiaty,
Pyorrheaty, Blood-Pressurity,
Myopiaty, Presbyopiaty, Amblyopiaty
Nyctalopiaty, Hemianopiaty, Doctor's
Mahafoolishnessity, Maha-Andhakaraity,
Are the obstacles to attain Divinity.
Atrocity, Curiosity, Cruelty,
Anxiety, Partiality, Timidity,
Duality, Individuality, Immorality,
Debility, Morbidity, Sensuality,
These are the obstacles to attain Divinity.

Song of Instructions

Mohan bansivale tumko lakho pranama,
Tumko lakho pranama.
Shankara bholebhale tumko lakho pranama,
Tumko lakho pranama pyare karodo pranama.
Bhajo Radhe Govinda,
Radhe Govinda bhajo Radhe Govinda.
Radhe Govinda bhajo Sita Govinda.
Hari bolo, bolo bhai Radhe Govinda,
Hare Krishna Hare Rama Radhe Govinda.

Get up at 4 a.m. brahmamuhurta,
Get up at 4 a.m. japo Rama Rama,
Get up at 4 a.m. do Brahma vichara,
Get up at 4 a.m. enquire 'Who am I?'
Get up at 4 a.m. practise yogabhyasa.

Observe mauna daily for two hours,
Fast on Ekadashi, take milk and fruits,
Study daily one chapter of Gita,
Do regular charity, one-tenth income,
Rely on your own self, give up servants,
Do kirtana at night, have satsanga,
Speak the truth at all costs, preserve virya,
Satyam vada, dharmam chara,
Observe brahmacharya,
Ahimsa paramo dharma, love one and all,
Never hurt others' feelings, be kind to all,
Control anger by kshama, develop vishva prema.
Keep daily spiritual diary, you will evolve quickly.

Sacred OM

OM is the word of power.
OM is the sacred monosyllable.
OM is the mystic letter.
OM is the immortal akshara.
In OM the world rests.
In OM we live and move.
In OM we go to rest.
In OM we find our quest.
Sing OM rhythmically.
Chant OM loudly.
Roar OM forcibly.
Repeat OM mentally.
Draw strength from OM.
Get inspiration from OM.
Derive energy from OM.
Imbibe bliss from OM.
Glory to OM.
Victory to OM.
Hosanna to OM.
Hail to OM.
Adorations to OM.
Salutations to OM.
Prostrations to OM.
Devotion to OM.
Rely on OM.
Reflect on OM.
Concentrate on OM.
Meditate on OM.
OM! OM!! OM!!!



Song of Govinda

Rama Krishna Govinda, Radhe Krishna Govinda
Gopala Krishna Govinda, Krishna Krishna Govinda
Govinda Govinda Govinda Govinda

Banke Bihari Govinda, Brija Bihari Govinda
Shyama Bihari Govinda, Kunja Bihari Govinda
Krishna Murari Govinda, Audha Bihari Govinda
Govinda Govinda Govinda Govinda

Gam Ganapathi Govinda, Bam Mahadeva Govinda
Klim Krishna Govinda, Ram Rama Govinda
Ham Hanumantha Govinda

Aim Sarasvati Govinda, Dum Durga Govinda
Krim Kali Govinda, Hrim Maya Govinda
Srim Lakshmi Govinda

God is truth Govinda, God is bliss Govinda
God is peace Govinda, God is knowledge Govinda
God is love Govinda, God is light Govinda

Control the mind Govinda
Control the senses Govinda
Realize the Self Govinda
This is the teaching Govinda
Of all the Vedas Govinda
Of all the scriptures Govinda
Goal of life Govinda
Is God-realization Govinda
Never forget this Govinda

Attain this Govinda
Through faith, devotion Govinda
Through meditation Govinda
Through shravan manan Govinda
Through tapas yoga Govinda

Through mantra writing Govinda
Through likhit japa Govinda
Through selfless service Govinda
Through viveka vichara Govinda

Practise ahimsa Govinda, speak the truth Govinda
Control anger Govinda, through kshama Govinda
Observe brahmacharya Govinda
Observe mauna Govinda

Serve, love, give Govinda, serve the poor Govinda
Serve the parents Govinda, nurse the sick Govinda
Do charity Govinda

Be kind, be pure Govinda, be good, do good Govinda
Be cheerful Govinda, be courageous Govinda
Be tolerant Govinda

Be patient Govinda, be forgiving Govinda,
Be liberal Govinda, be moderate Govinda,
In eating, drinking Govinda, in sexual matters Govinda

In everything Govinda, be regular Govinda
Get up at 4 a.m. Govinda, brahmamuhurta Govinda
Enquire, Who am I? Govinda, do vichara Govinda
This is very important Govinda
To attain success Govinda

There is no pleasure Govinda
In the sensual objects Govinda
This is the world Govinda
Of pain and death Govinda
Do not be duped Govinda
By the mind and senses Govinda

Do not study Govinda, Herbert Spencer Govinda
This will make you Govinda, an atheist Govinda
This will produce Govinda, wrong samskaras Govinda

Study daily Govinda, Gita Upanishads Govinda
This will help you Govinda, to realize the Self Govinda

Do not smoke Govinda, do not drink Govinda
Do not speak Govinda, vulgar words Govinda

Do not take bribes Govinda
This is bad Govinda
This is very bad Govinda
This is very very bad Govinda
It will spoil Govinda
Your name, character Govinda
This will throw you Govinda
In a lower birth Govinda
To have a bad name Govinda
Is more than death Govinda
It is very shameful Govinda
It is disgraceful Govinda
It is ignominious Govinda
It is heaven-closing Govinda

Time is precious Govinda
Do not waste a second Govinda, utilize it Govinda
In japa, kirtana Govinda, in meditation Govinda



Eka Sloki Ramayana

1. Bala Kanda
   Rama Rama Jaya Raja Rama,
   Rama Rama Jaya Sita Rama.
   Sri Rama was born Jaya Jaya Rama,
   To destroy Ravana Sita Rama.
   Rama killed Jaya Jaya Rama,
   Thadaka Subahu Sita Rama.
   He delivered Ahalya Jaya Jaya Rama,
   And married Sita Sita Rama.

2. Ayodhya Kanda
   Kaikeyi Devi Jaya Jaya Rama,
   Got boons from Dasharatha Sita Rama.

3. Aranya Kanda
   Rama went Jaya Jaya Rama,
   To Dandaka forest Sita Rama.
   Ravana came there Jaya Jaya Rama,
   And took away Sita Sita Rama.

4. Kishkindha Kanda
   Rama killed Vali Jaya Jaya Rama,
   And enthroned Sugriva Sita Rama.

5. Sundara Kanda
   Hanuman crossed the sea Jaya Jaya Rama,
   And gave the ring to Sita Sita Rama
   He burnt Lanka Jaya Jaya Rama,
   And gave Rama chudamani Sita Rama.

6. Yuddha Kanda
   Rama killed Jaya Jaya Rama,
   Kumbhakarna, Ravana Sita Rama.
   Lakshmana killed Jaya Jaya Rama,
   The mighty Meghanada Sita Rama.
   Rama installed Jaya Jaya Rama,

Vibhishana on the throne Sita Rama.
Then all came back Jaya Jaya Rama,
To Ayodhya city Sita Rama.
Vasishtha installed Jaya Jaya Rama,
Rama on the throne Sita Rama.
He who reads Jaya Jaya Rama,
Eka Sloki Ramayana Sita Rama,
will attain son, wealth Jaya Jaya Rama,
Bhakti, mukti Sita Rama.
Rama Rama Jaya Raja Rama,
Rama Rama Jaya Sita Rama.

Eka Sloki Bhagavata

Shyama Shyama Jaya Jaya Jaya Shyama,
Shyama Shyama Jaya Radheshyama.
Krishna Krishna Jaya Jaya Jaya Shyama,
Krishna Krishna Jaya Radheshyama.
Om Namo Bhagavate Jaya Jaya Shyama,
Vasudevaya Radheshyama.
Lord Krishna was born Jaya Jaya Shyama,
To destroy Kamsa Radhehyama.
And all other asuras Jaya Jaya Shyama,
And to establish dharma Radheshyama.
He killed Putana Jaya Jaya Shyama,
And Trinavarta, Vatsasura Radheshyama.
He killed also Jaya Jaya Shyama,
Bakasura, Aghasura Radheshyama.
He lifted Govardhana Jaya Jaya Shyama,
And did rasa lila Radheshyama.
He killed Sankachuda Jaya Jaya Shyama,
And Kesi and Vyoma Radheshyama.
He made Kubja straight Jaya Jaya Shyama,
And killed Kuvalayapida Radheshyama.
He wrestled with Chanura Jaya Jaya Shyama,

And killed him too Radheshyama.
He killed Panchajana Jaya Jaya Shyama,
And blessed Muchukunda Radheshyama.
He married Rukmini Jaya Jaya Shyama,
And Satyabhama, too Radheshyama.
He married also Jaya Jaya Shyama,
Kalindi, Mitravinda Radheshyama.
He killed Narakasura Jaya Jaya Shyama,
He cut Bana's arms Radheshyama.
He killed Sisupala Jaya Jaya Shyama,
Salva and Dantavakra Radheshyama.
He blessed Kuchela Jaya Jaya Shyama,
His old friend Radheshyama.
He instructed Uddhava Jaya Jaya Shyama,
In bhakti and gyana Radheshyama.
He said to Uddhava Jaya Jaya Shyama,
This world is unreal Radheshyama.
Look on all beings Jaya Jaya Shyama,
With equal vision Radheshyama.
Abandon egoism Jaya Jaya Shyama,
Control mind and senses Radheshyama.
Discharge your duties Jaya Jaya Shyama,
Meditate on the truth Radheshyama.
Fix your mind on Me Jaya Jaya Shyama,
Practise yama-niyama Radheshyama.
Serve the preceptor Jaya Jaya Shyama,
Free yourself from pride Radheshyama.
Don't find fault with any Jaya Jaya Shyama,
Be indifferent to wealth Radheshyama.
Feel that atma Jaya Jaya Shyama,
Is separate from the body Radheshyama.
See Brahman everywhere Jaya Jaya Shyama,
Remove dehadhyasa Radheshyama.
Do good to all Jaya Jaya Shyama,

Take refuge in Me Radheshyama.
Do japa, kirtana Jaya Jaya Shyama,
Meditate on Me Radheshyama.
He who studies Jaya Jaya Shyama,
Eka Sloki Bhagavata Radheshyama.
Will attain peace, wealth Jaya Jaya Shyama,
Bhakti, mukti Radheshyama.
Om Namo Bhagavate Jaya Jaya Shyama,
Vasudevaya Radheshyama.
Shyama Shyama Jaya Jaya Jaya Shyama,
Shyama Shyama Jaya Radheshyama.
Krishna Krishna Jaya Jaya Jaya Shyama,
Krishna Krishna Jaya Radheshyama.

Song of Karma Yogin

Hari ke premi Hari Hari bolo,
Avo pyare milkara gaao.
Hari charanan me dhyana lagaao,
Dukha me sukha me Hari Hari bolo.
Abhimana tyago seva karo,
Narayana Narayana Narayana Narayana.
Give up brahmin sannyasa abhimana,
Give up male-female sex abhimana.
Give up doctor, judge abhimana,
Give up rajah, zamindar abhimana.
Relinquish pandit, scientist abhimana,
Crush this professor, engineer abhimana,
Kill this collector, tahasildar abhimana,
Kill this vairagya, seva abhimana,
Kill this tyagi, kartrutva abhimana,
Narayana Narayana...
Remember always Hari Hari Hari,
Sing always Sita-Rama, Radheshyama,
See good in every face,

Share what you have with others.
Develop nicely adaptability,
Serve always with Narayana bhava.
Scrutinize always your inner motives
Work without egoism,
Cultivate the nimitta-bhava,
Give up expectation of fruits.
Surrender always fruits to the Lord,
Have equal vision and balanced mind.
Selfless work will purify your heart,
Then you will get knowledge of the Self.
Narayana Narayana...

Guru Kirtan

Guru Guru Japna
Sat Nam Japna
Sat Guru Nath
Jaya Guru Nath
Adi Guru Nath
Vyasa Guru Nath
Datta Guru Nath
Rama Guru Nath
Rama Rama Guru Nath
Ganesha Guru Nath
Siva Guru Nath
Jagad Guru Nath
Devi Guru Nath
Come come Guru Nath
Save me Guru Nath
I am thine Guru Nath

Aura Saba Svapna
Vahi Guru Japna
Sri Guru Nath
Om Guru Nath
Advaita Guru Nath
Vasishtha Guru Nath
Dattatreya Guru Nath
Krishna Guru Nath
OM OM Guru Nath
Shanmukha Guru Nath
Shankara Guru Nath
Loka Guru Nath
Durga Guru Nath
Initiate me Guru Nath
Enlighten me Guru Nath
All is thine Guru Nath

Sad Guru Nath
Om Guru Nath
Rama Guru Nath
Adi Guru Nath

Sri Guru Nath
Jaya Guru Nath
Krishna Guru Nath
Advaita Guru Nath

जयति शिवा शिव

जयति शिवा शिव जानकी राम,
जय रघुनन्दन राधेश्याम
अवधबिहारी सीताराम,
कुंजबिहारी राधेश्याम
अवध सरयु सीताराम,
कमल विमल मिथिला धाम x 2
गंगा तुलसी शालिग्राम
दशरथ नन्दन सीताराम,
अधम उद्धारक राधेश्याम
धनुष धारी सीताराम,
मुरलीधारी राधेश्याम
जय रघुनन्दन सीताराम,
जय यदुनन्दन राधेश्याम
जय भव भंजन सीताराम,
द्वन्द्व निखण्डन राधेश्याम
जय खरारि राघव राम,
जयति मुरारि माधव श्याम
जय दु:ख नाशक सीताराम,
प्रेम प्रकाशक राधेश्याम
भव निधि तारण सीताराम,
अधम उद्धारण राधेश्याम
जय जय रघुवर राजाराम,
जय जय नटवर मोहन श्याम

वीणापाणि नमोऽस्तुते

वीणापाणि नमोऽस्तुते जय विद्यादेवी नमोऽस्तुते
विष्णुपत्नी नमोऽस्तुते जय विद्या प्रदायिनी...
विश्वविमोहिनी नमोऽस्तुते जय विशालाक्षी...
वरप्रदायिनी नमोऽस्तुते जय विष्णुमाये...
महालक्ष्मी नमोऽस्तुते जय महाकाली...
महाशक्ति नमोऽस्तुते जय महामाये...
दुर्गा दुर्गा नमोऽस्तुते जय दुरितहारिणी...
चण्डी चण्डी नमोऽस्तुते जय चामुण्डेश्वरी...
राधा रुक्मिणी नमोऽस्तुते जय सीता जानकी...
पार्वती गौरी नमोऽस्तुते जय उमामहेश्वरी...
गंगारानी नमोऽस्तुते जय भागीरथी नमोऽस्तुते
जह्नुकन्या नमोऽस्तुते जय पापहारिणी नमोऽस्तुते
दीनोद्धारिणी नमोऽस्तुते जय दयापरेश्वरी...
जगन्माते नमोऽस्तुते जय जगदम्बिके...
प्रकृति विकृति नमोऽस्तुते जय पतित पावनी...
पयोधिकन्ये नमोऽस्तुते जय परमेश्वरी...



वेदान्त का सार

अद्वैत, अखण्ड, अकर्ता, अभोक्ता,
असंग, असक्त, निर्गुण, निर्लिप्त,
चिदानन्दरूप शिवोऽहम् शिवोऽहम्,
चिदानन्दरूप शिवोऽहम् शिवोऽहम् ।

अव्यक्त, अनन्त, अमृत, आनन्द,
अचर, अमन, अक्षर, अव्यय,
चिदानन्दरूप शिवोऽहम् शिवोऽहम्,
चिदानन्दरूप शिवोऽहम् शिवोऽहम् ।

अशब्द, अस्पर्श, अरूप, अगन्ध,
अप्राण, अमन, अतीन्द्रिय, अदृश्य,
चिदानन्दरूप शिवोऽहम् शिवोऽहम्,
चिदानन्दरूप शिवोऽहम् शिवोऽहम् ।

सत्यम्, शिवम्, शुभम्, सुन्दरम्, कान्तम्,
सत्-चित्-आनन्द, सम्पूर्ण, सुख, शान्तम्,
चिदानन्दरूप शिवोऽहम् शिवोऽहम्,
चिदानन्दरूप शिवोऽहम् शिवोऽहम् ।

चेतन, चैतन्य, चिद्घन, चिन्मय,
चिदाकाश, चिन्मात्र, सन्मात्र, तन्मय,
चिदानन्दरूप शिवोऽहम् शिवोऽहम्,
चिदानन्दरूप शिवोऽहम् शिवोऽहम् ।

अमल, विमल, निर्मल, अचल,
अवंगमनोगोचर, अक्षर, निश्चल,

चिदानन्दरूप शिवोऽहम् शिवोऽहम्,
चिदानन्दरूप शिवोऽहम् शिवोऽहम् ।

नित्य, निरुपाधिक, निरतिशय, आनन्द,
निराकार, ह्रींकार, ओंकार, कूटस्थ,
चिदानन्दरूप शिवोऽहम् शिवोऽहम्,
चिदानन्दरूप शिवोऽहम् शिवोऽहम् ।

पूर्ण परब्रह्म, प्रज्ञान, आनन्द,
साक्षी, द्रष्टा, तुरीया, विज्ञान, आनन्द,
चिदानन्दरूप शिवोऽहम् शिवोऽहम्,
चिदानन्दरूप शिवोऽहम् शिवोऽहम् ।

सत्यम्, ज्ञानम्, अनन्तम्, आनन्दम्,
सत्-चित्-आनन्द, स्वयं-ज्योति, प्रकाश,
चिदानन्दरूप शिवोऽहम् शिवोऽहम्,
चिदानन्दरूप शिवोऽहम् शिवोऽहम् ।

कैवल्य, केवल, कूटस्थ, ब्रह्म,
शुद्ध, सिद्ध, बुद्ध, सत्-चित्-आनन्द,
चिदानन्दरूप शिवोऽहम् शिवोऽहम्,
चिदानन्दरूप शिवोऽहम् शिवोऽहम् ।

निर्दोष, निर्मल, विमल, निरंजन,
नित्य, निराकार, निर्गुण, निर्विकल्प,
चिदानन्दरूप शिवोऽहम् शिवोऽहम्,
चिदानन्दरूप शिवोऽहम् शिवोऽहम् ।

आत्मा, ब्रह्म-स्वरूप, चैतन्य, पुरुष,
तेजोमय-आनन्द, 'तत् त्वम् असि' लक्ष्य,
चिदानन्दरूप शिवोऽहम् शिवोऽहम्,
चिदानन्दरूप शिवोऽहम् शिवोऽहम् ।

सोऽहम्, शिवोऽहम्, अहं ब्रह्म अस्मि,
शुद्ध सच्चिदानन्द, पूर्ण परब्रह्म,
चिदानन्दरूप शिवोऽहम् शिवोऽहम्,
चिदानन्दरूप शिवोऽहम् शिवोऽहम् ।

ॐ सोऽहम्, शिवोऽहम्, अहं ब्रह्म अस्मि,
सत्-चित्-आनन्द स्वरूपोऽहम्,
चिदानन्दरूप शिवोऽहम् शिवोऽहम्,
चिदानन्दरूप शिवोऽहम् शिवोऽहम् ।

प्रज्ञानं ब्रह्म, अहं ब्रह्म अस्मि,
तत् त्वम् असि, अयम् आत्मा ब्रह्म,
चिदानन्दरूप शिवोऽहम् शिवोऽहम्,
चिदानन्दरूप शिवोऽहम् शिवोऽहम् ।

शक्ति स्मरण

जगजननी, महिषासुरमर्दिनी, अनिर्वचनी, दुर्गाभावनी
अविद्यानाशिनी, भ्रान्तिविनाशिनी, मोक्षदायिनी,
मूलकारिणी, मोक्षकारिणी, मंगलकारिणी,
भवानी शंकरी, गौरी शंकरी, उमा शंकरी,
अखिलान्देश्वरी, राजेश्वरी, त्रिपुरसुन्दरी

दिव्य जीवन

हरे राम हरे राम, राम राम हरे हरे।
हरे कृष्ण हरे कृष्ण, कृष्ण कृष्ण हरे हरे॥

सेवा प्रेम दान पवित्रता ध्यान साक्षात्कार।
भले बनो भला करो दयालु बनो॥

सेवा भक्ति ध्यान द्वारा साक्षात्कार पाओ।
भले बनो भला करो दयालु बनो ॥

अभ्यास करो अहिंसा और सत्य पवित्रता।
यही है आधारशिला योग वेदान्त का ॥

स्वयं को पूछो 'कौन हूँ मैं' मोक्ष प्राप्त करो।
प्रश्न करो निज आत्मा से 'कौन हूँ मैं'॥

शरीर नहीं यह मन नहीं मैं शाश्वत आत्मा हूँ।
बुद्धि नहीं, इन्द्रिय नहीं मैं शाश्वत आत्मा हूँ ॥

इसको जानो मुक्ति पाओ कर्तव्य है यही।
इसको जानो अविलम्ब अभी और यहीं ॥

दिव्य जीवन यापन करो कहते गुरुदेव।
दिव्यता में वास करो कहें शिवानन्द ॥



विश्व प्रार्थना

हे स्नेह और करुणा के आराध्य देव!
तुम्हें नमस्कार है, नमस्कार है।
तुम सच्चिदानन्दघन हो।
तुम सर्वव्यापक, सर्वशक्तिमान् और सर्वज्ञ हो।
तुम सबके अन्तर्वासी हो।
हमें उदारता, समदर्शिता और मन का
समत्व प्रदान करो।
श्रद्धा, भक्ति और प्रज्ञा से कृतार्थ करो।
हमें आध्यात्मिक अन्त:शक्ति का वर दो,
जिससे हम वासनाओं का दमन कर
मनोजय को प्राप्त हों।
हम अहंकार, काम, लोभ और द्वेष से रहित हों।
हमारा हृदय दिव्य गुणों से पूर्ण करो।
हम सब नाम-रूपों में तुम्हारा दर्शन करें।
तुम्हारी अर्चना के ही रूप में
इन नाम-रूपों की सेवा करें।
सदा तुम्हारा ही स्मरण करें।
सदा तुम्हारी ही महिमा का गान करें।
तुम्हारा ही कलिकल्मषहारी नाम हमारे अधर-पुट पर हो।
सदा हम तुममें ही निवास करें।

अठारह सद्‌गुण

श्री राम जय राम जय जय राम ॐ।
श्री राम जय राम जय जय राम ॐ।

प्रसन्नता, निर्मलता, नियमितता,
अशत्रुता, मित्रता, आर्जवता,
समानता, एकाग्रता, अरोषता,
युक्तता, नम्रता, दृढ़ता,
एकता, शालीनता, उदारात्मता,
अभ्यास करो नित्य इन अठारह गुणों का,
पाना चाहो शीघ्र ही जो अमरता।
अद्वितीय ब्रह्म ही एक सत्यता,
और सब संसार है मिथ्य नाता।
पाओगे अमर धाम अनन्तता का,
देखोगे अगर विभिन्नता में एकता।
मिले न यह ज्ञान यूनिवर्सिटी में,
कृपा हो गुरु की मिले शाश्वता।

जय गौरी

गौरी गौरी गंगे राजेश्वरी, गौरी गौरी गंगे भुवनेश्वरी
गौरी गौरी गंगे महेश्वरी, गौरी गौरी गंगे मातेश्वरी
गौरी गौरी गंगे महाकाली, गौरी गौरी गंगे महालक्ष्मी
गौरी गौरी गंगे पार्वती, गौरी गौरी गंगे सरस्वती
जय महामाया पराशक्ति प्रेमस्वरूपिणी



Song of Consecration

Take my life and let it be
Consecrated, O Lord, to thee.
Take my hands and let them move
At the impulse of thy love.
Take my moments and my days
Let them flow in ceaseless praise.
Take my feet and let them be
Swift and beautiful for thee.
Take my voice and let me sing
Always only for my king.
Take my lips and let them be
Filled with messages for thee.
Take my silver and my gold,
Not a mite would I withhold.
Take my intellect and use
Every power as thou shalt choose.
Take my will and make it thine,
It shall be no longer mine.
Take my heart, it is thine own,
It shall be thy royal throne.
Take my love, my Lord, I pour,
At thy feet its treasures store.
Take myself and I will be
Ever, only, all for thee.

Prayer

Make me a channel of your peace.
Where there is hatred, let me bring your love.
Where there is injury, your pardon Lord.
And where there is doubt, have faith in you.
Make me a channel of your peace.
Where there is despair, let me bring hope.
Where there is darkness, only light.
And where there is sadness, ever joy.
O Master, grant that I may never seek,
So much to be consoled as to console,
To be understood as much as understand,
To be loved as to love with all my soul.
Make me a channel of your peace.
In pardoning we are pardoned Lord.
In giving of ourselves that we receive
In dying born to eternal life.

I am Eternity

I am eternity, I am bliss divine,
I am living in your home.
When I abandon all my thoughts of life
and surrender all to you,
I am eternity . . .

When I feel you in my mortal frame,
in creation everywhere,
I am eternity . . .

When with faith I bow and worship you,
and I know your strength and grace,
I am eternity . . .

And when I live my life just for the love of you,
and with awareness call your name,
I am eternity . . .

Let Your Love Flow

I am the river, you are the sea,
Let your love flow right through me.
I am the river, you are the ocean,
Come and fill me with devotion.
I am the bird, you are the sky,
Let your grace flow, as I fly.
I am the earth, you are the sun,
I am many, you are one.
I am the darkness, you are the light,
Send your wisdom into my night.

We are Sailing

We are sailing, we are sailing,
Across the ocean, across the sea.
We are sailing, on stormy waters.
To a land where we'll be free.
We are flying, we are flying,
Like birds, across the sky.
We are flying, passing high clouds,
To be with you, to be free.
Can't you hear us? Can't you hear us,
Through the dark night, far away.
We are trying, forever trying,
To be with you, to be free.
We are sailing, we are sailing,
Across the ocean, across the sea.
We are sailing, on stormy waters,
To a land where we'll be free.
O Lord! To be near you, to be free.

Satyam's Door

Knock, knock, knocking on Satyam's door.
Knock, knock, knocking on Satyam's door.
Take this self away from me,
I can't use it any more.
It's getting dark, too dark to see.
Take me to the light of Satyam's door.

Take Me Away

Take me away, won't you carry me,
Let me rest in your arms for a while.
Take me away, won't you carry me,
Let me see the sweetness of your smile.
Won't you take me away,
Won't you take me away.

Namo Narayan Sri Swamiji

Namo Narayan Sri Swamiji,
Gurudeva Namo Namo.
Namo Narayan Sri Swamiji,
Gurudeva Namo Namo.
You are my sunshine, my only sunshine.
You make me happy when skies are grey.
You'll never know dear how much we love you.
So please don't take my sunshine away.

I am Missing You, O Krishna

I am missing you, O Krishna,
Where are you?
Though I can't see you,
I hear your flute all around.
So come wipe my tears and make me smile.

Lord, Let Me See Your Face

Lord, let me see your face
In every face I see.
Lord, let me feel your grace,
Feel your grace in me.
Lord, let me find a place
Where you want me to be,
And Lord, let me find a space
That brings me nearer to thee.

Spirit I Love You

Spirit I love you, how I adore you,
I lay my life before you.

Body and Mind

This body and mind are the servants
Of the divine within me.
Om Tat Sat.

Like a Full Force Gale

Like a full force gale
I was lifted by your grace
Lifted up again Satyananda.

Song of Sannyasins

Hari Om, have no home,
Work nor food nor money, have I none.
Still, I will be anandam.

Divine Mother

Divine Mother, my Divine Mother.
Engrossed is the beat of my heart
At the blue lotus feet of my Divine Mother.

At the Feet of My Lord

What need have I of that,
What need have I of this,
Dancing at the feet of my Lord,
All is bliss, all is bliss, all is bliss.
Om Namo Narayanaya,
Om Namo Narayanaya.

नाम संकीर्तन अपने आपको समझने का सबसे आसान एवं सुलभ तरीका है। संगीत सीधे अनुभव के स्तर पर, अवचेतन स्तर पर पहुँचता है। रामचरितमानस में लिखा है, 'भगवान का साक्षात्कार करना है तो कीर्तन करो।' यह कीर्तन की महिमा है। भगवान का भजन करने से अच्छा ज्ञान भी प्राप्त होता है, मन भी बहुत ऊँचा उठता है। भगवान का भजन प्रेरणा देता है। इसमें आनन्द के अतिरिक्त एक अन्य अवस्था आती है, जिसको कहते हैं, तन्मयता। मन उसमें डूब जाता है, और आत्मा तथा परमात्मा में सम्बन्ध होने लगता है।

—स्वामी सत्यानन्द सरस्वती

ॐ

शान्ति पाठ

असतो मा सद्गमय ।
तमसो मा ज्योतिर्गमय ।
मृत्योर्माऽमृतं गमय ।
सर्वेषां स्वस्तिर्भवतु ।
सर्वेषां शान्तिर्भवतु ।
सर्वेषां पूर्णं भवतु ।
सर्वेषां मंगलं भवतु ।
लोकाः समस्ताः सुखिनो भवन्तु।

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ।
उर्वारुकमिव बन्धनात् मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ॥

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः।

हरिः ॐ

त्वमेव माता च पिता त्वमेव त्वमेव बंधुश्च सखा त्वमेव ।
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव त्वमेव सर्वं मम देव देव ॥

हरिः ॐ



SATYANANDA YOGA
BIHAR YOGA

इस पुस्तक में स्वामी सत्यानन्द सरस्वती के प्रिय भजनों एवं कीर्तनों का संकलन है। कीर्तन दिव्य चेतना की प्राप्ति का सबसे सुगम, सुनिश्चित, सुरक्षित और शीघ्रतम मार्ग है। कीर्तन की साधना से व्यक्ति आनन्द के समुद्र में कूद पड़ता है। इस योग में एक ही चीज की जरूरत है, लीन हो जाना, तन्मय हो जाना, अपने आपको वर्तमान के अनुभव में खो देना।

श्रीमद्भागवत में नारदजी कहते हैं, 'जिन लोगों का चित्त निरंतर विषय-भोगों की कामना से आतुर रहता है, उनके लिए भगवान की लीलाओं का कीर्तन संसार-सागर से पार ले जाने वाला जहाज है। यह मेरा अनुभव है।'



[bar code here]

ISBN : 978-81-85787-67-1